RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

वर्ष-11 अंक:102 ता. 13 अक्टूबर 2022, गुरूवार , कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री शिंदे की मिमिक्री करने पर 9 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की मिमिक्री करने पर ठाणे जिले के नौपाड़ा पुलिस स्टेशन में मंगलवार देररात 9 लोगों के विरुद्ध मामला दर्ज कराया गया है। इनमें 7 आरोपित शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे की पार्टी) के हैं। यह मामला बालासाहेब ठाकरे की शिवसेना के नेता दत्ताराम उर्फ बाला सखाराम गवस ने दर्ज करवाया है। नौपाड़ा पुलिस ने बुधवार सुबह इन सभी के विरुद्ध नोटिस जारी किया है।

गवस ने बताया कि ठाणे में आयोजित महाप्रबोधिनी यात्रा के दौरान पार्टी की उपनेता सुषमा अंधारे ने प्रधानमंत्री मोदी की मिमिक्री थी। विधायक और नेता भास्कर जाधव ने मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की मिमिक्री की थी। केंद्रीय मंत्री नारायण राणे और उनके दोनों बेटों के विरुद्ध भी भड़काऊ भाषण इस यात्रा के दौरान दिए गए थे। इसी वजह से विधायक भास्कर जाधव, सांसद व शिवसेना सचिव विनायक राउत, शिवसेना की उप नेता सुष्माताई अंधारे, ठाणे महिला अघाड़ी अध्यक्ष अनीता बीजे, पूर्व पार्षद मधुकर देशमुख, ठाणे शहर के प्रमुख केदार दिघे, नगरसेवक नरेश मनेरा, सुभाष भोईर के अलावा धर्मराज्य पार्टी के अध्यक्ष राजन राजे और सचिन चव्हाण समेत कुल 9 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है। सुषमा अंधारे का कहना है कि अभी तक उन्हें पुलिस का कोई नोटिस नहीं मिला है। वे कानून का सम्मान करती हैं। अगर सच बोलने पर मामला दर्ज किया जाता है तो वह इसी तरह सच बोलती रहेंगी। विधायक भास्कर जाधव ने भी कहा कि उन्हें कोई नोटिस नहीं मिला है। उन्होंने जो भी बोला है, वह पब्लिक डोमेन में हैं। नौपाड़ा पुलिस का कहना है कि छानबीन की जा रही है।

दिल्ली-हिमाचल की यात्रा होगी और आरामदायक, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देंगे वंदे भारत एक्सप्रेस की सौगात

प्रधानमंत्री बाद में ऊना के इंदिरा गांधी स्टेडियम में एक जनसभा को संबोधित करेंगे। पीएम मोदी चंबा जिले का भी दौरा करेंगे, जहां वह विभिन्न नई स्थापित बिजली परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगे।

चंडीगढ़। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुवार को हिमाचल प्रदेश को एक नई सौगात देने जा रहे हैं। वह ऊना रेलवे स्टेशन से नई वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाएंगे। यह ट्रेन ऊना जिले के अंब-अंदौरा और नई दिल्ली के बीच बुधवार को छोड़कर सप्ताह में छह दिन चलेगी। आपको यह भी बता दें कि दिल्ली से हिमाचल जाने वाली यह पहली हाईस्पीड ट्रेन होगी। प्रधानमंत्री के दौरे से पहले अंबाला मंडल रेल प्रबंधक समेत रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों ने मंगलवार की शाम रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। पीएम मोदी हरोली विधानसभा क्षेत्र में ऊना-हमीरपुर रेलवे लाइन और एक ड्रग पार्क की आधारशिला भी रखेंगे।

वंदे भारत एक्सप्रेस से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण बातें

अंब-अंदौरा से दिल्ली जाने वाली ट्रेन चौथी वंदे भारत एक्सप्रेस होगी। ट्रेन दोपहर 1 बजे

अंब-अंदौरा से रवाना होगी और शाम 6.25 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी। यह ट्रेन नई दिल्ली से सुबह 5.50 बजे रवाना होगी और 11.05 बजे अंब-अंदौरा पहुंचेगी। अपने 412 किलोमीटर लंबे सफर के दौरान यह ट्रेन ऊना, नंगल, चंडीगढ़ और अंबाला में रुकेगी।

ऊना और हमीरपुर रेल लाइन बड़ी उपलब्धि

ऊना और हमीरपुर के बीच ब्रॉड गेज रेलवे लाइन की घोषणा प्रधानमंत्री के पहले कार्यकाल के दौरान की गई थी। इसका सर्वे कुछ साल पहले पूरा हुआ था, लेकिन 5,850 करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट के लिए बजट आवंटन में देरी हुई। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर हमीरपुर लोकसभा क्षेत्र से सांसद हैं। वह पिछले कई वर्षों से रेलवे लाइन के निर्माण की मांग कर रहे हैं। इस प्रोजेक्ट को अनुराग ठाकुर की बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है।

ड्रग पार्क से बढ़ेंगे रोजगार के अवसर

हरोली में बल्क ड्रग पार्क हाल ही में राज्य को आवंटित किया गया था। इसके विकास के लिए केंद्र सरकार 800 करोड़ रुपये मुहैया कराएगी। राज्य सरकार ने 3 रुपये प्रति यूनिट की दर से सब्सिडी वाली बिजली और पार्क में आने वाली औद्योगिक इकाइयों के लिए भूमि का मुफ्त रजिस्ट्रेशन जैसे प्रोत्साहनों का भी प्रस्ताव रखा है। राज्य सरकार ने दावा किया है कि बल्क ड्रग पार्क 10,000 करोड़ रुपये का निवेश आकर्षित करेगा और लगभग 50,000 नौकरियां पैदा करेगा।

प्रधानमंत्री बाद में ऊना के इंदिरा गांधी स्टेडियम में एक जनसभा को संबोधित करेंगे। मोदी चंबा जिले का भी दौरा करेंगे, जहां वह विभिन्न नई स्थापित बिजली परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगे।

किडनी का इलाज कराने सिंगापुर पहुंचे लालू यादव

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जनता दल सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव किडनी के इलाज के लिए मंगलवार की रात सिंगापुर पहुंचे। उनके साथ उनकी पत्नी और बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और उनकी सांसद बेटी मीसा भारती भी थीं। इसके अलावा उनके साथ सिंगापुर जाने वालों में विधान पार्षद सुनील सिंह, लालू प्रसाद के करीबी माने जाने वाले सुभाष यादव और दो सेवक भी शामिल हैं। सिंगापुर पहुंचने पर लालू प्रसाद की बेटी रोहिणी आचार्या ने उनका स्वागत किया। उन्होंने पैर छूकर अपने मां-पिता का आशीर्वाद लिया।

आपको बता दें कि रोहिणी एयरपोर्ट पर अपने पिता का इंतजार कर रही थीं। लालू यादव व्हीलचेयर पर बैठकर एयरपोर्ट से बाहर निकले, जहां उनकी बेटी ने पैर छूकर पिता का आशीर्वाद लिया। रोहिणी ने खुद यह वीडियो पोस्ट किया है। उन्होंने लिखा, जिनका हौसला आसमान से ऊंचा है। मेरे पापा के जैसा दुनिया में न कोई दूजा है। इससे पहले तेजस्वी

यादव ने बताया कि लालू प्रसाद को किडनी की समस्या है। दिल्ली के एम्स के डॉक्टरों की सलाह के मुताबिक वे नियमित रूप से दवा ले रहे हैं, लेकिन सिंगापुर में किडनी की बीमारियों के इलाज का दुनिया में सबसे बेहतर इंतजाम है। लिहाजा हमने उन्हें वहां ले जाने का फैसला किया। वहां डॉक्टरों से उन्हें दिखाया जाएगा। फिलहाल डॉक्टरों ने किडनी ट्रांसप्लांट की सलाह नहीं दी है, लेकिन सिंगापुर में डॉक्टर जो सलाह देंगे वैसा किया जाएगा।

दुकानदार ग्राहक से कैरी बैग के नहीं वसूल सकता पैसा, वसूल करे तब करे शिकायत

नई दिल्ली। त्यौहारी सीजन के मौके पर बाजारों में फेस्टिव सेल की शुरुआत हो गई है। इसके बाद अगर आप बाजार में सामान खरीदते समय कैरी बैग खरीदते हैं, तब उसके लिए आपको चार्ज देना पड़ता है, तब यह खबर आपके लिए है। बता दें कि दो साल के बाद त्यौहारी सीजन सेल को लेकर लोगों में काफी उत्साह है। अमेजन और फ्लिपकार्ट जैसी ई-कॉमर्स कंपनियां ऑनलाइन शॉपिंग की शुरुआत कर दी है। इसके बाद इन कंपनियों के तमाम ऑफर्स और फायदों के बीच उपभोक्ताओं को सतर्क रहने की भी विशेष जरूरत है। मोदी सरकार का नया कंज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट 2019 त्यौहारी सीजन में ग्राहकों को काफी मजबूती प्रदान करेगा।

देश में कई इसतरह के मामले सामने आए हैं, जिसमें कंज्यूमर फोरम ने बिग बाजार जैसी कंपनियों पर ग्राहक से कैरी बैग के लिए अलग से पैसे वसूलने पर जुर्माना लगाया है। दो साल पहले ही फोरम ने बिग बाजार को एक मामले में 10,000 रुपये कंज्यूमर लीगल एड अकाउंट में जमा करवाने के साथ शिकायतकर्ता को 500 रुपये केस खर्च देने का आदेश दिया था। इसके साथ ही शिकायतकर्ता को हुई मानसिक परेशानी के लिए 1 हजार रुपये और कैरी बैग के लिए वसूले गए 18 रुपये भी वापस करने के लिए कहा था। मोदी सरकार ने देश के उपभोक्ताओं को आज से कई अधिकार दे दिए हैं। पूरे देश में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 लागू है। कानून में दुकानदारों पर लगाम कसा गया है। नए कानून के मुताबिक अगर दुकानदार कैरी बैग का चार्ज वसूलता है, तब उपभोक्ता अगर उसकी शिकायत दर्ज कराता है, तब इस पर कार्रवाई होगी। कैरी बैग के लिए अतिरिक्त पैसा लेना नए कानून में दंडनीय हो गया है।

बता दें कि अब कोई भी ग्राहक सामान खरीदने के बाद कैरी बैग का डिमांड करता है, तब उसके लिए पैसे नहीं देना होगा। दूसरी बात यह भी है कि अगर वह ग्राहक सामान हाथ में ले जाने में सक्षम नहीं है, तब दुकानदार को कैरी बैग देना ही पड़ेगा। इस लेकर देश के कई उपभोक्ता फोरम में शिकायतें आ रही थीं, जिसके बाद उपभोक्ता फोरम ने कैरी बैग के पैसे लेने पर स्टोर या दुकानदार पर जुर्माना लगाना शुरू किया था। अब नए कानून में इस लेकर सख्त प्रावधान किए गए हैं। कैरी बैग के नाम से 5 रुपये, 10 रुपये , 20 रुपये या 30 रुपये वसूले जाते हैं, तब उसके एवज में जुर्माना के प्रावधान किए गए हैं। इसके साथ ही नए कानून में कई और खास बातें हैं, जैसे अब उपभोक्ताओं के पास अधिकार होगा कि देश के किसी भी उपभोक्ता अदालत में वह मामला दर्ज करा सके। पहले के कंज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट 1986 में ऐसा प्रावधान नहीं था।

नेपाल में मौसम खराब, पश्चिम बंगाल के 68 लोग फंसे

कोलकाता। नेपाल में मौसम खराब है। लगातार हो रही बारिश, बाढ़ और भूस्खलन के कारण पश्चिम बंगाल के कम से कम 68 पर्यटक वहां के विभिन्न हिस्सों में फंसे गए हैं। राज्य के हैम रेडियो ऑपरेटर्स ने इनकी पहचान की है। इनमें से अधिकतर पर्यटक मुक्तिनाथ मंदिर जा रहे थे। भारी बारिश के बीच बाढ़ और भूस्खलन की आपदा ने उनका रास्ता रोक दिया है। नेपाल में फंसी कालना निवासी मौसमी भट्टाचार्य ने कहा- हम चार अक्टूबर को मुक्तिनाथ में थे। अचानक मौसम खराब हुआ। हम मस्टैंग जिले के जोमसोम को पार कर चुके थे। अचानक बारिश का सामना करना पड़ा। मार्फा, लेटे, दाना और रूपसे फॉल्स में भारी भूस्खलन हुआ है। सड़कें अवरुद्ध हो गईं। वहां बंगाल के कई तीर्थयात्री फंसे हुए हैं। बहुत से लोगों के मोबाइल फोन स्विच ऑफ हो गए हैं। मौसमी भट्टाचार्य का संदेश पश्चिम बंगाल रेडियो क्लब तक पहुंचा है। हैम के संस्थापक अंबरीश नाग बिस्वास ने कहा- हमने महसूस किया कि हमें तुरंत बचाव अभियान शुरू करने की जरूरत थी। नेपाल में हमारे हैम रेडियो सहयोगी राहत के साथ मौके पर पहुंचे। कोलकाता में एक अन्य टीम ने नेपाल वाणिज्य दूतावास के कार्यालय से संपर्क किया। उन्होंने कहा सड़कें क्षतिग्रस्त होने के कारण बचाव दल को कई जगहों पर रुकना पड़ा। नेपाल पर्यटन बोर्ड के सीईओ धनंजय रेग्मी ने कहा है- मुक्तिनाथ जाने वाले कई पर्यटक फंसे हुए हैं। हमने तुरंत बचाव दल और जरूरत पड़ने पर हेलीकॉप्टर की व्यवस्था की। जोखिम को कम करने के लिए हमने उन्हें भूस्खलन रुकने तक वहीं रहने के लिए कहा है। हैम रेडियो के स्वयंसेवकों ने फंसे हुए पर्यटकों के लिए राशन पहुंचाना शुरू कर दिया है। गरिया निवासी अनंत दास ने कहा है-कोलकाता के कई तीर्थयात्री अभी भी वहां फंसे हुए हैं। उनमें से कुछ के पास पैसे भी नहीं हैं। रेग्मी ने कहा कि नेपाल सरकार ने ऐसे लोगों की मदद करने का फैसला किया है। कोलकाता में नेपाल के महावाणिज्य दूत ईशोर राज पौडेल ने कहा- मौसम में सुधार हुआ है। हम प्रत्येक पर्यटक की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित कर रहे हैं।

25 अक्टूबर को लगेगा सूर्य ग्रहण, तिरुमाला मंदिर के कपाट रहेंगे इतने समय के लिए बंद

नई दिल्ली। दिवाली के अगले दिन 25 अक्टूबर 2022 को सूर्य ग्रहण लगने वाला है। सूर्य ग्रहण लगने के कारण तिरुमाला मंदिर के कपाट सुबह 8:11 बजे से शाम 7:30 बजे तक बंद रहेंगे। तिरुमाला स्थित प्रसिद्ध भगवान वेंकटेश्वर मंदिर 25 अक्टूबर को सूर्य ग्रहण और 8 नवंबर को चंद्र ग्रहण के कारण करीब 12 घंटे के लिए बंद रहेगा। मंदिर के एक अधिकारी ने न्यूज एजेंसी पीटीआइ को बताया कि मंदिर के कपाट को बाद में श्रद्धालुओं के लिए खोला जाएगा और पूजा करने की भी अनुमति दी जाएगी।

चंद्र ग्रहण 8 नवंबर

चंद्र ग्रहण 8 नवंबर को लगेगा जिसके कारण प्राचीन मंदिर के कपाट

सुबह 8:40 बजे से शाम 7:20 बजे तक बंद रहेंगे। मंदिर के अधिकारी ने बताया कि मंदिर में प्रतिदिन आयोजित होने वाले 'कल्याणोत्सवम' सहित भुगतान की जाने वाली रस्में ग्रहण के दो दिनों के दौरान नहीं की जाएंगी। साल 2022 का दूसरा चंद्रग्रहण भारत में दिखाई देगा। भारत के समय अनुसार 8 नवंबर को दोपहर 1 बजकर 32 मिनट से शाम 7 बजकर 27 बजे लगेगा।

चंद्र ग्रहण पहला कब लगा था

साल 2022 का पहला चंद्र ग्रहण मई में लगा था और अब दूसरा नवंबर में लगेगा। दूसरा चंद्र ग्रहण 8 नवंबर 2022 को मंगलवार के दिन लग रहा है। इस साल देव दीपावली पर चंद्र ग्रहण लग रहा है। ऐसे में माना जा रहा है कि देव दीपावली एक दिन पहले यानि की 7 नवंबर को मनाई जाएगी। चंद्र ग्रहण हमेशा पूर्णिमा तिथि पर लगता है और यहीं कारण है कि देव दीपावली एक दिन पहले यानि की सूतक काल से पहले मनाई जाएगी।

मौसम विभाग ने किया था मॉनसून की विदाई का ऐलान, उसके बाद हो गई 700 फीसदी ज्यादा बारिश

नई दिल्ली। मौसम विभाग की ओर से अनुमान 30 सितंबर को मॉनसून की विदाई का ऐलान किया गया था, लेकिन उसके बाद अक्टूबर के ही 10 दिनों में उत्तर भारत के कई राज्यों में जबरदस्त बारिश हुई है। भले ही मौसम विभाग इसे पोस्ट मॉनसून बारिश कह रहा है, लेकिन ऐसा नहीं लगता। एक्सपर्ट्स का मानना है कि मॉनसून की विदाई का मौसम विभाग का ऐलान थोड़ा जल्दबाजी था। दरअसल उत्तर पश्चिम भारत में अक्टूबर के 10 दिनों में औसत से 405 फीसदी ज्यादा बारिश हुई है। दिल्ली में 625 फीसदी ज्यादा बारिश हुई है। इसके हरियाणा में 577 और उत्तराखंड में औसत से 538 फीसदी अधिक बारिश हुई है।

उत्तर प्रदेश के पूर्वी और पश्चिमी हिस्से समेत तमाम जिलों में 698 फीसदी अधिक बारिश हुई है। मौसम विभाग की ओर से ऐलान किया गया था कि 30 सितंबर से पंजाब, चंडीगढ़, दिल्ली, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान से मॉनसून की विदाई हो गई है। हालांकि उसके बाद जबरदस्त बारिश होने से उस अनुमान पर सवाल खड़े हुए हैं। एक्सपर्ट्स मानते हैं कि यह अनुमान शायद मौसम विभाग ने जल्दबाजी में जारी कर दिया था। इस बीच मंगलवार को

मौसम विभाग ने कहा कि मॉनसून अब लौटने लगा है। उत्तरकाशी, नजीबाबाद, आगरा, ग्वालियर, रतलाम और भरूच से होते हुए मॉनसून विदा हो रहा है।

अक्टूबर में क्यों हुई इतनी ज्यादा बारिश, जानिए वजह

मौसम विभाग के नए अनुमान में कहा गया है कि अगले 4 से 5 दिनों में उत्तर पश्चिम और मध्य भारत के राज्यों से मॉनसून विदा हो जाएगा। मौसम विभाग के डायरेक्टर जनरल एम. मोहपात्रा ने कहा, अधिक बारिश होने का प्रतिशत अक्टूबर के शुरुआती 10 दिनों में बहुत अधिक है। इसकी वजह यह है कि आमतौर पर इस सीजन में बारिश बेहद कम होती रही है। बंगाल में खाड़ी में चक्रवात की स्थिति पैदा होने के चलते यूपी और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में भारी बारिश हुई है। पश्चिमी विक्षोभ से दक्षिण पूर्वी हवाओं के टकराने से पूरे उत्तर भारत में भारी बारिश हुई है।

अनुमान गलत निकलने की बात पर मौसम विभाग का जवाब

मौसम विभाग की ओर से मॉनसून की विदाई के ऐलान के बाद भी भीषण बारिश होने की बात पर भी मोहपात्रा ने जवाब दिया। उन्होंने कहा कि यह सही है कि हमने दिल्ली से मॉनसून की वापसी की बात कही थी। लेकिन तब मॉनसून जा ही रहा था और विदा होते-होते काफी बरस गया। ऐसे में यह एक तरह से बॉर्डर केस है। हालांकि उन्होंने कहा कि हमने बारिश को लेकर सटीक अनुमान ही जताया और पहले से ही 7 दिनों का पूर्वानुमान जारी कर दिया था। उन्होंने कहा कि इससे पहले 1988 में ऐसा हुआ था, जब मॉनसून ने विदा होते-होते जमकर बारिश की थी। तब सितंबर के आखिरी सप्ताह में जबरदस्त बारिश हुई थी और कई नदियों में बाढ़ आ गई थी। इसके अलावा बीते साल भी उत्तराखंड में अक्टूबर के महीने में काफी बारिश हुई थी।

सार समाचार

लंपी की रोकथाम के लिए केंद्र व राज्य सरकारें गंभीर नहीं, 31 अक्टूबर को सुनवाई करेगा सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। देश के कई राज्यों में लंपी वायरस का प्रकोप सामने आया है, लेकिन इसकी रोकथाम को लेकर अभी भी केंद्र सरकार और राज्य सरकारें इतनी ज्यादा गंभीर नजर नहीं आ रही हैं। अब तक 37 हजार से अधिक गायों में लंपी वायरस फैल चुका है। अब इस मामले में सुप्रीम कोर्ट से हस्तक्षेप करने की गुहार लगाई है। सुप्रीम कोर्ट ने भी याचिका की गंभीरता को देखते आगामी 31 अक्टूबर को इस मामले में सुनवाई करने का भरोसा दिया है। देश में जानवरों में तेजी से फैल रहे लंपी वायरस की रोकथाम की मांग को लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की गई है। कोर्ट से गुहार लगाई कि वह इस मामले में सुनवाई करे। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने 31 अक्टूबर को सुनवाई करने का भरोसा दि?या है। याचिकाकर्ता ने कहा कि वायरस 37,000 से ज्यादा गायों में फैल चुका है। इसलिए कोर्ट इस पर जल्द सुनवाई करे। क्योंकि राज्य सरकारें लापरवाही कर रही हैं। उल्लेखनीय है कि केंद्र सरकार ने जानकारी दी थी कि लंपी वायरस को देखते हुए आठ से अधिक राज्यों में मवेशियों के टीकाकरण के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास किया जा रहा है। पशुपालन और डेयरी विभाग के सचिव जतींद्र नाथ स्वैन ने बताया था कि पशुओं में फैले लंपी वायरस पर काबू पाने के लिए गोट पॉक्स टीके का उपयोग किया जा रहा है। बताया जाता है कि गोट पॉक्स टीका इस बीमारी पर 100 प्रतिशत प्रभावी है और लंपी वायरस से प्रभावित राज्यों में सितंबर माह में 1.5 करोड़ खुराक भेजी जा चुकी है। जानकारी के मुताबि?क गोट पॉक्स टीके का निर्माण दो कंपनियां कर रही हैं। इनकी टीका निर्माण की क्षमता एक माह में करीब 4 करोड़ टीका है।

कश्मीर के चुनाव में खेल करेंगे 25 लाख 'बाहरी' मतदाता, भड़की नेकां कहा यह भाजपा की साजिश

जम्मू । जम्मू-कश्मीर में अगले साल तक विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। केंद्र शासित प्रदेश में वोटर लिस्ट को लेकर घमासान शुरू हो गया है। जम्मू प्रशासन की ओर से सभी तहसीलदारों और रेवेन्यू ऑफिसरों को आदेश दिया गया है कि वे एक साल से शहर में रह रहे लोगों को निवास का प्रमाण पत्र जारी करें। इस सर्टिफिकेट के आधार पर एक साल से जम्मू में रह रहे लोगों को वोटर लिस्ट में शामिल किया जाएगा। इस आदेश पर नेशनल कॉन्फ्रेंस (नेकां) ने आपत्ति जताते हुए कहा है कि भाजपा साजिश रच रही है।

नेकां ने कहा कि भाजपा तो पता है कि जम्मू-कश्मीर के मतदाता उसे हरा देंगे, इसलिए वह नए वोटरों को जोड़ रही है। जम्मू के बाद अन्य जिलों में भी यह आदेश जल्दी ही जारी किया जा सकता है। कहा जा रहा है कि इस फैसले से जम्मू-कश्मीर की मतदाता सूची में 25 लाख नए वोटर शामिल हो जाएंगे। इसके साथ ही केंद्र शासित प्रदेश के मतदाताओं की संख्या 1 करोड़ के पार हो जाएगी, जो अभी 78 लाख ही है। जम्मू के जिला निर्वाचन अधिकारी अवनी लवासा की ओर से आदेश जारी कर तहसीलदारों को एक साल से रह रहे लोगों को निवास प्रमाण पत्र जारी करने को कहा है। उन्होंने निवास के प्रमाण के लिए कुछ दस्तावेजों की लिस्ट भी बताई है, जिन्हें आवेदन के लिए स्वीकार किया जा सकता है। ये दस्तावेज हैं, पानी, बिजली या फिर गैस कनेक्शन की कॉपी। इसके अलावा आधार कार्ड, डाकघर या बैंक पासबुक, भारतीय पासपोर्ट, किसान बही समेत भूमि रिकॉर्ड, रेंट एग्रीमेंट और सेल एग्रीमेंट। इसे लेकर नेशनल कॉन्फ्रेंस ने हमला बोला है और चुनाव आयोग की आड़ में भाजपा की साजिश बताया है। वहीं भाजपा ने इस पर जवाब देते हुए कहा कि यह एकदम सही फैसला है। रविंदर रैना ने कहा संविधान के अनुसार ही काम किया जा रहा है।

नियमानुसार कोई भी व्यक्ति जो एक साल से किसी नए स्थान पर रहा हो, वह पुरानी जगह लिस्ट से अपना नाम कटवाकर नए स्थान पर जुड़वा सकता है। उसी के तहत यह आदेश जारी किया गया है। अब तक आर्टिकल 370 लागू होने के चलते यह नियम नहीं लागू हो पा रहा था। गौरतलब है कि जम्मू-कश्मीर में फिलहाल वोटर लिस्ट तैयार की जा रही है और इस साल के अंत तक यह काम पूरा होने की उम्मीद है। इसके बाद अगले साल तक राज्य में चुनाव कराए जा सकते हैं।

मानव बलि का मामला: आर्थिक तंगी दूर करने के लिए ली 2 महिलाओं की जान, कोर्ट ने आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेजा

नई दिल्ली। केरल के दूरदराज के एक गांव में एक जोड़े सहित तीन लोगों द्वारा कथित तौर पर एक रस्म के तहत दो महिलाओं की कथित तौर पर बलि देने के मामले में प्रशासन ने एक्शन लिया है। केरल में 'मानव बलि' के मामले में एर्नाकुलम सत्र अदालत ने तीनों आरोपियों को 26 अक्टूबर तक के लिए न्यायिक हिरासत में भेजा। पुलिस आयुक्त सीएच नागराजू ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि हमने मारे गए दोनों महिलाओं के शरीर के सभी हिस्सों को बरामद कर लिया है। पीड़ित महिला में से एक के शरीर के अंगों को तीन गड्ढों में से बरामद किया गया जहां उन्हें दफनाया गया था। पुलिस आयुक्त ने कहा कि ऐसी संभावना है कि आरोपियों ने पीड़ितों की हत्या करने के बाद शरीर के अंगों को खा लिया है। इसकी जांच की जा रही है, लेकिन अभी इसकी पुष्टि नहीं हुई है। मुख्य आरोपी शफी एक विकृत व्यक्ति है। हम जांच कर रहे हैं कि क्या इसमें अन्य आरोपी हैं और क्या ऐसे और मामले हुए हैं? जब हमने मुख्य आरोपी शफी से पूछताछ की तो हमें पहले कुछ नहीं मिला। वैज्ञानिक जांच हमें पथानामथिट्टा तक ले गई। हमें जांच के दौरान पता चला कि शफी मुख्य साजिशकर्ता और विकृत व्यक्ति है। मुख्य जांचकर्ता कोच्चि डीसीपी एस शशिधरन ने कहा कि मुख्य आरोपी शफी ने वित्तीय कठिनाइयों वाले लोगों को खोजने के लिए फेसबुक का इस्तेमाल किया। उसने भगवल सिंह और लैला को पाया, जो मानव बलि में रुचि रखते थे। शफी ने अपनी पत्नी के फोन में फेसबुक चलाया था लेकिन वह नहीं जानती थी। हम इस बात की भी जांच कर रहे हैं कि क्या मुख्य आरोपी शफी ने कोई यौन शोषण किया है। इस मानव बलि अनुष्ठान मामले के अलावा विभिन्न अपराधों के तहत शफी के खिलाफ 8 मामले दर्ज हैं।

हर जगह केंद्र में महिलाएं-विद्या मांगो तो सरस्वती को 'पटाओ', शक्ति मांगो तो दुर्गा और धन मांगो तो लक्ष्मी को 'पटाओ'

-पूर्व मंत्री और भाजपा विधायक बंशीधर भगत के बिगड़े बोल

हल्द्वानी । पूर्व मंत्री और भाजपा विधायक बंशीधर भगत का एक वीडियो वायरल हो रहा है। वीडियो में भगत हल्द्वानी में बालिका दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में देवी-देवताओं पर अटपटी बातें करते दिखाई दे रहे हैं। उनकी बातों से भाजपाई भी असहज हो गए हैं। वीडियो में भगत कह रहे हैं कि बालकों का नंबर तो हमेशा बाद में ही आता है। महिलाओं को संबोधित करते हुए भगत ने कहा कि कहते हैं कि भगवान तक ने आपका पक्ष लिया है। विद्या मांगो तो सरस्वती को 'पटाओ', शक्ति मांगो तो दुर्गा और धन मांगो तो लक्ष्मी को 'पटाओ'। वह यहीं नहीं थमे और भगवान शिव-विष्णु को लेकर भी अजीबोगरीब बातें कहीं। उन्होंने कहा आदमी के पास है, क्या एक शिवजी हैं, वह पहाड़ में पड़े हुए हैं ऊपर से सिर पर सांप रखा हुआ है। इसके बाद उन्होंने भगवान विष्णु पर टिप्पणी करते हुए कहा कि वे समुद्र की गहराई छिपे हैं। दोनों की आपस में बात भी नहीं होती। भगत के ये बोल सुन कार्यक्रम में महिलाओं के साथ भाजपाई भी बगलें झांकने लगे।

मुंबई में जल्द ही ऑटो और टैक्सी में सफर होगा महंगा, मुंबईकर पर पड़ेगा अतिरिक्त बोझ

मुंबई । मुंबई में जल्द ही ऑटो और टैक्सी में सफर महंगा होने वाला है, लिहाजा मुंबईवासियों की जेब पर अतिरिक्त बोझ उठाना होगा। संशोधित टैरिफ के अनुसार ऑटोरिक्शा के लिए न्यूनतम शेयर किराया एक रुपये बढ़ाकर यानी 9 रुपये से 10 रुपये किया जा रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक इसी तरह, टैक्सी शेयर का न्यूनतम किराया 8 रुपये से बढ़ाकर 9 रुपये होगा। नए टैरिफ के लागू होने के बाद हर पांच मिनट के वेटिंग के लिए यात्रियों को ऑटो के लिए 8 रुपये और टैक्सियों के लिए 9 रुपये अतिरिक्त किराए के अलावा किमी किराए के रूप में अदा करना होगा। जानकारी के मुताबिक 1 अक्टूबर से न्यूनतम ऑटो किराया 21 रुपये से बढ़ाकर 23 रुपये और टैक्सी के लिए न्यूनतम 25 रुपये से 28 रुपये कर दिया गया है। ऑटो के लिए किलोमीटर का किराया 15.33 रुपये और टैक्सियों के लिए 18.66 रुपये किया गया है। इसके लिए अधिकारियों ने नया मीटर भी जारी किया है। नए मीटरों को जांचने के लिए आरटीओ अधिकारियों ने प्रोग्राम को कुछ इलेक्ट्रॉनिक मीटरों पर अपलोड किया था, जो प्रयोगशालाओं को 48 किमी (प्रत्येक मीटर के लिए) के लिए अनिवार्य टेबल परीक्षण करने के लिए भेजे गए थे, ताकि यह जांचा जा सके कि पुनर्गणना ठीक से की गई थी या नहीं।

गुजरात में बोले नड्डा, अब विनाश की ओर ले जाने वाले लोग नहीं रहेंगे, सिर्फ विकास वाले ही रहेंगे

नई दिल्ली। (एजेंसी)।

गुजरात में विधानसभा चुनाव को लेकर सरगर्मियां लगातार तेज होती जा रही हैं। भाजपा सत्ता में वापसी करने के लिए एक बार फिर से पूरी ताकत लगा रही है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा आज द्वारिका पहुंचे हैं। द्वारिका में उन्होंने एक जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान जेपी नड्डा ने कहा कि अगर कोई राष्ट्रीय, वैचारिक और दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है तो वह भाजपा है। कांग्रेस भी कमजोर होकर सिकुड़ गई है और न ही अब यह राष्ट्रीय पार्टी और न ही भारतीय पार्टी रह गई है। यह सिर्फ अब भाई-बहन की पार्टी है। उन्होंने कहा कि गौरव यात्रा की तरह कल तीन स्थानों से और यात्राएं शुरू होंगी, एक यात्रा हमारे आदिवासी भाइयों को समर्पित होगी, भगवान बिरसा मुंडा को याद करते हुए, आदिवासियों के गौरव के लिए और आदिवासियों ने देश के गौरव के लिए जो काम किया है, उस गाथा को लेकर यात्रा निकलेगी।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि ये गौरव यात्रा सिर्फ द्वारकाधीश की गौरव यात्रा नहीं है, ये गौरव यात्रा सिर्फ गुजरात की गौरव यात्रा नहीं है, ये गौरव यात्रा देश की गौरव यात्रा है। उन्होंने कहा कि गुजरात संतों की धरती रही है, भक्तों की धरती रही है, समाज सेवियों की धरती रही है, गुजरात समाज सुधारकों की धरती रही है। इसके साथ ही उन्होंने विपक्ष पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि एक समय था जब पॉलिटिक्स का मतलब होता था कमीशन, पॉलिटिक्स का मतलब होता था भ्रष्टाचार, अनाचार, कुर्सी से चिपकना, लोगों को धोखा, खुद मेवा खाना, मोदी जी ने इस संस्कृति को बदल डाला, और मिशन बनाकर देश की सेवा में जुट गए। गुजरात में उन्होंने सपा नेता अखिलेश यादव पर भी निशाना साधा।

नड्डा ने कहा कि एक समय था जब अखिलेश बोलते थे कि ये तो मोदी टीका है, ये तो बीजेपी का टीका है। और चुपके-चुपके खुद लगवा लिया और दूसरों को बोला आप न लगाओ। ऐसे राजनेताओं को रहना चाहिए? उन्होंने अपना हमला जारी रखते हुए कहा कि कांग्रेस के लोगों को अब समझ में नहीं आ रहा है कि वो राजनीति में करेंगे तो करेंगे क्या? क्योंकि वह आए थे मेवा खाने, देश के नाम पर परिवार की सेवा करने और वंशवाद को बढ़ाने लेकिन मोदी जी ने भारत की जनता को आगाह करा दिया कि अब मेवा खाने वाले नहीं रहेंगे, सेवा करने वाले रहेंगे। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि अब कमीशन खाने वाले नहीं रहेंगे, मिशन के साथ चलने वाले लोग रहेंगे, अब विनाश की ओर ले जाने वाले लोग नहीं रहेंगे, विकास की ओर ले जाने वाले लोग ही रहेंगे।

मानसून की विदाई की घोषणा में मौसम विभाग से हुई चूक, आधा अक्टूबर बीतने को आया, अब भी नहीं रुकी वर्षा

नई दिल्ली (एजेंसी)।

मौसम विभाग ने 30 सितंबर तक मॉनसून की विदाई का ऐलान किया गया था, लेकिन इस अनुमान से आगे जाते हुए अब तक बारिश हो रही है। मौसम विभाग इसे पोस्ट मॉनसून बारिश कह रहा है, लेकिन ऐसा लगता नहीं है। विशेषज्ञों का मानना है कि मॉनसून की विदाई का मौसम विभाग का ऐलान थोड़ा जल्दबाजी में कर दिया है।

दरअसल है उत्तर पश्चिम भारत में अक्टूबर के 10 दिनों में औसत से 405 फीसदी ज्यादा बारिश हुई है। दिल्ली में 625 फीसदी ज्यादा बारिश हुई है। इसके हरियाणा में 577 और उत्तराखंड में औसत से 538 फीसदी अधिक बारिश हुई है। उत्तर प्रदेश के पूर्वी और पश्चिमी हिस्से समेत तमाम जिलों में 698 फीसदी अधिक बारिश हुई है। मौसम विभाग की ओर से ऐलान किया गया था कि 30 सितंबर से पंजाब, चंडीगढ़, दिल्ली, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान से मॉनसून की विदाई हो गई है। हालांकि उसके बाद जबरदस्त बारिश होने से उस अनुमान पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि यह अनुमान शायद मौसम विभाग ने जल्दबाजी में जारी कर दिया था।

इस बीच मौसम विभाग ने कहा है कि मॉनसून अब लौटने लगा है। उत्तरकाशी, नजीबाबाद, आगरा, ग्वालियर, रतलाम और भरूच से होते हुए मॉनसून विदा हो रहा है। मौसम विभाग के नए अनुमान में कहा गया है कि अगले 4 से 5 दिनों में उत्तर पश्चिम और मध्य भारत के राज्यों से मॉनसून विदा हो जाएगा। मौसम विभाग के डायरेक्टर जनरल एम महापात्रा ने कहा अधिक बारिश होने का प्रतिशत अक्टूबर के शुरुआती 10 दिनों में बहुत अधिक है। इसकी वजह यह है कि आमतौर पर इस सीजन में बारिश बेहद कम होती रही है। बंगाल की खाड़ी में चक्रवात की स्थिति पैदा होने के चलते यूपी और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में भारी बारिश हुई है। पश्चिमी विक्षोभ से दक्षिण पूर्वी हवाओं के टकराने से पूरे उत्तर भारत में भारी बारिश हुई है।

पाकिस्तान के साथ फिर से शुरू हो व्यापार, पंजाब की 'आप' सरकार ने जताई इच्छा

नई दिल्ली (एजेंसी)।

आम आदमी पार्टी की अगुवाई वाली पंजाब सरकार ने पाकिस्तान के साथ व्यापार को फिर से शुरू करने की मांग की है। बता दें कि भारत सरकार द्वारा जम्मू और कश्मीर में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के दो दिन बाद इस्लामाबाद ने 7 अगस्त 2019 को इसे निलंबित कर दिया था। पंजाब के कृषि और किसान कल्याण मंत्री कुलदीप सिंह धालीवाल ने इस साल 14-15 जुलाई को बेंगलुरु में राज्य के कृषि और बागवानी मंत्रियों के राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान यह मांग उठाई थी।

सम्मेलन के कार्यवृत्त केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा आयोजित और केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर की अध्यक्षता में आयोजित सभी कृषि उत्पादन आयुक्तों (एपीसी), प्रमुख सचिवों और सभी राज्यों के कृषि निदेशकों को परिचालित किए गए थे। चर्चाओं के रिकॉर्ड बताते हैं कि विभिन्न मुद्दों के बीच धालीवाल ने पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय व्यापार को फिर से शुरू करने की मांग उठाई। उन्होंने अनुरोध किया कि पाकिस्तान के साथ व्यापार फिर से शुरू किया जाना चाहिए। रिकॉर्ड के मुताबिक पंजाब के अलावा किसी और राज्य ने यह मांग नहीं उठाई।

इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के अनुसार सम्मेलन के बाद तैयार की गई राज्य सरकारों के साथ चर्चा से उभरने वाले कार्रवाई बिंदुओं' की सूची में पंजाब सरकार की पाकिस्तान के साथ व्यापार को फिर से शुरू करने की मांग को शामिल किया गया था। 'कार्रवाई बिंदुओं' की यह सूची सम्मेलन के कार्यवृत्त के साथ-साथ परिचालित की गई है। धालीवाल के अन्य अनुरोध जैसे सीमावर्ती क्षेत्रों (14,000 एकड़) में कृषि इनपुट में सहायता प्रदान करना, सब्जियों के लिए कोल्ड स्टोरेज के लिए 1,000 करोड़ रुपये का आवंटन, पराली जलाने को रोकने के लिए वित्तीय सहायता, कृषि ऋण माफी, कृषि विश्वविद्यालय के लिए धन और भूजल स्तर में सुधार के लिए वित्तीय सहायता को कार्रवाई के बिंदुओं में भी शामिल किया गया है।

कुमार विश्वास को मिली राहत, पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट ने रद्द की एफआईआर

चंडीगढ़ । पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट से आम आदमी पार्टी के पूर्व नेता और हिंदी के मशहूर कवि कुमार विश्वास को राहत देते हुए उनके खिलाफ दायर पंजाब पुलिस की एफआईआर को रद्द कर दिया है। उल्लेखनीय है कि कुमार विश्वास पर पंजाब विधानसभा चुनाव से ठीक पहले इसी साल 12 अप्रैल को आम आदमी पार्टी प्रमुख अरविंद केजरीवाल के खिलाफ कथित रूप से भड़काऊ बयान देने के लिए रूपनगर में मामला दर्ज किया गया था। उन पर धर्म और नस्ल के आधार पर दुश्मनी पैदा करने का आरोप लगाया गया था।

कुमार विश्वास ने इस कार्रवाई के खिलाफ हाईकोर्ट का रुख किया था। उन्होंने आपराधिक कार्यवाही पर रोक लगाने की मांग की थी। इस मामले पर न्यायमूर्ति अनूप चितकारा की पीठ सुनवाई कर रही थी। याचिका में कानून की प्रक्रिया के दुरुपयोग का आरोप लगाया गया और इसे राजनीति से प्रेरित बताया गया था। इससे पहले भी दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ बयान को लेकर कुमार विश्वास को पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट से राहत मिली थी। अदालत ने विश्वास की गिरफ्तारी पर रोक लगा दी थी। उन पर पंजाब के रोपड़ में केस दर्ज हुआ था। विश्वास पर आरोप था कि उन्होंने केजरीवाल के खालिस्तान से संबंध के गलत आरोप लगाए थे।

कांग्रेस की विचारधारा की रक्षा के लिए पार्टी अध्यक्ष के चुनाव में उतरा: खड़गे

नई दिल्ली (एजेंसी)।

कांग्रेस अध्यक्ष पद के प्रत्याशी मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि कांग्रेस को मजबूत करने और उसकी विचारधारा को बचाने के लिए उन्होंने पार्टी अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ने का फैसला किया है। खड़गे बुधवार को लखनऊ पहुंचे और चुनाव में वोट डालने वाले उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। उसके बाद उन्होंने प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए गांधी परिवार के चुनाव लड़ने से मना करने के बाद उन्होंने अपने शुभचिन्तकों से सलाह मशविरा करके यह चुनाव लड़ने का निर्णय लिया।

उन्होंने कहा, कांग्रेस की मजबूती और विचारधारा को बचाने के लिए मैंने चुनाव लड़ने का निर्णय लिया। खड़गे ने कहा कि पूरे देश में मैं अपनी पार्टी के 9,000 से ज्यादा पदाधिकारियों और शुभचिन्तकों से मिलकर अपने लिए समर्थन मांग रहा हूं। मैंने उदयपुर चिन्तन शिविर की जो घोषणाएं हैं, उन्हीं को शामिल करके अपना घोषणापत्र बनाया है। संगठन में 50 प्रतिशत पद 50 वर्ष से कम आयु वाले लोगों को दिये जाएंगे और अन्य जो भी घोषणाएं हैं उन्हें भी मैं लागू करूंगा। मुझे पूरा भरोसा है कि सभी का समर्थन मुझे मिलेगा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के लिए उत्तर प्रदेश बहुत अहम प्रदेश है और प्रियंका गांधी के प्रभारी बनने के बाद उत्तर प्रदेश में लोगों का कांग्रेस के प्रति रूझान बढ़ा है। विधानसभा चुनाव में भले ही कांग्रेस को आशाअनुरूप नतीजे नहीं मिले लेकिन भविष्य में जनता कांग्रेस के प्रति आशा भरी नज़रों से देख रही है। खड़गेल ने कहा कि उन्हें भरोसा है कि वह अध्यक्ष पद का चुनाव जीतेंगे और इसमें उत्तर प्रदेश का अहम योगदान होगा। कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य ने कहा कि पार्टी में हो रहे संगठनात्मक चुनाव और पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी द्वारा की जा रही भारत जोड़ो यात्रा पर भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तमाम सवाल खड़े कर रहे हैं।

दलित के घर मुख्यमंत्री, येदियुरप्पा का नाश्ता चुनाव से पहले का 'फोटो ऑप': कांग्रेस

जीरकपुर (देव शर्मा) (अखंड लोक)।

चित्रदुर्ग। कांग्रेस ने बुधवार को कहा कि कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई और भाजपा के दिग्गज नेता बीएस येदियुरप्पा का एक दलित के घर नाश्ता करना राज्य में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले वोट की खातिर फोटो-ऑप है। विपक्ष के नेता सिद्धरमैया ने आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार ने दलितों और अन्य पिछड़े समुदायों के उत्थान के लिए कुछ नहीं किया है।

वहीं, कांग्रेस महासचिव एवं पार्टी के कर्नाटक प्रभारी रणदीप सिंह सुरजेवाला ने चिक्कमंगलुरु में दलित कार्यकर्ताओं के साथ कथित तौर पर मारपीट किए जाने और उन्हें बंदी बनाए जाने की घटना का जिक्र करते हुए बोम्मई सरकार पर निशाना साधा। राहुल गांधी के नेतृत्व में निकाली जा रही 'भारत जोड़ो यात्रा' में शामिल होने यहां पहुंचे सिद्धरमैया ने एक सवाल के जवाब में संवाददाताओं से कहा, ''क्योंकि चुनाव आ रहे हैं, वे दलितों, पिछड़े वर्गों, एससी-एसटी को याद करने लगे हैं, अब तक इस सरकार द्वारा उनके कल्याण के लिए कुछ भी नहीं किया गया है। अब वे चुनाव और वोट के लिए उन इलाकों का दौरा कर रहे हैं जहां दलित और पिछड़े समुदाय के लोग रहते हैं।''

पार्टी की जन संकल्प यात्रा में शामिल बोम्मई, येदियुरप्पा और अन्य भाजपा नेताओं ने विजयनगर जिले के कमलापुरा गांव में बुधवार को एक दलित के घर में नाश्ता किया। सुरजेवाला ने एक ट्वीट में आरोप लगाया, कर्नाटक में बोम्मई सरकार के तहत दलितों पर अत्याचारों में पिछले साल की तुलना में 54 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। बोम्मई-बीएसवाई (येदियुरप्पा) जहां एक दलित के घर जाने का फोटो-ऑप करते हैं, वहीं एक भाजपा नेता ने 16 दलितों को बंदी बना लिया और एक असहाय महिला को अपना बच्चा खोना पड़ा।

मोदी सरकार की नोटबंदी की समीक्षा करेगा सुप्रीम कोर्ट , केंद्र और आरबीआई से मांगा हलफनामा

नयी दिल्ली। (एजेंसी)।

सुप्रीम कोर्ट बुधवार को 500 और 1,000 रुपये के नोटों को बंद करने के केंद्र सरकार के 2016 के फैसले को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए नोटिस जारी किया है। संविधान पीठ इस बात की जांच करेगी कि क्या यह मुद्दा अब केवल अकादमिक है। याचिकाएं नवंबर 2016 के केंद्र के फैसले को चुनौती देती हैं। संविधान पीठ में जस्टिस एस अब्दुल नज़ीर, बीआर गवई, एएस बोपन्ना, वी रामसुब्रमण्यम और बीवी नागरत्ना शामिल हैं। मामला छह साल बाद संविधानिक पीठ के सामने आया है। केंद्र और आरबीआई ने हलफनामा दाखिल करने के लिए समय मांगा है। मामले की अगली सुनवाई अगली सुनवाई 9 नवंबर को होगी।

न्यायमूर्ति एसए नज़ीर की अध्यक्षता वाली एक संविधान पीठ ने 28 सितंबर को कहा था कि वह इस पर विचार करेगी कि क्या याचिकाएं अकादमिक अभ्यास हैं। जस्टिस बीआर गवई, एएस बोपन्ना, वी रामसुब्रमण्यम और बीवी नागरत्न की बेंच ने नोटों के विमुद्रीकरण को चुनौती देने वाली 58 याचिकाओं के एक बैच पर सुनवाई के बाद ये टिप्पणी की थी। आज इस मामले पर सुनवाई करते हुए जस्टिस नज़ीर ने कहा कि वो 2016 में नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा किए गए विमुद्रीकरण अभ्यास के पीछे निर्णय लेने की प्रक्रिया को देखेगा। शीर्ष अदालत ने केंद्र और भारतीय रिजर्व बैंक से विस्तृत हलफनामा दाखिल करने को कहा। 8 नवंबर 2016 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 500 और 1,000 रुपये के नोटों को बंद करने की घोषणा की थी। इस अभूतपूर्व निर्णय का एक प्रमुख उद्देश्य डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देना और काले धन के प्रवाह पर अंकुश लगाना था। केंद्र सरकार के दो उच्च मूल्यवर्ग की मुद्राओं को वापस लेने के अचानक निर्णय के कारण बैंकों के बाहर लोगों की लंबी कतारें चलन में आने / जमा करने के लिए लगीं। एटीएम के बाहर भी कैश निकालने के लिए लोगों की लंबी कतार लग गई। अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्र, विशेषकर असंगठित क्षेत्र, सरकार के फैसले से प्रभावित हुए। विमुद्रीकरण अभ्यास के हिस्से के रूप में तत्कालीन प्रचलित 500 और 1,000 रुपये के नोटों को वापस लेने के बाद, सरकार ने पुनः मुद्रीकरण के हिस्से के रूप में 2,000 रुपये के नए नोट पेश किए थे। इसने 500 रुपये के नोटों की एक नई श्रृंखला भी पेश की। बाद में, 200 रुपये का एक नया मूल्यवर्ग भी जोड़ा गया। इससे पहले मई में, भारतीय रिजर्व बैंक की वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया था कि नकली 500 रुपये के नोटों में 100 प्रतिशत और नकली 2,000 रुपये के नोटों में 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। आरबीआई की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, पिछले वर्ष की तुलना में वित्त

वर्ष 2021-22 में बैंकिंग प्रणाली द्वारा 500 रुपये मूल्यवर्ग के नकली नोटों की संख्या दोगुनी से अधिक बढ़कर 79,669 हो गई।

21 और 24 अक्टूबर को जो बाइडन और डोनाल्ड ट्रम्प मनाएंगे दीपावली

वाशिंगटन । अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन 24 अक्टूबर को व्हाइट हाउस में दीपावली मनाएंगे, जबकि उनके पूर्ववर्ती डोनाल्ड ट्रंप की अपने फ्लोरिडा स्थित मार-ए-लागो रिज़ॉर्ट में 21 अक्टूबर को यह त्योहार मनाने की योजना है। बाइडन की भारतीय अमेरिकी समुदाय के प्रतिष्ठित सदस्यों और उनके प्रशासन के सदस्यों के साथ दीपावली मनाने की योजना है। प्रथम महिला जिल बाइडन भी 24 अक्टूबर को व्हाइट हाउस में होने वाले इस उत्सव में शामिल होंगी। व्हाइट हाउस में दीपावली के जश्न से जुड़ी विस्तृत जानकारी अभी नहीं दी गई है। इस बीच, रिपब्लिकन हिंदू गठबंधन (आरएचसी) ने मंगलवार को घोषणा की कि ट्रंप अपनी पार्टी के सदस्यों और भारतीय-अमेरिकी समुदाय के नेताओं के साथ 21 अक्टूबर को अपने मार-ए-लागो रिज़ॉर्ट में दीपावली मनाएंगे। आरएचसी के शलभ कुमार ने बताया कि चार घंटे तक इस पर चर्चा की गई। ट्रंप की टीम आतिशबाजी करने की योजना भी बना रही है।

सिंघ प्रांत की सरकार ने हिंदू लड़की के अपहरण की उच्च स्तरीय जांच के आदेश दिए

कराची । पाकिस्तान के सिंध प्रांत की सरकार ने हैदराबाद शहर से 14 वर्षीय हिंदू लड़की के अपहरण के मामले की उच्च स्तरीय जांच के आदेश दिए हैं। अधिकारियों के मुताबिक लड़की का हाल ही में हैदराबाद के फतेह चौक इलाके से उस समय अपहरण कर लिया गया था, जब वह घर जा रही थी। लड़की के माता-पिता ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है, लेकिन उसका पता नहीं चल पाया है। अधिकारियों ने बताया कि सिंध सरकार ने घटना की उच्च स्तरीय जांच के आदेश दिए हैं। सिंध की प्रांतीय सरकार के एक प्रवक्ता ने कहा कि वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने जांच शुरू कर दी है और प्रभावित परिवार के संपर्क में हैं। हैदराबाद में एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि वे दो अन्य हिंदू महिलाओं से जुड़ी घटना की भी जांच कर रहे हैं, जो पिछले एक सप्ताह में हैदराबाद और मीरपुरखास में लापता हो गई थीं। गौरतलब है कि पाकिस्तान के सिंध प्रांत में हिंदू लड़कियों और महिलाओं के अपहरण और जबरन धर्म परिवर्तन के मामलों में इस साल वृद्धि देखी गई है। पाकिस्तानियों ने बाढ़ राहत सहायता में भी कर डाला भ्रष्टाचार, भड़के अमेरिका ने दी कड़ी चेतावनी।

वेनेजुएला में भूस्खलन में मरने वालों की संख्या बढ़कर 34 हुई

लास तेजेरियास । मध्य वेनेजुएला में एक भीषण भूस्खलन में मरने वाले लोगों की संख्या बढ़कर 34 हो गयी है। बचावकर्मी मलबे में दबे लोगों की ड्रोन एवं प्रशिक्षित श्वान दस्तों की मदद से तलाश कर रहे हैं। निवासियों ने पानी और मिट्टी के सैलाब से बाल-बाल बच निकलने की खौफनाक दास्तां सुनायी। जोस मेडिना ने बताया कि लास तेजेरियास शहर में उनके घर में पानी कमर के स्तर तक घुस आया था। वह और उनका परिवार इसमें फंस गए थे लेकिन किसी तरह बाहर निकलने में कामयाब रहे। मेडिना ने अपने परिवार के बच निकलने को ''चमत्कार' बताया। लास तेजेरियास में कई पर्वतीय इलाकों में तूफान 'जूलिया' के कारण मूसलाधार बारिश आयी, जिसे बाढ़ आ गयी और मिट्टी धंस गयी। वेनेजुएला के अधिकारियों ने सोमवार को बताया कि बाढ़ में कम से कम 34 लोगों की मौत हो गयी है और 60 अन्य लोग लापता हैं। नकदी के संकट से जूझ रहे इस दक्षिण अमेरिकी देश में हाल के वर्षों में यह सबसे खराब प्राकृतिक आपदा है। इस बीच, बचावकर्मियों ने मलबे में दबे लोगों का पता लगाने के लिए ड्रोन और श्वान दस्तों का इस्तेमाल किया। देश की उपराष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज ने भूस्खलन से प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया। उन्होंने कहा, ''हमें अब भी ऐसे लोगों के मिलने की उम्मीद है जिन्हें बचाया जा सकता है।'' वेनेजुएला के प्राधिकारियों ने बताया कि लास तेजेरियास में 317 मकान मिट्टी धंसने से ढह गए और 750 अन्य मकानों को भी नुकसान पहुंचा है। वेनजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो ने रविवार को पीड़ितों के लिए तीन दिन के शोक की घोषणा की थी। उन्होंने कहा था कि बाढ़ से देश के 11 राज्यों को नुकसान पहुंचा है।

पाकिस्तानियों ने बाढ़ राहत सहायता में किया भ्रष्टाचार, अमेरिका ने दी चेतावनी

वॉशिंगटन । पाकिस्तान में बाढ़ ने भयानक तबाही मचाई है। बाढ़ की विभीषिका ने बड़े पैमाने पर नुकसान पहुचाया है। लोगों के पास खाने को कुछ नहीं बचा। संकट से जूझ रहे लोगों की मदद के लिए अमेरिका ने राहत सहायता भेजी है। लेकिन संकटग्रस्त आम लोगों की मदद के लिए भेजे गए राहत पैकेज में भ्रष्टाचार किए जाने की शिकायतें सामने आई हैं। भ्रष्टाचार की खबरें सामने आने के बाद व्हाइट हाउस की ओर से कहा गया पाकिस्तान ही नहीं, जहां भी अमेरिकी टैक्सपेयर का डॉलर फंसा हुआ है, उसे अमेरिका बेहद गंभीरता से लेता है। राहत सामग्री में भ्रष्टाचार पर अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता नेड प्राइस ने कहा यह एक ऐसी चीज है, जिसे हम सिर्फ पाकिस्तान ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में जहां कहीं भी अमेरिकी टैक्सपेयर का डॉलर फंसा है, बहुत गंभीरता से लेते हैं। खासकर तब जब पाकिस्तान में मानवीय हित दांव पर हैं। इस मामले की निगरानी के लिए उठाए गए कदमों पर बोलते हुए प्राइस ने कहा हमारे यूएसएड कर्मचारी कार्यक्रमों की निगरानी के लिए नियमित यात्राएं करते हैं। हमारे पास डीएआरटी यानी डिजास्टर असिस्टेंस रेस्पॉन्स टीम है। नेड प्राइस ने कहा डार्ट के सदस्य सिंध प्रांत के बलूचिस्तान में 10 से ज्यादा बाढ़ प्रभावित इलाकों में गए हैं। 14-27 सितंबर के बीच मदद की स्थिति जानने के लिए दौरा किया गया। इस दौरान ये भी जानने की कोशिश की गई क्या ये गतिविधियां मानवीय आवश्यकताओं को पूरा कर रही हैं या नहीं। विदेश विभाग के मुताबिक अमेरिका ने इस साल पाकिस्तान को बाढ़ राहत के लिए लगभग 56.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर दिए हैं। इसके अलावा खाद्य राहत के लिए 10 मिलियन अतिरिक्त अमेरिकी डॉलर दिए हैं। पाकिस्तान में हाल के दिनों में बड़े पैमाने पर बाढ़ देखने को मिली है। इस बाढ़ ने देश में कहर बरपाया है। बाढ़ के कारण जान-माल को भारी नुकसान हुआ है। सरकारी आंकड़े के मुताबिक 30 सितंबर तक 1,700 लोगों की मौत हुई। 12,800 लोग घायल हुए हैं। बाढ़ प्रभावित इलाकों में 20 लाख से ज्यादा घर बर्बाद हो गए। 79 लाख लोग विस्थापित हुए हैं।

सिंगापुर कोरोना के नए स्वरुप एक्सबीबी संक्रमण पर बीरीकी से नजर रख रहा

सिंगापुर । सिंगापुर के स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि सिंगापुर सार्स-कोव-2 वायरस के नए स्वरूप एक्सबीबी' से जुड़े मामलों पर करीबी नजर रख रहा है। हालांकि, इस नए स्वरूप के घातक होने के अभी तक कोई सबूत नहीं मिले हैं। उन्होंने कहा, सिंगापुर में एक्सबीबी संक्रमण के लक्षण वायरस के अन्य स्वरूपों से काफी प्रबल हैं। इसके मामले दुनिया के कई हिस्सों में सामने आए हैं, लेकिन सिंगापुर में यह तेजी से बढ़ रहे हैं। बीते करीब तीन सप्ताह में दर्ज कुल नए मामलों में आधे से अधिक इस स्वरूप के हैं।'' स्वास्थ्य मंत्री के हवाले से कहा गया हैं कि हालांकि, अभी तक एक्सबीबी' संक्रमण घातक होने के कोई सबूत नहीं मिले हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, सिंगापुर में कोरोना वायरस संक्रमण के 11,732 नए मामले सामने आए, जिनमें से अधिकतर मामले 'एक्सबीबी' स्वरूप के हैं। देश में बीते दो महीने में पहली बार मंगलवार को 10 हजार से अधिक दैनिक मामले दर्ज किए गए। मंत्रालय सिंगापुर में 'एक्सबीबी' संक्रमण से मौत के मामले बढ़ने को लेकर 'व्हाट्सएप' के माध्यम से फैल रही अफवाहों के खिलाफ भी कार्रवाई शुरू करेगा। गृह मंत्रालय ने कहा कि 'व्हाट्सएप' के माध्यम से अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ 'ऑनलाइन फॉल्सहुड्स एंड मैनिपुलेशन एक्ट' (पोफमा) के तहत कार्रवाई की जाएगी।

मच्छरों से परेशान शाहबाज सरकार, भारत से खरीदेगी 60 लाख मच्छरदानी

कराची । पाकिस्तानी स्वास्थ्य मंत्रालय ने भारत से 60 लाख मच्छरदानी की खरीद को मंजूरी दी है, ताकि अभूतपूर्व बाढ़ के कारण मलेरिया और जल जनित अन्य बीमारियों के प्रसार को रोक सके। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) वैश्विक कोष के तहत मिले वित्तीय संसाधनों का इस्तेमाल पाकिस्तान के लिए मच्छरदानी की खरीद में करेगा।

इसके पहले पाकिस्तानी सरकार ने डब्ल्यूएचओ से मच्छरदानी उपलब्ध कराने के लिए अनुरोध किया था। मध्य जून में मूसलाधार बारिश के कारण आई विनाशकारी बाढ़ के कारण एक तिहाई पाकिस्तान पानी की चपेट में था, जिसके कारण 3.3 करोड़ लोगों को विस्थापित होना पड़ा, जबकि 1700 लोगों से अधिक की मौत हो गई। सितंबर में डब्ल्यूएचओ ने आगाह किया कि मलेरिया जैसी बीमारियों के मामले में इजाफे से 'दूसरी आपदा हो सकती है।

पिछले हफ्ते डब्ल्यूएचओ ने चेतावनी दी थी कि बाढ़ प्रभावित पाकिस्तान के 32 जिलों में जनवरी 2023 तक मलेरिया के मामलों की संख्या 27 लाख तक हो सकती है। पाकिस्तानी अधिकारियों ने कहा है कि बाढ़ प्रभावित 32 जिलों में मलेरिया तेजी से फैल रहा है और मच्छर जनित बीमारियों से बच्चे प्रभावित हो रहे हैं। खबर में बताया गया है कि भारत से मच्छरदानी खरीदने के लिए पाकिस्तानी स्वास्थ्य मंत्रालय से पिछले महीने अनुमति मांगी गई थी।

नीदरलैंड में एक महिला कद्दू के बगीचे में लगे हुए विशाल कद्दू देखती हुई।

पाक ने कश्मीर को लेकर पीएम मोदी की टिप्पणी को खारिज किया

कराची । पाकिस्तान ने गुजरात में जनसभा के दौरान कश्मीर के बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की टिप्पणी को खारिज कर दिया। पाकिस्तान ने कहा कि पीएम मोदी का यह तर्क हैं कि उन्होंने किसी तरह, 'कश्मीर मुद्दे का समाधान÷ किया है, न केवल गलत और भ्रामक है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि भारतीय नेतृत्व जमीनी हकीकत से कितना बेखबर है। दरअसल प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने अन्य रियासतों के विलय से संबंधित मुद्दों को हल कर दिया था लेकिन 'एक व्यक्ति' कश्मीर मुद्दे को नहीं सुलझा सका। उन्होंने कहा, मैं चूंकि सरदार साहब के नक्शे कदम पर चलता हूं, मुझ में सरदार पटेल की भूमि के मूल्य हैं और यही कारण है कि मैंने कश्मीर की समस्या का समाधान कर सरदार पटेल को श्रद्धांजलि दी।''

पाकिस्तान के विदेश कार्यालय (एफओ) ने पीएम मोदी की टिप्पणी को साफ तौर पर खारिज कर कहा कि भारतीय प्रधानमंत्री का 'हास्यास्पद तर्क है, कि उन्होंने किसी तरह, 'कश्मीर मुद्दे को हल किया', यह न सिर्फ गलत और भ्रामक है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि भारतीय नेतृत्व जम्मू-कश्मीर में जमीनी हकीकत से कितना बेखबर हो गया है। एफओ ने एक बयान में कहा गया है कि जम्मू कश्मीर अंतरराष्ट्रीय तौर पर पहचाने जाना वाला विवाद है जिसका समाधान 1948 से संयुक्त राष्ट्र के एजेंडे में रहा है।

यूक्रेन युद्ध में पुतिन इस तरह युद्ध से हट जाएं कि जीत का दावा कर सकें

कीव (एजेंसी)।

दुनिया अब यूक्रेन युद्ध में एक नए चरण की गवाह है। केर्च पुल पर हमला और बाद में कीव और अन्य यूक्रेनी शहरों पर रूसी मिसाइलों की जवाबी कार्रवाईसे संकेत मिलता है कि युद्ध बढ़ रहा है। लेकिन यह वृद्धि कितनी दूर तक जाएगी और एक पूर्ण पैमाने पर परमाणु विनिमय की आशंका - हालांकि अकल्पनीय - भविष्य के किसी बिंदु पर हकीकत में बदल सकती है? अब यह समझ में आने लगा है कि यूक्रेन में चल रहे इस युद्ध को खतरनाक अनुपात तक पहुंचने से रोकना न सिर्फ यूक्रेन के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए जरूरी है। पिछले हफ्ते अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन द्वारा दिया गया एक तर्क यह है कि पश्चिम को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को ''ऑफ रैंप'' की पेशकश करनी चाहिए - यानी, उनके लिए एक रास्ता है जिससे वह युद्धविराम का आह्वान कर सकते हैं, जो ऐसा लगेगा जैसे रूस ने यूक्रेन में सैन्य सफलता हासिल कर ली, जिसे पुतिन अपने लोगों तक ले जा सकते हैं और ''जीत'' का दावा कर सकते हैं। अब यह तेजी से स्पष्ट होता जा रहा है, पुतिन को ''ऑफ रैंप'' होना ही होगा केवल एक पेशकश की तरह नहीं बल्कि युद्ध के हालात को देखते हुए मजबूरी में। केर्च पुल पुतिन का पुल है। उन्होंने क्रीमिया के लोगों से वादा किया था कि 2014 में रूस द्वारा इस क्षेत्र पर कब्जा करने के बाद वह जल्द ही इसका निर्माण करेंगे। इसे बनाने में 3.7 अरब अमेरिकी डॉलर लगे और जब यह 2018 में खोला गया तो उन्होंने पुल के ऊपर पहला वाहन चलाया। तब से यह एक महत्वपूर्ण सेतु रहा है - न केवल क्रीमिया की अर्थव्यवस्था के लिए, बल्कि वर्तमान युद्ध की शुरुआत से, युद्ध के प्रयासों का समर्थन करने वाली एक महत्वपूर्ण सैन्य कड़ी। इस पुल को जिस तरह से क्षतिग्रस्त किया गया है वह सार्वजनिक रूप से रूसी राष्ट्रपति के लिए एक व्यक्तिगत झटका था, जो पहले से ही महत्वपूर्ण घरेलू दबाव में प्रतीत होते हैं क्योंकि युद्ध मास्को की मर्जी के मुताबिकनहीं जा रहा है। देश के भीतर कट्टरपंथी तत्व पुतिन के नेतृत्व और यूक्रेन से निपटने में उनकी कथित कमजोरी पर सवाल उठा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सत्ता में बने रहने और कट्टरपंथियों को समायोजित करने के लिए पुतिन केवल एक ही रास्ता अपना सकते हैंः उन्हें आगे बढ़ना होगा।

यह हाल ही में लामबंदी अभियान में देखा गया था और कई यूक्रेनी शहरों पर मौजूदा मिसाइल हमलों में निश्चित रूप से स्पष्ट है। ऐसा लगता है कि वह नागरिक बुनियादी ढांचे को लक्षित कर रहे हैं। यह स्पष्ट दिख रहा है कि पुतिन को इस बात की परवाह नहीं है कि कितने नागरिक मारे गए। यहां खतरनाक संकेत हैं। क्या वह केवल पारंपरिक आयुधों के साथ मिसाइलों का उपयोग करना जारी रखेंगे? ऐसा हो सकता है कि वह परमाणु विकल्प का उपयोग करने की आवश्यकता महसूस करें। विशेष रूप से उस समय जब आने वाले समय में उन्हें युद्ध का रूख अपने पक्ष में मुड़ता नहीं दिखे। इस तरह के किसी भी कदम को रोकने के लिए पश्चिम - और विशेष रूप से अमेरिका - क्या कर सकता है? एक विचार यह है कि पुतिन को ऑफ रैंप की पेशकश की जाए। पर कैसे? पिछले हफ्ते एक भाषण में, बाइडेन ने स्पष्ट रूप से कहा कि वह पुतिन की दुर्दशा को समझते हैंः वह कहां कहां से हटेंगे? उन्हें हटने का रास्ता कहां से मिलेगा? वह खुद को ऐसी स्थिति में ले आए हैं कि उनके लिए अपना चेहरा और यहां तक कि अपनी ताकत को बचाना मुश्किल हो गया है।

आंग सान सूची को भ्रष्टाचार के दो और मामलों में दोषी ठहराया, 26 साल रहना होगा जेल में

बैंकॉक (एजेंसी)।

सैन्य शासित म्यांमार की अदालत ने अपदस्थ नेता आंग सान सूची को भ्रष्टाचार के दो और मामलों में दोषी ठहराया है। इन दोनों मामलों में उन्हें क्रमशः दो और तीन साल की सजा सुनाई गई है, जिससे अब उन्हें जेल में कुल 26 साल बिताना होगा। गौरतलब है कि एक फरवरी 2021 को म्यांमार की सेना ने देश की बागडोर अपने हाथों में ले ली थी और सू ची (77) तथा म्यांमा के कई बड़े नेताओं को हिरासत में ले लिया था। सू ची पर आरोप था कि उन्होंने कई साल पहले मादक पदार्थों की तस्करी के लिए दोषी ठहराए गए माउंग वीक से 5,50,000 डॉलर रिश्वत ली थी। हालांकि, उन्होंने मामले में अपने ऊपर लगाए गए सभी आरोपों को खारिज किया है।

सू ची को अवैध रूप से वॉकी-टॉकी आयात करने व रखने, कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए लागू प्रतिबंधों का उल्लंघन करने, राजद्रोह और भ्रष्टाचार के कई मामलों में पहले ही 23 साल की सजा सुनाई जा चुकी है। दोनों नए मामलों में सुनाई गई सजा साथ-साथ चलेगी। इसके बाद सू ची को अब कुल 26 साल जेल में बिताने होगा। समर्थकों व स्वतंत्र विश्लेषकों का कहना है कि सभी आरोप राजनीति से प्रेरित हैं और सू ची को अगले चुनाव में हिस्सा लेने से रोकने के लिए बदनाम करने व सेना के अवैध रूप से सत्ता पर काबिज होने को सही ठहराने के लिए ऐसा किया जा रहा है।

ब्रिटेन के महाराजा चार्ल्स तृतीय की ताजपोशी अगले साल 6 मई को होगी

लंदन (एजेंसी)।

ब्रिटेन के महाराजा चार्ल्स तृतीय का राज्याभिषेक अगले साल छह मई को लंदन के वेस्टमिंस्टर एबे में होगा। बकिंघम पैलेस ने यह घोषणा की। महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के पिछले महीने निधन के बाद उनके पुत्र 73 वर्षीय चार्ल्स को ब्रिटेन का महाराजा घोषित किया गया था। बकिंघम पैलेस के मुताबिक चार्ल्स तृतीय को आधिकारिक तौर पर कैंटरबरी के आर्चबिशप द्वारा आयोजित राज्याभिषेक समारोह में उनके ताज और शाही सामग्री से विभूषित किया जाएगा। महाराजा को उनकी पत्नी महारानी कैमिला के साथ ताज पहनाया जाएगा। बकिंघम पैलेस ने एक बयान में कहा ?कि राज्याभिषेक लंबे समय से चली आ रही परंपराओं और शाही शानो-शौकत को प्रदर्शित करने के अलावा सम्राट की मौजूदा और भविष्य की भूमिकाओं को दर्शाएगा। परंपरागत रूप से राज्याभिषेक विशुद्ध रूप से एक धार्मिक सेवा है, जिसे एक उत्सव के रूप में आयोजित किया जाता है। पिछले 900 वर्षों से राज्याभिषेक समारोह वेस्टमिंस्टर एबे में आयोजित होता आया है। महारानी का अंतिम संस्कार भी यहीं किया गया था। 1066 के बाद से राज्याभिषेक सेवा लगभग हमेशा कैंटरबरी के आर्चबिशप द्वारा संचालित की गई है। हाल ही में ब्रिटेन के रॉयल मिंट ने महाराजा चार्ल्स तृतीय की तस्वीर वाले सिक्कों का अनावरण किया है। ब्रिटेन में लोगों को दिसंबर माह तक ये सिक्के दिखने शुरू होंगे, जिन पर चार्ल्स की तस्वीर उकेरी गई है क्योंकि 50-पेंस के ये सिक्के धीरे-धीरे ही बाजार में पहुंचेंगे। ब्रिटेन के सिक्के बनाने वाली कंपनी रॉयल मिंट ने बताया कि नए महाराजा की सिक्के पर बनी तस्वीर को ब्रिटिश मूर्तिकार मार्टिन जेनिंग्स ने बनाया है और चार्ल्स ने स्वयं इसको मंजूरी दी।

अंतरिक्ष पर पूरी तरह कब्जा जमाना चाहता है ड्रैगन, दूसरे देशों के सैटेलाइट तबाह करने को बना रहा हथियार

लंदन (एजेंसी)।

चीन अंतरिक्ष में अपनी ताकत बढ़ाने की कोशिशों में जुटा हुआ है। एक टॉप ब्रिटिश जासूस ने चेतावनी दी है कि अंतरिक्ष में कब्जा करने के लिए चीन अत्याधुनिक हथियारों के निर्माण में जुटा हुआ है। ब्रिटेन की खुफिया एजेंसी जीसीएचक्यू के प्रमुख सर जेरेमी फ्लेमिंग ने एक वार्षिक सुरक्षा बैठक में बताया कि पता चला है कि चीन युद्ध की स्थिति में ब्रिटिश और पश्चिमी देशों की सैटेलाइट को तबाह करने वाले शक्तिशाली हथियार तैयार करने में लगा है।

उन्होंने कहा ब्रिटेन को चीन की वैश्विक तकनीकी प्रभुत्व पर अंकुश लगाने के लिए कठोर कार्रवाई करने की जरूरत है। उन्होंने एक वार्षिक लेक्चर में कहा कि चीन के बायडू सैटेलाइट के नेटवर्क का उपयोग किसी को भी, कहीं भी ट्रैक करने में किया जा सकता है। उन्होंने चेतावनी दी कि कई लोगों का मानना है कि चीन एक शक्तिशाली एंटी सैटेलाइट क्षमता का निर्माण कर रहा है, जिसका लक्ष्य युद्ध की स्थिति में अन्य देशों को अंतरिक्ष तक पहुंचने से रोकना है। ऐसी आशंका है कि इस टैक्नोलॉजी का इस्तेमाल लोगों को ट्रैक करने के लिए जा सकता है।

रूस और चीन दोनों ही देशों के पास एंटी सैटेलाइट हथियार हैं। ये सैटेलाइट मिसाइल की तरह हैं, लेकिन चीन अब लेजर सिस्टम पर काम कर रहा है। इनके जरिए संचार, निगरानी और जीपीएस सैटेलाइट को बर्बाद किया जा सकता है। अगर सैटेलाइट को नष्ट कर दिया गया तो मिसाइलें टारगेट का पता नहीं लगा सकेंगी। उन्होंने कहा कि रूस से कहीं ज्यादा चीन इस युग में हमारे लिए खतरा बन गया है। इसका कारण बताते हुए उन्होंने कहा चीन का प्रभाव नई तकनीकों जैसे डिजिटल करेंसी में बढ़ रहा है। चीन इनका इस्तेमाल अपनी आबादी, पड़ोसियों और देनदारों पर नियंत्रण के लिए कर सकता है।

उन्होंने कहा कि चीनी नेतृत्व का मानना है कि उनकी ताकत और अधिकार एक पार्टी सिस्टम से आती है। इसका मतलब है कि वे अपने नागरिकों की क्षमता का समर्थन करने की बजाय चीनी लोगों पर नियंत्रण के अवसर देखते हैं। उन्होंने कहा चीन को लोकतंत्र और फ्री स्पीच से डर लगता है। ये कोई आश्चर्य नहीं है कि जब चीन के लोग उन्नत अर्थव्यवस्था के लिए काम कर रहे थे, तब पार्टी ने अपने संसाधनों का उपयोग कठोर राष्ट्रीय सुरक्षा कानूनों और सर्विलांस के लिए किया।

यूक्रेन युद्ध को परमाणु प्रयोग तक पहुंचने से रोकना केवल यूक्रेन के लिए ही नहीं शेष दुनिया के लिए भी जरूरी

कीव (एजेंसी)।

दुनिया अब यूक्रेन युद्ध में एक नए चरण की गवाह है। केर्च पुल पर हमला और बाद में कीव और अन्य यूक्रेनी शहरों पर रूसी जवाबी कार्रवाई से संकेत मिलता है कि युद्ध अब गंभीर स्थिति में प्रवेश कर गया है। अब आशंका प्रकट की जा रही है कि युद्ध में रूस परमाणु हथियारों का प्रयोग कर सकता है। यूक्रेन युद्ध को खतरनाक अनुपात तक पहुंचने से रोकना न सिर्फ यूक्रेन के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए जरूरी है।

पिछले हफ्ते अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन द्वारा दिया गया एक तर्क यह है कि पश्चिम को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को ऑफ रैंप की पेशकश करनी चाहिए यानी उनके लिए एक रास्ता है जिससे वह युद्धविराम का आह्वान कर सकते हैं, जो ऐसा लगेगा जैसे रूस ने यूक्रेन में सैन्य सफलता हासिल कर ली है, जिसे पुतिन अपने लोगों तक ले जा सकते हैं और जीत का दावा कर सकते हैं। अब यह तेजी से स्पष्ट होता जा रहा है, पुतिन को ऑफ रैंप होना होगा केवल एक पेशकश की तरह नहीं बल्कि युद्ध के हालात को देखते हुए मजबूरी में।

केर्च पुल पुतिन का पुल है। उन्होंने क्रीमिया के लोगों से वादा किया था कि 2014 में रूस द्वारा इस क्षेत्र पर कब्जा करने के बाद वह जल्द ही इसका निर्माण करेंगे। इसे बनाने में 3.7 अरब अमेरिकी डॉलर लगे और जब यह 2018 में खोला गया तो उन्होंने पुल के ऊपर पहला वाहन चलाया। तब से यह एक महत्वपूर्ण सेतु रहा है न केवल क्रीमिया की अर्थव्यवस्था के लिए, बल्कि वर्तमान युद्ध की शुरुआत से ही सैन्य आपूर्ति का प्रमुख मार्ग रहा है।

इस पुल को जिस तरह से क्षतिग्रस्त किया गया है वह सार्वजनिक रूप से रूसी राष्ट्रपति के लिए एक व्यक्तिगत झटका था, जो पहले से ही महत्वपूर्ण घरेलू दबाव में प्रतीत होते हैं क्योंकि युद्ध मास्को की मर्जी के मुताबिक नहीं जा रहा है। देश के भीतर कट्टरपंथी तत्व पुतिन के नेतृत्व और यूक्रेन से निपटने में उनकी कथित कमजोरी पर सवाल उठा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सत्ता में बने रहने और कट्टरपंथियों को समायोजित करने के लिए पुतिन केवल एक ही रास्ता अपना सकते हैं। उन्हें आगे बढ़ना होगा।

यह हाल ही में लामबंदी अभियान में देखा गया था और कई यूक्रेनी शहरों पर मौजूदा मिसाइल हमलों में निश्चित रूप से स्पष्ट है। ऐसा लगता है कि वह नागरिक बुनियादी ढांचे को लक्षित कर रहे हैं। यह स्पष्ट दिख रहा है कि पुतिन को इस बात की परवाह नहीं है कि कितने नागरिक मारे गए। यहां खतरनाक संकेत हैं। क्या वह केवल पारंपरिक आयुधों के साथ मिसाइलों का उपयोग करना जारी रखेंगे? ऐसा हो सकता है कि वह परमाणु विकल्प का उपयोग करने की आवश्यकता महसूस करें।

संपादकीय

सिरप पर संशय

इस वैश्विक स्वास्थ्य संगठन ने विभिन्न देशों के रोगियों को और अधिक नुकसान से बचाने के लिये इन दवाओं को बाजार से हटाने की सलाह दी है। कह सकते हैं कि पूरी दुनिया में प्रतिष्ठा हासिल कर रही भारतीय सस्ती व कारगर दवाओं के बाजार के विस्तार को इस प्रकरण से झटका लग सकता है।

यह खबर परेशान करती है कि भारत में निर्मित चार कफ सिरप को लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेताया है। जिसकी वजह यह है कि हरियाणा की एक फार्मास्युटिकल फर्म द्वारा निर्मित खांसी व ठंड दूर करने वाले सिरप को बच्चों के लिये घातक बताया जा रहा है। इतना ही नहीं, गाम्बिया में कथित रूप से 66 बच्चों की मौत को लेकर कफ सिरप के दुष्प्रभावों के रूप में आशंका जतायी जा रही है। दुनिया के तमाम देशों में सिरप की बिक्री पर रोक की सलाह दी गई है। निश्चित रूप से विश्व स्वास्थ्य संगठन के चिकित्सा उत्पाद अलर्ट से भारत की दवा नियामक प्रणाली की कार्यशैली पर सवाल उठने लगे हैं। दरअसल, डब्ल्यूएचओ के अनुसार की इन उत्पादों की आपूर्ति का पता गाम्बिया व पश्चिमी अफ्रीकी देशों में ही चला है। मगर संभावना है कि अन्य देशों में भी इसकी आपूर्ति की गई हो। इस वैश्विक स्वास्थ्य संगठन ने विभिन्न देशों के रोगियों को और अधिक नुकसान से बचाने के लिये इन दवाओं को बाजार से हटाने की सलाह दी है। कह सकते हैं कि पूरी दुनिया में प्रतिष्ठा हासिल कर रही भारतीय सस्ती व कारगर दवाओं के बाजार के विस्तार को इस प्रकरण से झटका लग सकता है। यही वजह है कि भारत के केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने हरियाणा की दवा नियंत्रण एजेंसी के सहयोग से मामले में जांच शुरू कर दी है। दरअसल, चिंता की बात यह है कि एक कफ सिरप के एक प्रयोगशाला विश्लेषण के दौरान सामने आये अस्थायी परिणामों में जांचे गये 23 नमूनों में से चार में कुछ ऐसे प्रतिबंधित जहरीले रसायनों का पता चला है, जो कि अंतर्राष्ट्रीय मानकों की अस्वीकार्य मात्रा का अतिक्रमण करते हैं। जो गुर्दे पर घातक प्रभाव का वाहक बन सकते हैं। निस्संदेह, यदि यह कोई साजिश नहीं है तो गंभीर मामला है, जिसको लेकर केंद्रीय दवा नियामक संस्था को समय रहते ध्यान देकर दवा बनाने वाली फार्मा कंपनी पर कार्रवाई करनी चाहिए थी। निस्संदेह, जिस तरह भारत का दवा कारोबार दुनिया में प्रतिष्ठा हासिल कर रहा था, उसको इस प्रकरण से झटका लग सकता था। कोरोना संकट में भारत के फार्मा उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिससे विकासशील व गरीब मुल्कों को काफी मदद भी मिली। भारत निर्मित कोरोना वैक्सीन ने गरीब व विकासशील देशों में इस महामारी से संघर्ष में नई उम्मीद जगाई थी, जिससे तमाम देशों के साथ भारत के मधुर रिश्ते स्थापित हो पाये हैं। इस संकट की घड़ी में देश के दवा उद्योग ने अपनी क्षमता और विश्वसनीयता का प्रदर्शन किया था। ऐसे में इस प्रकरण की समयबद्ध तरीके से सघन जांच कराई जानी चाहिए। इसके साथ ही दवाओं की वैश्विक विश्वसनीयता स्थापित करने के लिये अनुकरणीय सुधारात्मक उपाय करना भी वक्त की जरूरत है, ताकि इस तरह के घटनाक्रमों की पुनरावृत्ति को रोका जा सके जिनसे देश की प्रतिष्ठा को आंच आती हो। साथ ही यह सुनिश्चित करना होगा कि देश व विदेश में घटिया व नकली औषधियां लोगों की जान को जोखिम में न डाल सकें। यहां यह खबर चौंकाती है कि वर्ष 2019 और जनवरी 2020 में जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में बारह शिशुओं की मौत एक दवा निर्माता द्वारा उत्पादित घटिया कफ सिरप के सेवन से हुई थी। कहा जा सकता है कि समय रहते इन प्रणालीगत खामियों पर अंकुश लगा दिया जाता तो वैश्विक स्तर पर भारत की किरकिरी न होती। इसके लिये जरूरी है कि राज्य स्तर पर ड्रग रेगुलेटरी अथॉरिटीज को मिलकर काम करना चाहिए। यदि अविलंब केंद्रीय व राज्यों की एजेंसिया गंभीरता के साथ मिलकर आगे बढ़ें तो सकारात्मक परिणाम सामने आ सकते हैं।

कार्टून

लॉफिंग ज़ोन

रोगी, 'डॉक्टर साहब मेरा ऑप्रेशन सफल रहेगा न।'

डॉक्टर, 'मैंने इस रोग के अनेक ऑप्रेशन किए हैं। आशा है इस बार तो अवश्य सफल रहूंगा।'

□ □ □

'कुछ समोसे और खा लो बेटा'

एक स्त्री ने घर आए एक बच्चे से कहा।

'नहीं अब तो पेट भर चुका हैं।'

'तो कुछ जेब में रख लो रास्ते में खा लेना।'

'अंटी जेब तो मैंने पहले ही भर ली थी।'

□ □ □

पिता, 'डॉक्टर जल्दी आइए, मेरे बेटे ने ब्लेड निगल लिया है।'

डॉक्टर, 'आप उसे फौरन अस्पताल ले आइए। आपने अभी कुछ किया तो नही ?'

पिता, 'नही, बस मैंने इलैक्ट्रिक शेवर से शेविंग कर ली हैं।'

□ □ □

एक व्यक्ति अपनी धुन में आकाश की और देखता हुआ सड़क के बीचों-बीच चला जा रहा था कि एक कार के नीचे आते-आते बचा। कार वाले ने कार रोक ली और कार से उतर कर उसके पास आकर कहां, 'जहां चल रहे हो वहां पर नहीं देखोगे तो वहां पहुंच जाओगे जहां देख रहे हो।'

करवा चौथ : सुहागिनों का सबसे बड़ा त्यौहार

(करवा चौथ (13 अक्तूबर) पर विशेष)

लेखक- विद्यावाचस्पति डॉक्टर अरविन्द प्रेमचंद जैन

करवा चौथ पर्व के संबंध में वैसे तो कई कथाएं प्रचलित हैं लेकिन सभी कथाओं का सार पति की दीर्घायु और सौभाग्यवृद्धि से ही जुड़ा है। विभिन्न पौराणिक कथाओं के अनुसार 'करवा चौथ' व्रत का उद्गम उस समय हुआ था, जब देवों व दानवों के बीच भयंकर युद्ध चल रहा था और युद्ध में देवता परास्त होते नजर आ रहे थे। तब देवताओं ने ब्रह्माजी से इसका कोई उपाय करने की प्रार्थना की और ब्रह्मा जी ने उन्हें सलाह दी कि अगर सभी देवों की पत्नियां सच्चे एवं पवित्र हृदय से अपने पति की जीत के लिए प्रार्थना एवं उपवास करें तो देवता दैत्यों को परास्त करने में अवश्य सफल होंगे।

करवा चौथ पर्व का हमारे देश में विशेष महत्व है क्योंकि विवाहित महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र के लिए पूरे दिन व्रत रखती हैं और रात को चांद देखकर पति के हाथ से जल पीकर व्रत खोलती हैं। भारतीय समाज में वैसे तो महिलाएं विभिन्न अवसरों पर अनेक व्रत रखती हैं लेकिन पति को परमेश्वर मानने वाली नारी के लिए इन सभी व्रतों में सबसे अहम स्थान रखता है 'करवा चौथ' व्रत। पति की दीर्घायु, स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि, ऐश्वर्य तथा सौभाग्य के साथ-साथ जीवन के हर क्षेत्र में उसकी सफलता की कामना से सुहागिन महिलाओं द्वारा कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को रखा जाने वाला यह व्रत अन्य सभी व्रतों से कठिन माना जाता है, जो सुहागिनों का सबसे बड़ा व्रत एवं त्यौहार है। यह व्रत महिलाओं के लिए 'चूड़ियों का त्यौहार' नाम से भी प्रसिद्ध है। महिलाएं अन्न-जल ग्रहण किए बिना अपार श्रद्धा के साथ यह व्रत रखती हैं तथा रात्रि को चन्द्रमा के दर्शन करके अर्ध्य देने के बाद ही व्रत खोलती हैं। यही वजह है कि अखण्ड सुहाग का प्रतीक यह व्रत अन्य सभी व्रतों के मुकाबले काफी कठिन माना जाता है।

कहा जाता है कि इस व्रत के समान सौभाग्यदायक अन्य कोई व्रत नहीं है और सुहागिनें यह व्रत 12-16 वर्ष तक हर साल निरन्तर करती हैं, उसके बाद वे चाहें तो इसका उद्यापन कर सकती हैं अन्यथा आजीवन भी यह व्रत कर सकती हैं। आजकल तो कुछ पुरूष भी पूरे दिन का उपवास रखकर पत्नी के इस कठिन तप में उनके सहभागी बनते हैं। दिनभर उपवास करने के बाद शाम को सुहागिनें करवा की कथा सुनती व कहती हैं तथा चन्द्रोदय के बाद चन्द्रमा को अर्ध्य देकर अपने सुहाग की दीर्घायु की कामना कर प्रण करती हैं कि वे जीवन पर्यन्त अपने पति के प्रति तन, मन, वचन एवं कर्म से समर्पित रहेंगी। पूजा-पाठ के बाद सुहागिनें अपनी सास के चरण स्पर्श कर उनसे सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद प्राप्त करती हैं।

करवा चौथ पर्व के संबंध में वैसे तो कई कथाएं प्रचलित हैं लेकिन सभी कथाओं का सार पति की दीर्घायु और सौभाग्यवृद्धि से ही जुड़ा है। विभिन्न पौराणिक कथाओं के अनुसार 'करवा चौथ' व्रत का उद्गम उस समय हुआ था, जब देवों व दानवों के बीच भयंकर युद्ध चल रहा था और युद्ध में देवता परास्त होते नजर आ रहे थे। तब देवताओं ने ब्रह्माजी से इसका कोई उपाय करने की प्रार्थना की और ब्रह्मा जी ने उन्हें सलाह दी कि अगर सभी देवों की पत्नियां सच्चे एवं पवित्र हृदय से अपने पति की जीत के लिए प्रार्थना एवं उपवास करें तो देवता दैत्यों को परास्त करने में अवश्य सफल होंगे। ब्रह्मा जी की सलाह पर समस्त देव पत्नियों ने कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को यह व्रत किया और रात्रि के समय चन्द्रोदय से पहले ही देवता दैत्यों से युद्ध जीत गए। तब चन्द्रोदय के पश्चात् दिनभर की भूखी-प्यासी देव पत्नियों ने अपना-अपना व्रत खोला। ऐसी मान्यता है कि तभी से इसी दिन करवा चौथ का व्रत किए जाने की परम्परा शुरू हुई।

करवा चौथ के व्रत के संबंध में अनेक प्रचलित कथाओं में से एक महाभारत काल से जुड़ी है। कहा जाता है कि एक बार धनुर्धारी अर्जुन तप करने के उद्देश्य से नीलगिरी पर्वत पर गए तो द्रोपदी बहुत चिंतित हुई। उसने विचार किया कि यहां हर समय कोई न कोई संकट आता ही रहता है, इसलिए अर्जुन की अनुपस्थिति में इन संकटों से बचने के लिए क्या उपाय किया जाए? तब द्रोपदी ने भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण किया और श्रीकृष्ण को अपने मन की व्यथा बताई। द्रोपदी की बात सुनकर भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि पार्वती देवी ने भी एक बार भगवान शिव से बिल्कुल यही प्रश्न किया था और तब भगवान शिव ने उन्हें कहा था कि करवा चौथ का व्रत गृहस्थी में आने वाली तमाम छोटी-बड़ी बाधाओं को दूर करता है। द्रोपदी ने श्रीकृष्ण से करवा चौथ के व्रत के संबंध में विस्तार से बताने का आग्रह किया तो श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को इस व्रत के महत्व को दर्शाती कथा सुनानी आरंभ की।

भगवान श्रीकृष्ण ने बताया कि इन्द्रप्रस्थ नगरी में वेद नामक एक धर्मपरायण ब्राह्मण के सात पुत्र व एक पुत्री थी। विवाह के बाद जब पुत्री पहली करवा चौथ पर मायके आई तो उसने मायके में ही करवा चौथ का व्रत रखा लेकिन चन्द्रोदय से पूर्व ही उसे भूख सताने लगी तो अपनी लाड़ली बहन की यह वेदना भाईयों से देखी न गई। उन्होंने बहन से व्रत खोलने का आग्रह किया पर वह इसके लिए तैयार न हुई। तब भाईयों ने मिलकर एक योजना बनाई। उन्होंने एक पीपल के वृक्ष की ओट में प्रकाश करके बहन को कहा कि देखो चन्द्रमा निकल आया है। बहन भोली थी, इसलिए भाईयों की बात पर विश्वास करके उसने उस प्रकाश को ही चन्द्रमा मानकर उसे ही अर्ध्य देकर व्रत खोल लिया लेकिन जब अगले दिन वह ससुराल पहुंची तो पति को बहुत बीमार पाया। दिन ब दिन पति की बीमारी बढ़ती गई और सारी जमा पूंजी पति की बीमारी में ही लग गई तो उसने मंदिर में जाकर गणेश जी की स्तुति करनी शुरू की। उसकी प्रार्थना पर प्रसन्न होकर गणेश ने उसके समक्ष प्रकट होकर कहा कि तुमने करवा चौथ का व्रत पूरे विधि विधान से नहीं किया, इसीलिए तुम्हारे पति की यह दशा हुई है। यदि तुम यह व्रत पूरे विधि विधान एवं निष्ठा के साथ करो तो तुम्हारा पति पूरी तरह ठीक हो जाएगा। उसके बाद उसने करवा चौथ का व्रत पूरे विधि विधान के साथ किया और इसके प्रभाव से उसका पति ठीक हो गया।

यह कथा सुनाने के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने द्रोपदी से कहा कि यदि तुम भी इसी प्रकार विधिपूर्वक सच्चे मन से करवा चौथ का व्रत करो तो तुम्हारे समस्त संकट अपने आप दूर हो जाएंगे। तब द्रोपदी ने करवा चौथ का व्रत रखा और उसके व्रत के प्रभाव से महाभारत के युद्ध में पांडवों की विजय हुई। अतः करवा चौथ के व्रत के उद्गम को इस प्रसंग से भी जोड़कर देखा जाता है और कहा जाता है कि इसी के बाद सुहागिनें 'करवा चौथ' व्रत रखने लगी। इस पर्व से संबंधित और भी कई कथाएं प्रचलित हैं, जिनमें सत्यवान और सावित्री की कहानी तथा करवा नामक एक धोबिन की कहानी भी बहुत प्रसिद्ध हैं।

इस पर्व की शुरूआत एक बहुत अच्छे विचार पर आधारित थी मगर समय के साथ इस पर्व का मूल विचार और परिदृश्य बदल रहा है। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस व्रत का फल तभी है, जब यह व्रत करने वाली महिला भूलवश भी झूठ, कपट, निंदा, अभिमान न करे। इस व्रत से जहां पति के प्रति पत्नी की निष्ठा एवं समर्पण भाव परिलक्षित होता है, वहीं यह पर्व दाम्पत्य जीवन में आपसी विश्वास और भरोसे को मजबूत करने तथा संबंधों में मधुरता घोलने का त्यौहार है। सही मायने में करवा चौथ दाम्पत्य जीवन में एक-दूसरे के प्रति समर्पण का अनूठा पर्व है।

(लेखक 32 वर्षों से पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं)

सजना है मुझे सजना के लिए

करवा चौथ (13 अक्तूबर) पर विशेष

(लेखक-श्वेता गोयल)

भारत में सुहागिन महिलाओं का सबसे बड़ा त्यौहार है 'करवा चौथ', जो दाम्पत्य जीवन में एक-दूसरे के प्रति समर्पण का अनूठा पर्व माना जाता है। इस विशेष त्यौहार का सुहागिन महिलाएं सालभर इंतजार करती हैं। हालांकि यह व्रत अन्य सभी व्रतों से कठिन माना जाता है, फिर भी देशभर में हर जाति, हर सम्प्रदाय की महिलाएं अपने पति की दीर्घायु तथा अखंड सौभाग्य की कामना करते हुए खुशी-खुशी यह व्रत रखती हैं और रात को चांद देखकर पति के हाथ से जल पीकर व्रत खोलती हैं। हालांकि समय के साथ इस व्रत को मनाए जाने की परम्पराओं में थोड़ा बदलाव आया है और अब बहुत सी अविवाहित युवतियां भी अच्छे वर की प्राप्ति की कामना से यह व्रत करने लगी हैं। करवा चौथ के शुभ दिन महिलाओं के चेहरे पर एक अलग ही तेज नजर आता है। इस पर्व का नाम सुनते ही मन में सोलह श्रृंगार किए खूबसूरत नारी की छवि उभर आती है। दरअसल मेंहदी लगे हाथों में रंग-बिरंगी खनकती चूड़ियां, माथे पर आकर्षक बिंदिया, मांग में सिंदूर, सुंदर परिधान और तरह-तरह के आकर्षक गहने पहने अर्थात् सोलह श्रृंगार किए सुहागिन महिलाएं इस दिन नववधू से कम नहीं लगती। दुल्हन के लाल जोड़े की भांति इस दिन भी लाल रंग के परिधान पहनने का चलन बहुत ज्यादा है। वास्तव में करवा चौथ सुहागिन महिलाओं के सजने-संवरने का एक विशेष अवसर है। तो फिर क्यों न आप भी इस विशेष अवसर पर नख से शिख तक ऐसी संवर जाएं कि आपको देखते ही आपके पति की नजरें भी आप पर से हटें ही नहीं। तो जरा आजमाकर देखें खास इसी दिन के लिए इन उपायों कोः-

- मेकअप शुरू करने से पहले ध्यान रखें कि आपका मेकअप आपकी त्वचा की रंगत (टोन) के हिसाब से ही हो। तभी मेकअप से आपके नयनद्वनक्श को अच्छा उभार मिलेगा।
- मेकअप की शुरूआत से पहले 3-4 मिनट तक अपनी त्वचा की मसाज हनी क्लींजर से करें और फिर मोइस्ट कॉटन से अच्छी तरह साफ कर लें।
- अगर आपकी त्वचा की रंगत सांवली है तो आप पर यैलो या आयवरी टोन वाला मेकअप ही फबेगा क्योंकि इन शेड्स से सांवली रंगत को प्राकृतिक रूप से उभार मिलता है।
- त्वचा का रंग गोरा है तो आप पर वेज और पिंक बेस्ड मेकअप अच्छा लगेगा लेकिन ध्यान रखें कि मेकअप लाइट पिंक बेस्ड ही हो।
- अगर त्वचा का रंग गेहुंआ है तो त्वचा को डार्क मेकअप अच्छा लुक देगा।
- फाउंडेशन का चुनाव भी त्वचा की रंगत के हिसाब से ही करें। मैट फाउंडेशन से नेचुरल लुक आता है।
- अगर आप चाहती हैं कि आपका मेकअप अधिक समय तक टिका रहे तो इसके लिए ऑयल फ्री फाउंडेशन का ही इस्तेमाल करें।
- फाउंडेशन लगाने के बाद ठीक तरह से ब्लेंडिंग भी जरूरी है। ब्लशर में लेटेस्ट ट्रेंड में चाहें तो ग्लिटर, गोल्ड और स्लिट डस्ट का इस्तेमाल कर सकती हैं।
- ब्लशर की सहायता से आप अपने फेस को सही आकार दे सकती हैं। अगर आप गोरी हैं तो सॉफ्ट पिंक या वैज कलर का ब्लशर ही इस्तेमाल करें। यदि रंग गेहुंआ है तो वार्म पिंक और ब्राउन ब्लशर उपयुक्त रहेगा। सांवली रंगत वालों पर ब्रॉन्ज, कोका, सिनेमन, नटमग इत्यादि गहरे रंग का ब्लशर खूब फबेगा।
- आंखों और होठों के लिए अच्छी कोल्ड क्रीम या ऑयल बेस्ड क्लींजर का ही उपयोग करें तो बेहतर है।
- आंखों को सही आकार देने के लिए आई ब्रो पेन्सिल का उपयोग करें। आई ब्रो अगर बहुत हल्की और पतली हों तो पतले ब्रश से ब्राउन या ब्लैक आई शैडो का इस्तेमाल करें। इससे आई ब्रो को अच्छा आकार मिल जाएगा लेकिन आई शैडो लगाने से पहले लाइट शेड का इस्तेमाल करें, जिससे ब्लेंडिंग करना आसान रहता है। अपने परिधान और आभूषणों से मिलते हुए आई शैडो का ही उपयोग करें।
- अपनी आंखों को हाईलाइट करने के लिए गोल्ड, शिमर या ग्लिटर लगाएं।
- आई लाइनर के रूप में किसी भी लिक्विड कलर के साथ ब्लू, ब्राउन, डार्क ग्रीन या ब्लैक कलर लगा सकती हैं। कलर्ड कॉन्टेक्ट लैंसेज के साथ ग्रीन, ग्रे और वेज कलर के लाइनर का इस्तेमाल आपकी आंखों को नई चमक दे सकता है।
- आंखों के लिए वाटरप्रूफ मस्कारा अच्छा रहेगा। पहले आंखों के लैशेज पर ब्रश की सहायता से ऊपर से नीचे और फिर नीचे से ऊपर मस्कारा लगाएं। दो बार कोटिंग करें। सूखने के बाद कर्लर से लैशेज को कर्ल करें।
- लिपस्टिक लगाते समय होठों पर सबसे पहले फिंगर टिप्स की सहायता से फाउंडेशन लगाकर ब्लेंड करें। लिप पेंसिल से होठों को सही आकार दें और लिप ब्रश की सहायता से अपनी ड्रैस से मैच करता हुआ लिप कलर लगाएं। लिप कलर के बाद ग्लिटर का इस्तेमाल भी कर सकती हैं।

(लेखिका शिक्षिका हैं)

(चिंतन-मनन)

सिद्धांत गौण है, सत्ता प्रमुख

पिछले दिनों में राष्ट्रीय रंगमंच पर जिस प्रकार का राजनीतिक चरित्र उभरकर आ रहा है, वह एक गंभीर चिंता का विषय है। ऐसा लगता है, राजनीति का अर्थ देश में सुव्यवस्था बनाए रखना नहीं, अपनी सत्ता और कुर्सी बनाए रखना है। राजनीतिज्ञ का अर्थ उस नीति-निपुण व्यक्तित्व से नहीं है, जो हर कीमत पर राष्ट्र की प्रगति, विकास-विस्तार और समृद्धि को सर्वोपरी महत्व दे; किंतु उस विदूषक-विशारद व्यक्तित्व से है, जो राष्ट्र के विकास और समृद्धि को अवनति के गर्त में फेंककर भी अपनी कुर्सी को सर्वोपरि महत्व देता हो। राजनेता का अर्थ राष्ट्र को गति की दिशा में अग्रसर करने वाला नहीं, अपने दल को सत्ता की ओर अग्रसर करने वाला रह गया है। यही कारण है कि आज राष्ट्र गौण है, दल प्रमुख है। सिद्धांत गौण है, सत्ता प्रमुख है। चरित्र गौण है, कुर्सी प्रमुख है। एक राजनेता में राष्ट्रीय चरित्र, न्याय-सिद्धांत और नेतृत्व क्षमता के गुणों की आवश्यकता नहीं, किंतु आज कुशल राजनेता वही है, जो अपने दल के लिए राष्ट्र के साथ भी विश्वासघात कर सकता हो, अपनी कुर्सी के लिए अपने दल के साथ भी विश्वासघात करने का जिसमें साहस या दुस्साहस हो। बहुत बार मन में प्रश्न उभरता है, क्या राजनीति का अपना कोई चरित्र नहीं होता अथवा सत्ता प्राप्ति के लिए राष्ट्र, समाज, दल और व्यक्ति की विश्वासपूर्ण भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना ही राजनीति का चरित्र होता है? जनता की कोमल भावनाओं का शोषण करके सत्तासीन होने के बाद क्या राजनेता का व्यक्तित्व जनता और राष्ट्र से भी बड़ा हो जाता है? यदि ऐसा नहीं है तो आज की राजनीति क्यों अपने प्रिय पुत्रों, संबंधियों और चमचों-चाटुकारों के चक्रव्यूह में फंसकर रह गई है? राष्ट्र को स्थिर नेतृत्व प्रदान करने के नाम पर क्यों सिद्धांतहीन समझौते और स्तरहीन कलाबाजियां दिखाई जा रही हैं? संप्रदायवाद, जातिवाद, भाषावाद और प्रांतवाद को भड़का करके क्यों सत्ता की गोटियां बिठाई जा रही हैं? आज की राजनीति को देखकर मन ग्लानि और वितृष्णा से भर जाता है। आखिर यह सबकुछ कब तक चलता रहेगा?

क्यों मनाते हैं करवा चौथ का पर्व, क्या है इसका महत्व?

13 अक्टूबर 2022 गुरुवार को करवा चौथ का व्रत रखा जाएगा। उत्तर भारत की महिलाओं में इस त्योहार को लेकर खासा उत्साह रहता है। यह पर्व कार्तिक मास के कृ?ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। इस दिन महिलाएं पूरे दिन निर्जला व्रत रखती हैं और रात में चंद्र दर्शन या चांद देखने के बाद ही व्रत का पारण यानी उपवास खोलती हैं। आओ जानते हैं कि क्यों मनाते हैं यह पर्व और क्या है इसका महत्व।

क्यों मनाते हैं करवा चौथ का पर्व

मान्यता के अनुसार कुछ जगहों पर कुंआरी लड़कियां मनोवांछित पति की प्राप्ति या मंगेतर की लंबी आयु के लिए व्रत रखती हैं जबकि विवाहित यानी सुहागन स्त्रियां अपने पति की लंबी उम्र, अच्छे स्वास्थ्य और जीवन में तरक्की की कामना हेतु करवा चौथ का व्रत रखती हैं।

क्या महत्व है करवा चौथ त्यौहार का

करवा चौथ विशेष तौर पर नारियों का त्योहार है। हिन्दू धर्म में नारी शक्ति को शक्ति का रूप माना जाता है। कहते हैं कि नारी को यह वरदान है कि वो जिस भी कार्य या मनोकामना के लिए तप या व्रत करेगी तो उसका फल उसे अवश्य मिलेगा। खासकर अपने पति के लिए यदि वे कुछ भी व्रत करती है तो वह सफल होगा।

पौराणिक कथाओं में एक जोर जहां माता पार्वती अपने पति शिवजी को पाने के लिए तप और व्रत करती है और उसमें सफल हो जाती है तो दूसरी ओर सावित्री अपने मृत पति को अपने तप के बल पर यमराज से भी छुड़ाकर ले आती है। यानी स्त्री में इतनी शक्ति होती है कि वो यदि चाहे, तो कुछ भी हासिल कर सकती है। इसीलिए महिलाएं करवा चौथ के व्रत के रूप में अपने पति की लंबी उम्र के लिए एक तरह से तप करती हैं।

कैसे करें करवा चौथ की पूजा, क्या है शुभ मुहूर्त

कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को महिलाएं अपने पति की लंबी आयु के लिए करवा चौथ का व्रत रखती हैं। इस बार यह त्योहार 13 अक्टूबर 2022 गुरुवार को रखा जाएगा। करवा चौथ के व्रत का पारण चंद्रोदय के बाद ही किया जाता है। आओ जानते हैं कि इस दिन के क्या है शुभ मुहूर्त, कब होगा चंद्र उदय और कैसे करें करवा चौथ की पूजा।

करवा चौथ मुहूर्त और पूजा विधि

1. करवा चौथ के शुभ मुहूर्त

करवा चौथ पूजा मुहूर्त- 05 बजकर 54 मिनट से लेकर 07 बजकर 3 मिनट तक।

करवा चौथ चंद्रोदय समय- दिल्ली टाइम के अनुसार चंद्रोदय 08 बजकर 10 मिनट पर।

अभिजित मुहूर्त: दोपहर 12:01 से 12:48 तक।

2. करवा चौथ व्रत की पूजा विधि

1. इस दिन सूर्योदय से पूर्व उठकर घर की साफ-सफाई करें और फिर स्नान करके पूजाघर की सफाई करें।
2. अब सास द्वारा दिया हुआ भोजन करें और भगवान की पूजा करके निर्जला व्रत का संकल्प लें।
3. दिनभर व्रत का पालन करें और कथा पढ़ें या सुनें।
4. फिर शाम को मिट्टी की वेदी पर सभी देवताओं की स्थापना करें और 10 से 13 करवे रखें।
5. अब पूजन-सामग्री में धूप, दीप, चन्दन, रोली, सिन्दूर, फूल, माला आदि थाली में रखें।
6. चन्द्रमा निकलने से लगभग एक घंटे पहले पूजा प्रारंभ करें। पूजा के दौरान करवा चौथ कथा सुनें या सुनाएं।
7. जब चंद्रमा निकले तब छलनी के द्वारा उसका दर्शन करें।
8. चंद्र दर्शन के बाद चंद्रमा को जल से अर्घ्य दें और चंद्रमा की पूजा करें।
9. चन्द्र-दर्शन और पूजन के बाद बहू अपनी सास को थाली में सजाकर मिष्ठान, फल, मेवे, रुपए आदि देकर उनका आशीर्वाद लें।
10. अब व्रत का पारण करें अर्थात पहले थोड़ा जल का सेवन करें और फिर भोजन करें।

पति-पत्नी के पवित्र रिश्तों का पर्व है करवा चौथ

भारत एक धर्म प्रधान व आस्थावान देश हैं। यहां साल के सभी दिनो का महत्व होता है तथा साल का हर दिन पवित्र माना जाता है। भारत में करवा चौथ हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह भारत के राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और पंजाब का पर्व है। यह कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। यह व्रत सुबह सूर्योदय से पहले करीब 4 बजे के बाद शुरू होकर रात में चन्द्रमा दर्शन के बाद सम्पूर्ण होता है। ग्रामीण स्त्रियों से लेकर आधुनिक महिलायें करवा चौथ का व्रत बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ रखती हैं।

करवा चौथ का व्रत हर साल महिलाओं द्वारा अपने पतियों के लिए किया जाता हैं और यह न केवल एक त्यौहार है बल्कि यह पति-पत्नी के पवित्र रिश्तों का पर्व है। कहने को तो करवा चौथ का त्यौहार एक व्रत है लेकिन यह नारी शक्ति और उसकी क्षमताओं का सवश्रेष्ठ उदहारण हैं। क्योंकि नारी अपने दृढ़ संकल्प से यमराज से भी अपने पति के प्राण ले आती हैं तो फ़िर वह क्या नहीं कर सकती हैं। आज के नये जमाने में भी हमारे देश में महिलायें हर वर्ष करवा चौथ का व्रत पहले की तरह पूरी निष्ठा व भावना से मनाती है। आधुनिक होते समाज में भी महिलायें अपने पति की दीर्घायु को लेकर सचेत रहती है। इसीलिये वो पति की लम्बी उम्र की कामना के साथ करवा चौथ का व्रत रखना नहीं भूलती है। पत्नी का अपने पति से कितने भी गिले-शिकवे रहें हो मगर करवा चौथ आते-आते सब भूलकर वो एकाग्र चित्त से अपने सुहाग की लम्बी उम्र की कामना से व्रत जरूर करती है।

किसी भी आयु, जाति, वर्ण, संप्रदाय की सौभाग्यवती स्त्रियों को ही यह व्रत करने का अधिकार है। जो सुहागिन स्त्रियां अपने पति की आयु, स्वास्थ्य व सौभाग्य की कामना करती हैं वे व्रत रखती हैं। बालू अथवा सफेद मिट्टी की वेदी पर शिव-पार्वती, स्वामी कार्तिकेय, गणेश एवं चंद्रमा की स्थापना करें। मूर्ति के अभाव में सुपारी पर नाल बांधकर ईश्वर का स्मरण कर स्थापित करें। पश्चात यथाशक्ति देवों का पूजन करें। करवों में लड्डू का नैवेद्य रखकर नैवेद्य अर्पित करें। एक लोटा, एक वस्त्र व एक विशेष करवा दक्षिणा के रूप में अर्पित कर पूजन समापन करें। दिन में करवा चौथ व्रत की कथा पढ़ें अथवा सुनें।

यह व्रत लगातार 12 अथवा 16 वर्ष तक हर वर्ष किया जाता है। अवधि पूरी होने के पश्चात इस व्रत का उद्यापन किया जाता है। जो सुहागिन स्त्रियां आजीवन रखना चाहें वे जीवनभर इस व्रत को कर सकती हैं। इस व्रत के समान सौभाग्यदायक व्रत अन्य कोई दूसरा नहीं है। इसीलिये सुहागिन स्त्रियां अपने सुहाग की रक्षार्थ इस व्रत का सतत पालन करती है।

शास्त्रों के अनुसार पति की दीर्घायु एवं अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए इस दिन भालचन्द्र गणेश जी की पूजा-अर्चना की जाती है। करवा चौथ में दिन भर उपवास रखकर रात में चन्द्रमा को अर्घ्य देने के उपरान्त ही भोजन करने का विधान है। वर्तमान समय में करवा चौथ व्रतोत्सव ज्यादातर महिलाएं अपने परिवार में प्रचलित प्रथा के अनुसार ही मनाती हैं। लेकिन अधिकतर स्त्रियां निराहार रहकर चन्द्रोदय की प्रतीक्षा करती हैं।

सायंकाल चंद्रमा के उदित हो जाने पर चंद्रमा का पूजन कर अर्ध्य प्रदान करें। इसके पश्चात ब्राह्मण, सुहागिन स्त्रियों व पति के माता-पिता को भोजन कराएं। भोजन के पश्चात ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा दें। अपनी सासूजी को वस्त्र व विशेष करवा भेंट कर आशीर्वाद लें। यदि वे न हों तो उनके तुल्य किसी अन्य स्त्री को भेंट करें। इसके पश्चात स्वयं व परिवार के अन्य सदस्य भोजन करें।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी अर्थात उस चतुर्थी की रात्रि को जिसमें चंद्रमा दिखाई देने वाला है। उस दिन प्रात: स्नान करके अपने पति की आयु, आरोग्य, सौभाग्य का संकल्प लेकर दिनभर निराहार रहें। उस दिन भगवान शिव-पार्वती, स्वामी कार्तिकेय, गणेश एवं चंद्रमा का पूजन करें। शुद्ध घी में आटे को सेंककर उसमें शक्कर अथवा खांड मिलाकर नैवेद्य हेतु लड्डू बनाएं। काली मिट्टी में शक्कर की चासनी मिलाकर उस मिट्टी से तैयार किए गए मिट्टी के अथवा तांबे के बने हुए अपनी सामर्थ्य अनुसार 10 अथवा 13 करवे रखें।

करवा चौथ के बारे में व्रत करने वाली महिलाएं कहानी सुनती है। एक बार पांडु पुत्र अर्जुन तपस्या करने नीलगिरी नामक पर्वत पर गए। इधर द्रोपदी बहुत परेशान थीं। उनकी कोई खबर न मिलने पर उन्होंने कृष्ण भगवान का ध्यान किया और अपनी चिंता व्यक्त की। कृष्ण भगवान ने कहा बहना इसी तरह का प्रश्न एक बार माता पार्वती ने शंकरजी से किया था। पूजन कर चंद्रमा को अर्ध्य देकर फिर भोजन ग्रहण किया जाता है। सोने, चाँदी या मिट्टी के करवे का आपस में आदान-प्रदान किया जाता है। जो आपसी प्रेम-भाव को बढ़ाता है। पूजन करने के बाद महिलाएँ अपने सास-ससुर एवं बड़ों को प्रणाम कर उनका आशीर्वाद लेती हैं। तब शंकरजी ने माता पार्वती को करवा चौथ का व्रत बतलाया।

करवा चौथ माता की पौराणिक कथा

इस व्रत को करने से स्त्रियां अपने सुहाग की रक्षा हर आने वाले संकट से वैसे ही कर सकती हैं जैसे एक ब्राह्मण ने की थी। प्राचीनकाल में एक ब्राह्मण था। उसके चार लडके एवं एक गुणवती लडकी थी। एक बार लडकी मायके में थी। तब करवा चौथ का व्रत पड़ा। उसने व्रत को विधिपूर्वक किया। पूरे दिन निर्जला रही। कुछ खाया-पीया नहीं, पर उसके चारों भाई परेशान थे कि बहन को प्यास लगी होगी, भूख लगी होगी, पर बहन चंद्रोदय के बाद ही जल ग्रहण करेगी। भाइयों से न रहा गया उन्होंने शाम होते ही बहन को बनावटी चंद्रोदय दिखा दिया। एक भाई पीपल की पेड़ पर छलनी लेकर चढ़ गया और दीपक जलाकर छलनी से रोशनी उत्पन्न कर दी। तभी दूसरे भाई ने नीचे से बहन को आवाज दी देखो बहन, चंद्रमा निकल आया है। पूजन कर भोजन ग्रहण करो।

बहन ने भोजन ग्रहण किया। भोजन ग्रहण करते ही उसके पति की मृत्यु हो गई। अब वह दु:खी हो विलाप करने लगी। तभी वहां से रानी इंद्राणी निकल रही थीं। उनसे उसका दु:ख न देखा गया। ब्राह्मण कन्या ने उनके पैर पकड़ लिए और अपने दु:ख का कारण पूछा। तब इंद्राणी ने बताया कि तूने बिना चंद्र दर्शन किए करवा चौथ का व्रत तोड़ दिया इसलिए यह कष्ट मिला। अब तू वर्ष भर की चौथ का व्रत नियमपूर्वक करना तो तेरा पति जीवित हो जाएगा। उसने इंद्राणी के कहे अनुसार चौथ व्रत किया तो पुन: सौभाग्यवती हो गई। इसलिए प्रत्येक स्त्री को अपने पति की दीर्घायु के लिए यह व्रत करना चाहिए। द्रोपदी ने यह व्रत किया और अर्जुन सकुशल मनोवांछित फल प्राप्त कर वापस लौट आए। तभी से हिन्दू महिलाएं अपने अखंड सुहाग के लिए करवा चौथ व्रत करती हैं।

कहते हैं इस प्रकार यदि कोई मनुष्य छल-कपट, अहंकार, लोभ, लालच को त्याग कर श्रद्धा और भक्तिभाव पूर्वक चतुर्थी का व्रत को पूर्ण करता है। तो वह जीवन में सभी प्रकार के दुखों और क्लेशों से मुक्त होता है और सुखमय जीवन व्यतीत करता है। भारत देश में चौथ माता का सबसे अधिक ख्याति प्राप्त मंदिर राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले के चौथ का बरवाड़ा गांव में स्थित है। चौथ माता के नाम पर इस गांव का नाम बरवाड़ा से चौथ का बरवाड़ा पड़ गया। यहां के चौथ माता मंदिर की स्थापना महाराजा भीमसिंह चौहान ने करवाया था।

करवा चौथ का व्रत तोड़ा नहीं जाता है, खोला जाता है, पूजा के साथ शब्दों का भी रखें ध्यान

हर वर्ष कार्तिक कृष्ण चतुर्थी के दिन करवाचौथ का शुभ पर्व मनाया जाता है। सुहागिन महिलाएं करवा चौथ व्रत रखती हैं। इस साल करवा चौथ 2022 व्रत 13 अक्टूबर को रखा जा रहा है। यह सौभाग्यवती स्त्रियों का सुन्दर सुहाग पर्व है। इस व्रत में सास अपनी बहू को सरगी देती है। इस सरगी को लेकर बहुएं अपने व्रत की शुरुआत करती हैं। सूर्योदय से पूर्व सुहागन सरगी का सेवन करती है इसके बाद रात में चंद्र दिखने के बाद जल चढ़ा कर व्रत खोलती है।

मान्यता है कि व्रत के लिए 'तोड़ना' शब्द का प्रयोग भी नहीं करना चाहिए, व्रत खोला जाता है या पूरा किया जाता है, तोड़ा नहीं जाता है। सुहागन स्त्रियां इस दिन कठिन निर्जला व्रत रखकर, रात में चंद्रमा देखने के बाद अपना व्रत खोलती हैं। पति की दीर्घायु के लिए इस व्रत को विशेष फलदायी माना गया है। इस व्रत में सायंकाल के समय शुभ मुहूर्त में चांद निकलने से पहले पूरे शिव परिवार की पूजा की जाती है।

करवा चौथ और आपकी राशि: इस साल कौन सा ष्टश्चद्यशह् शुभ है आपके लिए

गुरुवार को करवा चौथ पर्व हैं। इस दिन सुहागनें सोलह श्रृंगार करती हैं। इस दिन आमतौर पर शादी का जोड़ा पहना जाता है, लेकिन अगर आपके लिए वह संभव नहीं हो तो गहरे लाल रंग के परिधान या साड़ी पहनना भी शुभ माना जाता है।

जानकारों का मानना है कि अगर करवा चौथ पर राशि के हिसाब से ड्रेस पहनें तो शुभ फल की प्राप्ति होती है।

आइए जानते हैं आपकी राशि का शुभ कलर कौन सा है...

1. मेष- गहरा लाल रंग
2. वृष- केसरिया पीला रंग
3. मिथुन- समुद्री हरा
4. कर्क- गुलाबी के सारे शेड्स
5. सिंह- लाल पीला मिश्रित
6. कन्या- हरी लहरिया में साड़ी
7. तुला- गोल्डन और लाल
8. वृश्चिक- परपल कलर की प्लेन साड़ी
9. धनु- नीला, जामुनी या आसमानी
10. मकर- कथई रंग
11. कुंभ- मैरून रंग
12. मीन- ऑरेंज आउटफिट या साड़ी।

शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद

मुंबई ।

मुम्बई शेयर बाजार में बुधवार को बढ़त दर्ज की गयी। इसके साथ साथ ही बाजार में पिछले दिनों से आ रही गिरावट रुक गयी। बाजार में आई इस तेजी के पीछे बैंकिंग, ऊर्जा और सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों के शेयर में अच्छी खरीदारी के अलावा यूरोपीय बाजारों से मिले सकारात्मक संकेत भी है। इस प्रकार दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 478.59 अंक करीब 0.84 फीसदी ऊपर आकर 57,625.91 अंक पर बंद हुआ। वहीं कारोबार के दौरान, एक समय यह 540.32 अंक तक उछल गया था। दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 140.05 अंक तकरीबन 0.82 फीसदी बढ़कर 17,100 अंक के ऊपर पहुंच गया और 17,123.60 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के तीस शेयरों में से पावर ग्रिड, एक्सिस बैंक, एनटीपीसी, इंडसइंड बैंक, लार्सन एंड टुब्रो और अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयर लाभ के साथ ही उछले हैं। वहीं दूसरी ओर एशियन पेंट्स, डॉ रेड्डीज, भारती एयरटेल, टाइटन और आईसीआईसीआई बैंक के शेयर गिरे है।

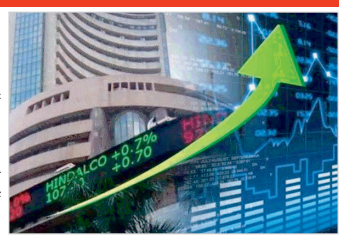

वहीं एशियाई बाजारों की बात करें तो दक्षिण कोरिया का कॉस्पी और चीन का शंघाई कंपोजिट बढ़ा है जबकि जापान का निक्की और हांगकांग का हैंगसेंग नुकसान के साथ ही नीचे आया। इसके अलावा यूरोप के प्रमुख बाजारों में शुरुआती कारोबार में मजबूती छायी रही। अमेरिकी शेयर बाजार गत दिवस मिले-जुले रुख के साथ बंद हुए थे। इस बीच, अंतरराष्ट्रीय तेल मानक ब्रेंट क्रूड वायदा 0.39 फीसदी बढ़कर 94.64 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

डॉलर के मुकाबले रुपया गिरावट पर बंद

नई दिल्ली । अमेरिकी डॉलर की तुलना में बुधवार को रुपया नीचे आया है। रुपया 14 पैसे की गिरावट के साथ ही 82.35 प्रति डॉलर (अस्थायी) पर बंद हुआ। वहीं दूसरी ओर अमेरिकी डॉलर में मजबूती और विदेशी निवेशकों की लगातार पूंजी निकासी से रुपये की विनिमय दर गिरी है। इसके अलावा, निवेशकों की सतर्कता और जोखिम नहीं लेने की नीति से भी रुपया गिरा है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 82.32 पर खुला और कारोबार के दौरान यह 82.15 के उच्चस्तर तक जाने के बाद 82.37 के निचले स्तर तक फिसला। वहीं अंत में रुपया पिछले बंद भाव के मुकाबले 14 पैसे टूटकर 82.35 प्रति डॉलर पर बंद हुआ।

चालू वित्त वर्ष में 6-7 प्रतिशत की दर से बढ़ सकती है भारतीय अर्थव्यवस्था -पीएचडीसीसीआई

नई दिल्ली । पीएचडीसीसीआई ने कहा कि मौजूदा रुझान को देखकर चालू वित्तवर्ष में भारतीय अर्थव्यवस्था छह से सात प्रतिशत की दर से बढ़ सकती है। पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (पीएचडीसीसीआई) के नए अध्यक्ष साकेत डालमिया ने कहा कि उत्पादन में तेजी आई है और देश में 'मजबूत' मांग है। उद्योग मंडल की तरफ से बयान अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के चालू वित्त वर्ष के लिए भारत के आर्थिक वृद्धि के अनुमान को घटाकर 6.8 प्रतिशत करने के एक दिन बाद आया है। भारतीय रिजर्व बैंक ने भी वित्त वर्ष 2022-23 के लिए अपने आर्थिक वृद्धि के अनुमान को 7.2 प्रतिशत से घटाकर सात प्रतिशत कर दिया है। भू-राजनीतिक संकट और वैश्विक स्तर पर आक्रामक मौद्रिक नीति रुख के कारण अर्थव्यवस्था में वृद्धि के अनुमान को कम किया गया है। डालमिया ने कहा कि उद्योग मंडल ने अमेरिका और यूरोप जैसे 75 देशों में अपने निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कृषि और रसायनों जैसे 75 संभावित उत्पादों की पहचान की है, ताकि वर्ष 2027 तक 750 अरब डॉलर के निर्यात लक्ष्य को हासिल करने में मदद मिल सके। उन्होंने कहा कि अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन, जापान, संयुक्त अरब अमीरात और चीन इन वस्तुओं के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख केंद्रित बाजार होगा।

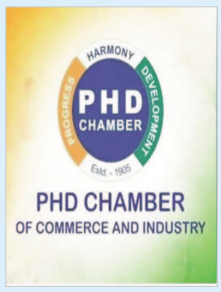

टूपल डॉट कॉम आयोजित कर रहा है इंडियाज़ रीजन्ल पीआर अवॉर्ड्स 2022 40 अंडर 40 का दूसरा संस्करण

इंदौर। भारत के सबसे तेजी से बढ़ते सोशल ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, टूरूपल डॉट कॉम (Troopel.com) द्वारा इंडियाज़ रीजन्ल पीआर अवॉर्ड्स 2022 40 अंडर 40 के माध्यम से देश के सबसे होनहार रीजन्ल पीआर प्रोफेशनल्स की पहचान कर उन्हें सम्मानित किए जाने की घोषणा की गई है। इस संस्करण में श्रेष्ठ पीआर पर्सन के लिए एक विशेष पीआर अवॉर्ड को भी शामिल किया गया है। 19 नवम्बर, 2022 को भारत एकमात्र महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की जयंती के मौके पर, चैनल द्वारा विशेष इवेंट का आयोजन किया जाएगा। इसके लिए रजिस्ट्रेशन्स 30 सितंबर, 2022 से शुरू हो चुके हैं।

पवन त्रिपाठी, ऑर्गेनाइज़र, IRPRA कहते हैं, "IRPRA के पहले संस्करण को देश भर के लोगों ने खूब सराहा। इस स्नेह से प्रेरित होकर हम इसके दूसरे संस्करण की तरफ कदम बढ़ा रहे हैं और उम्मीद है कि एक बार पुन: सभी के विश्वास को बनाए रखेंगे।"

रोहित सिंह चंदेल, चैनल हेड, टूरूपल डॉट कॉम कहते हैं, "देश के पहले रीजनल पीआर अवॉर्ड्स के द्वितीय संस्करण को आयोजित करना हमारे लिए बेहद गर्व का विषय है। रीजनल पीआर, ब्रांड कम्युनिकेशन्स के क्षेत्र में हमेशा ही मददगार रहा है। IRPRA का उद्देश्य रीजन्ल पीआर प्रोफेशनल्स को विभिन्न श्रेणियों में सम्मानित करना है।"

IRPRA के ताज से 40 वर्ष से कम उम्र के 40 पीआर प्रोफेशनल्स को कुल 08 श्रेणियों के अंतर्गत नवाज़ा जाएगा। जिसमे पाँच जोन्स– ईस्ट, वेस्ट, नॉर्थ, साउथ और सेंट्रल में विभाजित किया गया है, जो इस प्रकार हैं:

1. अवॉर्ड फॉर एक्सीलेंस इन सीएसआर
2. अवॉर्ड फॉर द बेस्ट क्रिएटिव एंटरटेनमेंट कैंपेन
3. लीडिंग पीआर क्रिएटिव कैंपेन फॉर बिज़नेस
4. लीडिंग पीआर कैंपेन फॉर स्टार्टअप्स कैटेगरी
5. बेस्ट पीआर कैंपेन फॉर क्राइसिस कम्युनिकेशन्स
6. एक्सीलेंस इन लोकल ब्रांड पीआर कैंपेन
7. एक्सीलेंस इन रूरल एरिया पीआर कैंपेन
8. एक्सीलेंस इन पी.एस.यू./ गवर्नमेंट पीआर कैंपेन

IRPRA 2022 का आयोजन 19 नवंबर, 2022 को होने जा रहा है और इसके नॉमिनेशन्स के लिए रजिस्ट्रेशन्स 20 सितंबर, 2022 से शुरू हो चुके हैं। रजिस्ट्रेशन्स तथा नॉमिनेशन्स पूर्णतया नि:शुल्क है। आवेदन के लिए आवश्यक है कि आवेदक की उम्र 40 वर्ष से कम हो, और वह भारत के भौगोलिक क्षेत्र में पीआर से जुड़ा हो।

टूरूपल देश का सबसे तेजी से बढ़ता सोशल ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है, जो मुख्य रूप से राजनीतिक, बुनियादी ढाँचे और सामाजिक मुद्दों जैसे उज्जैन पवित्र नगरी, आत्म निर्भर युवा और करियर खोज आदि पर केंद्रित है। यह प्लेटफॉर्म किसी खबर विशेष के पीछे की सच्चाई को उजागर करने की दिशा में काम कर रहा है। 25 मिलियन लोगों तक पहुँच के साथ इसकी मौजूदगी करीब 40 शहरों में है।

विप्रो का शुद्ध लाभ दूसरी तिमाही में 9.6 प्रतिशत घटकर 2,649.1 करोड़ रुपये

मुंबई । सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) कंपनी विप्रो लिमिटेड का चालू वित्त वर्ष की दूसरी जुलाई-सितंबर तिमाही का शुद्ध लाभ 9.6 प्रतिशत घट गया। कंपनी ने बताया कि गैर-अमेरिकी बाजारों में आय घटने के चलते उसके शुद्ध लाभ में गिरावट हुई है। कंपनी ने कहा कि वित्त वर्ष 2022-23 की जुलाई-सितंबर तिमाही में उस 2,649.1 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह आंकड़ा 2,930.6 करोड़ रुपये था। समीक्षाधीन तिमाही में कंपनी की आय बढ़कर 22,539.7 करोड़ रुपये हो गई, जो एक साल पहले इसी अवधि में 19,667.4 करोड़ रुपये थी। विप्रो ने कहा कि दूसरी तिमाही में गैर-अमेरिकी बाजारों में उसकी आय में गिरावट हुई है। यूरोप में कमाई एक साल पहले के 918.6 करोड़ रुपये से घटकर समीक्षाधीन अवधि में 787.5 करोड़ रुपये रह गई। इसी तरह एशिया प्रशांत, पश्चिम एशिया, अफ्रीका (एपीएमईए) क्षेत्र में आय घटकर 219.4 करोड़ रुपये रह गई, जो पिछले साल की समान अवधि में 302.8 करोड़ रुपये थी।

दुनिया के मुकाबले तेजी से बढ़ती रहेगी भारतीय अर्थव्यवस्था!

नई दिल्ली । इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड (आईएमएफ) ने भले ही भारतीय अर्थव्यवस्था का अनुमान घटा दिया है, बावजूद इसे दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ती रहेगी। 2023 में दुनिया की आर्थिक विकास दर घटकर 2.7 फीसदी रह जाएगी। आईएमएफ ने यह अनुमान जारी किया है। भारत के लिहाज से शुरुआती खबर यह आई कि आईएमएफ ने भारत की जीडीपी ग्रोथ रेट के अनुमान को घटाकर 6.8 फीसदी कर दिया है। जुलाई में इसका अनुमान 7.4 फीसदी था। वहीं आईएमएफ का मानना है कि 2023 में भारत की अर्थव्यवस्था 6.1 फीसदी की दर से बढ़ेगी। इसके बाद एक निराशा का माहौल बनने लगा। हालांकि आईएमएफ के चार्ट को ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि बाकी दुनिया के मुकाबले भारतीय अर्थव्यवस्था का भविष्य उतने अंधकार में नहीं है। वृद्धि दर का अनुमान घटाए जाने के बावजूद भारत सबसे तेजी से आगे बढ़ने वाली इकॉनमी बना रहेगा। भारत की विकास दर अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, फ्रांस, रूस, चीन, ब्राजील जैसे देशों से कहीं ज्यादा रहेगी। तथ्य तो यही है कि आईएमएफ के अनुमान में इस साल भारत से बेहतर आर्थिक वृद्धि दर केवल सऊदी अरब की दिखाई गई है। अगले साल 2023 में भारतीय अर्थव्यवस्था सबसे तेजी से बढ़ेगी। आईएमएफ का अनुमान तो यही कहता है।

सितंबर में नौकरियों के विज्ञापनों में गिरावट देखी गई: रिपोर्ट

मुंबई । सितंबर में नौकरियों के लिए जारी होने वाले विज्ञापनों में सालाना आधार पर गिरावट दर्ज की गई लेकिन अगस्त की तुलना में इसमें आंशिक बढ़त देखी गई। नौकरियों की सूचना देने वाली एक वेबसाइट की तरफ से जारी एक रिपोर्ट में यह आकलन पेश किया गया। इसके मुताबिक, सितंबर 2021 की तुलना में बीते महीने में विभिन्न क्षेत्रों की नौकरियों के आवेदन में कमी आई है। खासकर मीडिया एवं मनोरंजन, घरेलू इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण और पोत परिवहन क्षेत्रों में नौकरियों के आवेदन कम आमंत्रित किए गए। रिपोर्ट कहती है कि त्योहारी मौसम जारी रहने और विभिन्न क्षेत्रों में डिजिटलीकरण के प्रयास जारी होने से आने वाले महीनों में भर्ती प्रक्रिया तेज होने की उम्मीद है। रिपोर्ट के मुताबिक सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियां नई भर्तियों को लेकर सतर्क बनी हुई हैं। इस क्षेत्र में कर्मचारियों के नौकरी छोड़ने की ऊंची दर होने से कंपनियां फिलहाल सजगता दिखा रही हैं। बीपीओ क्षेत्र में भी यही रुझान देखने को मिल रहा है। वहीं देश में 5जी सेवाओं की शुरुआत होने से दूरसंचार क्षेत्र की कंपनियों ने सितंबर में 13 प्रतिशत तक अधिक भर्तियां कीं। बैंकिंग, वित्तीय सेवा और बीमा क्षेत्र में बड़े शहरों में भर्तियां 20 प्रतिशत तक बढ़ गईं।

मोदी सरकार ने निर्यातक को दिसंबर अंत तक अमेरिका को चीनी निर्यात की अनुमति दी

नई दिल्ली ।

मोदी सरकार ने टैरिफ-रेट कोटा (टीआरक्यू) के तहत अमेरिका को चीनी निर्यात की अवधि बढ़ा दी। निर्यातक अब इस साल दिसंबर अंत तक अमेरिका को तय मात्रा में कच्ची चीनी का निर्यात कर सकते हैं। इससे पहले यह समयसीमा 30 सितंबर तक थी। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने कहा, टीआरक्यू के तहत अमेरिका को कच्ची चीनी के निर्यात की वैधता 30 सितंबर, 2022 से बढ़ाकर 31 दिसंबर, 2022 कर दी गई है।% टीआरक्यू निर्यात की मात्रा के लिए एक कोटा है, जिसके तहत अपेक्षाकृत कम शुल्क पर अमेरिका में पहुंच मिलती है। कोटा सीमा पूरी होने के बाद अतिरिक्त खेप पर अधिक शुल्क दर लागू होती है।

मोदी सरकार ने मई में अमेरिका को टीआरक्यू के तहत 2,051 टन कच्ची चीनी अतिरिक्त निर्यात की अनुमति दी थी। यह अनुमति 30 सितंबर, 2022 को समाप्त होने वाले वित्त वर्ष के लिए थी। इस मात्रा के साथ वित्त वर्ष 2021-22 में टीआरक्यू के तहत अमेरिकी को निर्यात की जाने वाली चीनी की कुल मात्रा 10,475 टन होगी। भारत, दुनिया में चीनी का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और सबसे बड़ा उपभोक्ता है। देश ने यूरोपीय संघ के साथ भी चीनी निर्यात के लिए एक तरजीही कोटा व्यवस्था की है।

2022 के पहले नौ माह में कुल निवेश बैंकिंग शुल्क 23 प्रतिशत गिरा

मुंबई । देश में इस साल के पहले नौ माह में कुल निवेश बैंकिंग शुल्क 23 प्रतिशत गिरकर 66.84 करोड़ डॉलर रह गया। यह वर्ष 2016 के बाद सबसे कम है। रिफिनिटिव के आंकड़ों के अनुसार, निवेश बैंकरों द्वारा एकत्र किए गए कुल शुल्क में से इक्विटी पूंजी बाजार शुल्क 46.4 प्रतिशत कम होकर 13.84 करोड़ डॉलर रह गया। रिफिनिटिव लंदन स्टॉक एक्सचेंज समूह की इकाई (एलएसईजी) है। यह वित्तीय बाजार आंकड़ों के उपलब्ध कराने वाली दुनिया की सबसे बड़ी इकाइयों में से है। हालांकि, ऋण पूंजी बाजार गतिविधियों से शुल्क बेहतर रहा। यह एक साल पहले की तुलना में 10.1 प्रतिशत घटकर 12.8 करोड़ डॉलर रहा। पूर्ण एमएंडए सलाहकार शुल्क सालाना 17.8 प्रतिशत गिरकर 25.21 करोड़ डॉलर रह गया, जबकि ऋण को एक साथ 'जोड़ने' का शुल्क साल के पहले नौ महीनों में 6.2 प्रतिशत घटकर 14.99 करोड़ डॉलर पर आ गया। इस अवधि में भारत ने 2008 के बाद पहली बार निजी इक्विटी (पीई) समर्थित अधिग्रहणों में चीन को पीछे छोड़ दिया। रिपोर्ट में कहा कि मूल्य के आधार पर, भारत ने एशिया प्रशांत क्षेत्र के पीई-समर्थित अधिग्रहणों में 28 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी पर कब्जा कर लिया। जबकि चीन ने 24 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल की। वर्ष 2008 के बाद यह पहली बार है जब एशिया प्रशांत क्षेत्र की पीई-समर्थित विलय एवं अधिग्रहण गतिविधियों में भारत ने चीन की तुलना में बड़ी बाजार हिस्सेदारी हासिल की है।

खेतान एंड कंपनी ने जिंदल ग्लोबल लॉ स्कूल को एक करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता दी

मुंबई ।

कानूनी फर्म खेतान एंड कंपनी ने परोपकार और कॉर्पोरेट जिम्मेदारी के एक असाधारण कार्य के रूप में ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी (जेजीयू) के जिंदल ग्लोबल लॉ स्कूल (जेजीएलएस) को एक करोड़ रुपए की धनराशि दी है। इस निधि से जेजीयू की शैक्षिक और अनुसंधान गतिविधियों को उसकी बौद्धिक और सामाजिक प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में मदद मिलेगी। इस राशि से कॉरपोरेट लॉ में चेयर, बिजनेस लॉ एंड रिसर्च के लिए एक विशेष केंद्र, उत्कृष्ट छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन के लिए दो पदक, एक वार्षिक व्याख्यान श्रृंखला और जिंदल ग्लोबल लॉ स्कूल और खेतान एंड कंपनी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित एक वार्ता प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। खेतान एंड कंपनी भारत में सबसे पुरानी (100 वर्ष से अधिक पुरानी) और सबसे बड़ी लिमिटेड लायबिलिटी पार्टनरशिप फर्मों में से एक है। खेतान एंड कंपनी की स्थापना 1911 में देबी प्रसाद खेतान और जेएन मजूमदार ने की थी और कोलकाता में पहला कार्यालय स्थापित किया गया था। उल्लेखनीय रूप से, खेतान ने भारत की संविधान सभा की मसौदा समिति के एक विशिष्ट सदस्य के रूप में भी कार्य किया। फर्म कई अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में आई और इसे कानूनी पेशे की उन्नति में किए गए उल्लेखनीय योगदान के लिए कई विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इस निधि का उद्देश्य जेजीयू की शैक्षिक और अनुसंधान गतिविधियों को उसकी बौद्धिक और सामाजिक प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में मदद करना है।

खेतान एंड कंपनी के परोपकार के कार्य पर टिप्पणी करते हुए, जिंदल ग्लोबल लॉ स्कूल के संस्थापक डीन और ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के संस्थापक कुलपति, प्रो डॉ सी राज कुमार ने कहा मुझे खुशी है कि खेतान एंड कंपनी ने अपने पेशेवर लक्ष्यों और जेजीयू के मिशन के बीच ऐसी अनुकूलता पाई है और हमें इस निधि के लिए चुना है।

जियो के 5जी इंटरनेट बीटा परीक्षण में 600 और एयरटेल की 516 एमबीपीएस औसत स्पीड: रिपोर्ट

रिपोर्ट में नए 5जी परिणाम बताते हैं कि 5जी स्पीड भारत के मौजूदा नेटवर्क से कहीं बेहतर है

नई दिल्ली ।

दूरसंचार कंपनी रिलायंस जियो ने 5जी इंटरनेट के बीटा परीक्षण में लगभग 600 एमबीपीएस और भारती एयरटेल ने लगभग 516 एमबीपीएस की औसत स्पीड दर्ज की है। ब्रॉडबैंड स्पीड का अनुसंधान करने वाली कंपनी झकी हाल ही में जारी की गई रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। कंपनी ने उन चार शहरों में औसत 5जी डाउनलोड स्पीड की तुलना की है, जहां जियो और एयरटेल दोनों ने अपने 5जी नेटवर्क खड़े किए हैं। रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली में एयरटेल की औसत 5जी डाउनलोड स्पीड 197.98 एमबीपीएस रही। जबकि जियो के नेटवर्क पर 5जी की औसत डाउनलोड स्पीड रिकॉर्ड 598.58 एमबीपीएस दर्ज की गई। यह एयरटेल की स्पीड से तीन गुना से भी अधिक है। इसका मतलब है कि दो घंटे की एक एचडी मूवी को एक मिनट 25 सेकंड में डाउनलोड किया जा सकती है, जो आमतौर पर लगभग छह जीबी के आकार की होती है। वहीं 4के गुणवत्ता वाली मूवी को 600 एमबीपीएस की शीर्ष गति से लगभग तीन मिनट में डाउनलोड किया जा सकता है। भारती एयरटेल ने दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बेंगलुरु, हैदराबाद, सिलीगुड़ी, नागपुर और वाराणसी के आठ शहरों में 5जी सेवाएं शुरू कर दी हैं। जियो ने दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और वाराणसी में बीटा परिक्षण शुरू कर दिया है। परीक्षण में एयरटेल के नेटवर्क ने वाराणसी में 516.57 एमबीपीएस की शीर्ष औसत स्पीड हासिल की है। वहीं मुंबई में एयरटेल ने 271.07 एमबीपीएस की औसत डाउनलोड स्पीड प्राप्त की है जबकि जियो की वित्तीय राजधानी में 515.38 एमबीपीएस की 5जी स्पीड रही। स्पीडटेस्ट के वैश्विक सूचकांक के अनुसार भारत अगस्त 2022 में 13.52 एमबीपीएस पर मोबाइल डाउनलोड स्पीड के मामले में दुनिया में 117वें स्थान पर था।

मेडेन फार्मा ने किया नियमों का उल्लंघन! कारण बताओ नोटिस जारी

- कंपनी पर आरोप, कच्चे माल की गुणवत्ता की जांच नहीं की गई थी

नई दिल्ली । विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की तरफ से चेतावनी जारी होने के बाद सवालों के घेरे में आई कफ सिरप बनाने वाली दवा कंपनी मेडेन फार्मास्युटिकल्स को लेकर एक और जानकारी मिली है। हरियाणा स्टेट ड्रग्स कंट्रोलर ने मेडेन फार्मास्युटिकल्स द्वारा मानदंडों का गंभीर उल्लंघन पाया है और सोनीपत में स्थित उसकी निर्माण फैक्ट्री में कई विसंगतियों पर सवाल उठाया है। अथॉरिटी ने कारण बताओ नोटिस जारी कर पूछा है कि क्यों न कंपनी का लाइसेंस रद्द कर दिया जाए। नोटिस में कहा गया है कि कंपनी में दवा के निर्माण में उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल की क्वालिटी टेस्टिंग नहीं की गई थी। एक अंग्रेजी वेबसाइट के मुताबिक पांच पन्नों के नोट में हरियाणा राज्य औषधि नियंत्रक अधिकारियों ने कंपनी में 12 उल्लंघनों को सूचीबद्ध किया है। राज्य औषधि नियंत्रक ने 7 अक्टूबर को मेडेन फार्मा को जारी कारण बताओ नोटिस में आरोप लगाया कि कंपनी ने विवादास्पद कफ सिरप के निर्माण में प्रयुक्त कच्चे माल की गुणवत्ता जांच नहीं की। यानी अब 14 अक्टूबर तक मेडेन फार्मा कंपनी को जवाब देना होगा।

स्टेट एफडीए ने कारण बताओ नोटिस जारी कर जवाब दाखिल करने के लिए सात दिन का समय देते हुए मेडेन फार्मा से पूछा है कि उनका मैनुफैक्चरिंग लाइसेंस रद्द क्यों नहीं किया जाए। हरियाणा एफडीए में स्टेट ड्रग्स कंट्रोल कम लाइसेंसिंस अथॉरिटी मनमोहन तनेजा द्वारा जारी कारण बताओ नोटिस के मुताबिक नोटिस जारी होने के सात दिनों के भीतर आपका जवाब आ जाना चाहिए। ऐसा नहीं करने पर ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट, 1940 और नियम 1945 के अनुसार आपके खिलाफ एकतरफा कार्रवाई की जा सकती है। दरअसल, गाम्बिया में 66 बच्चों की मौत के बाद फार्मा कंपनी मेडेन फार्मास्युटिकल्स सवालों के घेरे में आ गई है. बीते दिनों डब्ल्यूएचओ ने चेतावनी दी थी कि हरियाणा के सोनीपत स्थित मेडेन फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड द्वारा कथित तौर पर उत्पादित चार दूषित और घटिया कफ सिरप पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्र में मौतों का संभावित कारण हो सकते हैं। दावा किया गया कि इन मौतों से जुड़ी चार कफ सिरप हैं- प्रोमेथे जिन ओरल साल्यूशन बीपी, कोफेक्स ने लिन कफ सीरप, केकोफ बेबी कफ सीरप और मे ग्रिप एन कोल्ड सीरप।

माइक्रोसॉफ्ट ने अपने उत्पादों में 85 कमजोरियों का खुलासा किया

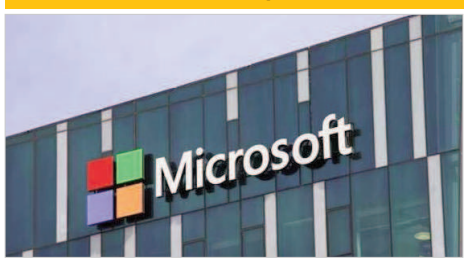

नई दिल्ली । साफ्टवेयर कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने अपने उत्पादों के सुरक्षा अपडेट में 85 कमजोरियों का खुलासा किया है। जारी किए गए 85 नए पैच में से 15 को गंभीर, 69 को महत्वपूर्ण और एक को मध्यम गंभीरता के तहत श्रेणीबद्ध किया है। सार्वजनिक रूप से प्रकट की गई भेद्यता माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस में है जो यूज़र टोकन और अन्य संभावित संवेदनशील जानकारी को जोखिम में डाल सकती है।

जीरो डे इनिशिएटिव के लिए डस्टिन चाइल्ड्स ने कहा जो अधिक दिलचस्प हो सकता है, वह इस माह की रिलीज में शामिल नहीं है। कम से कम दो सप्ताह के लिए दो एक्सचेंज बगों का सक्रिय रूप से शोषित किए जाने के बावजूद, एक्सचेंज सर्वर के लिए कोई अपडेट नहीं है।

माइक्रोसॉफ्ट ने इस माह की शुरुआत में खुलासा किया था कि वह कंपनी के एक्सचेंज सर्वर को प्रभावित करने वाली दो नई जीरो-डे की कमजोरियों की जांच कर रहा था, जिसका हैकर्स द्वारा सक्रिय रूप से शोषण किया जा रहा है। कंपनी ने कहा कि एक हैकर को दो कमजोरियों में से किसी एक का सफलतापूर्वक फायदा उठाने के लिए, चोरी किए गए क्रेडेंशियल जैसे कमजोर एक्सचेंज सर्वर तक प्रमाणित पहुंच की आवश्यकता होगी।

इन बगों को पूरी तरह से संबोधित करने के लिए कोई अपडेट उपलब्ध नहीं होने के कारण, सबसे अच्छा आईटी प्रशासक यह सुनिश्चित कर सकता है कि सितंबर 2021 सुरक्षा अद्यतन स्थापित हो। पिछले साल, माइक्रोसॉफ्ट ने अपने एक्सचेंज ईमेल और संचार सॉफ्टवेयर के लिए एक आपातकालीन सुरक्षा अपडेट जारी किया था, क्योंकि पूरे अमेरिका में कम से कम 30,000 संगठन हैकर्स द्वारा प्रभावित हुए थे जिन्होंने अपने सिस्टम से ईमेल संचार चुरा लिया था।

महिला एशिया कप: थाईलैंड के खिलाफ जीत के साथ फाइनल में जगह बनाने उतरेगा भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)।

भारत का महिला एशिया कप में अब तक का सफर आसान रहा है और गुरुवार को यहां सेमीफाइनल में टीम जब थाईलैंड की कमजोर टीम से भिड़ेगी तो उसके एक और जोरदार जीत दर्ज करने की उम्मीद है। इन दोनों टीम के बीच पिछला मुकाबला काफी एकतरफा रहा था जिसमें भारत ने थाईलैंड को 15.1 ओवर में सिर्फ 37 रन पर ढेर कर दिया था और फिर लीग चरण के इस मुकाबले में आसान जीत दर्ज की।

थाईलैंड की टीम भारत के खिलाफ पिछले मैच की तुलना में बल्लेबाजी में बेहतर प्रदर्शन करना चाहेगी। टीम ने मेजबान और गत चैंपियन बांग्लादेश को पछाड़कर पहली बार एशिया कप के सेमीफाइनल में जगह बनाई है। नारुमोल चाईवाई की टीम यह साबित करने की उम्मीद कर रही होगी कि टूर्नामेंट के लिए उसका क्वालीफाई करना तुक्का नहीं है। भारत को इस टूर्नामेंट के जरिए अपनी बेंच स्ट्रैंथ को परखने का शानदार मौका मिला है और इस प्रतियोगिता के जरिए टीम की कम अनुभवी खिलाड़ियों को दक्षिणअफ्रीका में अगले साल होने वाले टी20 विश्व कप से पहले पर्याप्त मुकाबले खेलने का समय मिला है।

इस रणनीति के तहत भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर छह लीग मैच में से केवल तीन में खेली और भारत की एकमात्र हार के दौरान पाकिस्तान के खिलाफ सातवें नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरीं। फिनिशर की भूमिका निभाने वाली खिलाड़ी की तलाश में भारत ने आक्रामक बल्लेबाजों किरण प्रभु नवगिरे और डायलन हेमलता को आजमाया। मई में महिला टी20 चैलेंज में सबसे तेज अर्धशतक जड़ने वाली किरण तीन पारियों में सिर्फ 10 रन बना पाई जबकि उनसे अधिक अनुभवी हेमलता के नाम भी चार पारियों में सिर्फ 45 रन दर्ज हैं।

अब यह देखना होगा कि भारत प्रयोग जारी रखता है या फिर फाइनल की तैयारी के लिए अपनी सबसे मजबूत टीम उतारता है। दीप्ति शर्मा, स्नेह राणा और राजेश्वरी गायकवाड़ की स्पिन तिकड़ी पूरे टूर्नामेंट के दौरान विरोधी बल्लेबाजों पर अंकुश लगाने में सफल रही है। भारत को चुनौती देने के लिए थाईलैंड की टीम अपनी शीर्ष तीन खिलाड़ियों नानापट कोंचारोएनकेई, नथाकन चेंथम और कप्तान चाईवाई पर निर्भर करेंगी। इन तीनों ने टूर्नामेंट में टीम के लिए काफी रन बनाए हैं लेकिन भारत की अनुशासित गेंदबाजी के सामने उनकी राह आसान नहीं होगी। भारत के लिए सबसे सकारात्मक पक्ष जेमिमा रोड्रिग्ज की फॉर्म रही है। जेमिमा ने मध्यक्रम में जिम्मेदारी निभाते हुए दो अर्धशतक की मदद से सर्वाधिक 188 रन बनाए हैं। पहले दो मैच में विफल रही सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा ने भी मजबूत वापसी की है। दूसरा सेमीफाइनल भी गुरुवार को ही पाकिस्तान और श्रीलंका के बीच खेला जाएगा।

लवलीना, जैस्मिन, संजीत और हुसामुद्दीन फाइनल में

तो यो। (एजेंसी)।

तोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन और राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेता मोहम्मद हुसामुद्दीन तथा जैस्मिन लंबोरिया ने मंगलवार को यहां राष्ट्रीय खेलों में दबदबे वाली जीत के साथ अपने भार वर्ग के फाइनल में प्रवेश किया। इसके अलावा सेना के हैवीवेट मुक्केबाज संजीत, पंजाब की सिमरनजीत कौर और मनदीप कौर, राष्ट्रीय चैंपियनशिप के रजत पदक हरियाणा के अंकित शर्मा और मीनाक्षी ने भी फाइनल में जगह बनाई।

असम की अंकुशिता बोरो ने 66 किग्रा वेल्टरवेट वर्ग के फाइनल में मणिपुर की एलेना थोनाओजम से भिडेंगी। मेजबान राज्य के मुक्केबाज आसिफअली असगरअली सैयद और रुचिता राजपूत को अपने सेमीफाइनल मुकाबले हारने के बाद कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा। महिलाओं के 75 किग्रा मिडिलवेट वर्ग में लवलीना ने स्थानीय दावेदार रुचिता के खिलाफ अपने स्तर का परिचय देते हुए दबदबा अपनाया। रुचिता ने कुछ मौकों पर प्रभावित किया लेकिन असम की खिलाड़ी ने अपने अनुभव का इस्तेमाल करते हुए फाइनल में जगह बनाई जहां उनका सामना हरियाणा की स्वीटी बोरा से होगा।

पुरुषों के 57 किग्रा फेदरवेट वर्ग में गुजरात के आसिफ अली को सर्वसम्मत फैसले में हरियाणा के सचिन सिवाच से 5-0 से हार का सामना करना पड़ा। वह फाइनल में दो बार के राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेता हुसामुद्दीन से भिड़ेंगे। असम के एशियाई चैंपियनशिप के कई बार के पदक विजेता शिव थापा को हालांकि हार का सामना करना पड़ा। वह सेना के आकाश के खिलाफ एक करीबी मुकाबले में 2-3 से हार गए। उनके राज्य की जमुना बोरो (57 किग्रा) और पविलाओ बासुमतारी (60 किग्रा) को भी कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा।

इस बीच महाराष्ट्र के मुक्केबाज निखिल दुबे को अपने कोच धनंजय तिवारी को श्रद्धांजलि अर्पित करने का एक शानदार अवसर मिला। अपने शिष्य का सेना के सुमित कुंडू के खिलाफ पुरुषों के मिडिलवेट 75 किग्रा सेमीफाइनल मुकाबले को देखने के लिए मुंबई से यात्रा करते समय तिवारी का सड़क दुर्घटना में निधन हो गया। निखिल ने 4-1 से जीत हासिल करके मिजोरम के माल्सावमितलुआंगा के खिलाफ खिताबी मुकाबले में जगह बनाई। माल्सावमितलुआं ने गोवा के पुष्पेंद्र राठी को 5-0 से हराया।

इससे पहले एशियाई चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता जैस्मिन ने मणिपुर की प्रतिद्वंद्वी प्रवीश कोंथोजम के खिलाफ 60 किलोग्राम वर्ग में 5-0 से जीत के साथ फाइनल में प्रवेश किया। ओलंपियन सिमरनजीत कौर ने दूसरे सेमीफाइनल में असम की पविलाओ को शिकस्त दी। महिलाओं के 66 किग्रा में पूर्व एशियाई युवा चैंपियन अंकुशिता ने राजस्थान की ललिता को एकतरफा मुकाबले में 5-0 से हराया।

एकदिवसीय कप्तान पर नहीं , टी20 विश्व कप पर है ध्यान : मिचेल

सिडनी (एजेंसी)।

ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर मिचेल मार्श ने कहा है कि उनकी कप्तानी में कोई रुचि नहीं है और इसी लिए वह इस दौड़ में शामिल नहीं हैं। वहीं क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) फिंच के खेल को अलविदा कहने के बाद से ही नये एकदिवसीय कप्तान की तलाश कर रहा है। इसी को देखते हुए सीए की नजरें कुछ खिलाड़ियों पर लगी हैं। इसी में से एक मिचेल भी हैं। वहीं अब मिचेल ने अपने को कप्तानी की दौड़ से अलग कर लिया है। इस ऑलराउंडर का कहना है कि उनकी कप्तानी में कोई रुचि नहीं है। अभी ऑस्ट्रेलियाई टीम इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज खेल रही है। इसी दौरान इस क्रिकेटर ने कहा कि अभी उनका ध्यान केवल टी20 विश्वकप पर है।

उन्होंने कहा, 'मुझे कप्तानी में कोई रुचि नहीं है। मैं इस दौड़ में शामिल नहीं हूं। मेरा ध्यान केवल विश्व कप में बेहतर प्रदर्शन पर ध्यान देना है। मैं विश्व कप के लिए फिट रहना चाहता हूं। हमारी टीम के लिए विश्व कप काफी अहम है और हमारा ध्यान वहीं लगा हुआ है। सीए को विश्व कप के बाद एकदिवसीय कप्तानी के बारे में बात करनी चाहिए। मैंने अभी तक इस बारे में विचार नहीं किया है।' मार्श पिछले कुछ समय से एड़ी की चोट से परेशान थे। इसके कारण वह जिंबाब?वे के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज और भारत में तीन मैचों की टी20 सीरीज भी नहीं खेल पाये थे हालांकि अब वह पूरी तरह से फिट हैं। उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज के पहले टी20 मैच में 3 चौके और 2 छक्के लगाकर 36 रन बनाए थे।

आईसीसी रैंकिंग: टी20 रैंकिंग में सूर्यकुमार दूसरे स्थान पर बरकरार, श्रेयस-कुलदीप चमके

दुबई (एजेंसी)।

फॉर्म में चल रहे बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव बुधवार को यहां जारी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद की नवीनतम टी20 अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में बल्लेबाजों में रैंकिंग में दूसरे स्थान पर बरकरार हैं और साथ ही भारत के शीर्ष रैंकिंग वाले बल्लेबाज बने हुए हैं। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हाल में भारत की घरेलू टी20 श्रृंखला के दौरान सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे सूर्यकुमार पाकिस्तान के विकेटकीपर बल्लेबाज मोहम्मद रिजवान से पीछे हैं। सूर्यकुमार के 838 अंक हैं।

सूर्यकुमार शीर्ष 10 में शामिल एकमात्र भारतीय बल्लेबाज हैं। सलामी बल्लेबाज लोकेश राहुल और अनुभवी विराट कोहली क्रमशः 13वें और 14वें पायदान पर हैं जबकि कप्तान रोहित शर्मा 16वें स्थान पर हैं। न्यूजीलैंड में मौजूदा टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज मेजबान देश के डेवोन कॉनवे शीर्ष पांच बल्लेबाजों में शामिल हो गए हैं।

कॉनवे ने बांग्लादेश के खिलाफ नाबाद 70 और फिर पाकिस्तान के खिलाफ भी नाबाद 49 रन की पारी खेली। वह ऑस्ट्रेलिया के आरोन फिंच और दक्षिण अफ्रीका के डेविड मलान को पछाड़कर 760 रेटिंग अंक के साथ बल्लेबाजी रैंकिंग में तीसरे स्थान पर हैं। दक्षिण अफ्रीका के ऐडन मार्करम 777 अंक के साथ चौथे पायदान पर हैं। बल्लेबाजों रैंकिंग में शीर्ष तीन बल्लेबाज रिजवान, सूर्यकुमार और बाबर आजम अपनी पिछली रैंकिंग पर बने हुए हैं।

एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में भारत के दक्षिण अफ्रीका को 2-1 से हराने के बावजूद शिखर धवन को रैंकिंग में छह स्थान का नुकसान हुआ है। वह 17वें स्थान पर हैं। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला से बाहर रहे कोहली और रोहित को भी एक स्थान का नुकसान उठाना पड़ा है। कोहली सातवें जबकि रोहित आठवें स्थान पर हैं। श्रेयस अय्यर (33) और संजू सैमसन (93) ने बल्लेबाजी रैंकिंग में लंबी छलांग लगाई है। तीसरे एकदिवसीय में चार विकेट चटकाने वाले बाएं हाथ के स्पिनर कुलदीप यादव सात स्थान के फायदे से शीर्ष 25 में पहुंच गए हैं। जसप्रीत बुमराह 10वें स्थान के साथ भारत के शीर्ष गेंदबाज बने हुए हैं। स्पिनर युजवेंद्र चहल 20वें स्थान पर हैं।

वेस्टइंडीज और ऑस्ट्रेलिया के बीच होगा फाइनल: गेल

जमैका । वेस्टइंडीज के विस्फोटक बल्लेबाज क्रिस गेल ने कहा है कि ऑस्ट्रेलिया में होने वाले टी-20 विश्वकप का फाइनल मेजबान देश ओर वेस्टइंडीज के बीच खेला जाएगा। वेस्टइंडीज के हाल के कमजोर प्रदर्शन को देखा जाये तो गेल का यह दावा कितना सही निकलता है यह समय आने पर पता चलेगा। वहीं गेल से कहा कि भारतीय टीम खिताब के प्रबल दावेदारों में रहेगी पर वह फाइनल तक नहीं पहुंच पायेगी। उन्होंने कहा कि भारतीय टीम से ज्यादा जीत की संभावना वेस्टइंडीज की है। इसके साथ ही उन्होंने यह भी माना है कि कीरोन पोलार्ड, आंद्रे रसेल और ड्वेन ब्रावो जैसे स्टार खिलाड़ियों के टीम में नहीं होने का नुकसान उनकी टीम को होगा पर युवा खिलाड़ियों के बल पर टीम इसकी भरपायी कर लेगी। वेस्टइंडीज टीम इस बार निकोलस पूरन की कप्तानी में विश्वकप में उतर रही है। इसके साथ ही टीम के पास कुछ अच्छे बल्लेबाज ओर गेंदबाजों के साथ ही ऑलराउंडर भी हैं। टीम का प्रदर्शन पिछले एक साल में लगातार गिरता रहा है। यहां तक कि उसे क्वालीफायर मैच भी खेलने पड़ रहे हैं।

शमी ओर शार्दुल टी20 विश्व कप के लिए गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया रवाना होंगे

मुबई (एजेंसी)।

भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी फिटनेस टेस्ट में पास हो गये हैं और अब वह गुरुवार को मोहम्मद सिराज, और शार्दुल ठाकुर के साथ टी20 विश्वकप में भाग के लिए ऑस्ट्रेलिया रवाना होगें। शमी को विश्व कप के लिए स्टैंडबाय खिलाड़ी के तौर पर रखा गया था पर मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के चोटिल होने के कारण अब उन्हें अंतिम ग्यारह में स्थान मिलना तय माना जा रहा है। वहीं एक अन्य स्टैंडबाय खिलाड़ी ऑलराउंडर दीपक चाहर अब तक पीठ में आये खिंचाव से उबर नहीं पाये हैं , इसलिए फिलहाल वह राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में ही रहेंगे।

चाहर का विश्वकप तक फिट होना मुश्किल नजर आ रहा है। उन्हें दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हुई टी20 सीरीज के दौरान चोट लगी थी। ऐसे में चाहर की जगह पर शार्दुल को टीम में जगह मिलना तय नजर आ रहा है। वहीं दो और स्टैंडबाय खिलाड़ी श्रेयस अय्यर और रवि बिश्नोई अभी ऑस्ट्रेलिया नहीं जाएंगे और देश में ही रहेंगे। शमी , शार्दुल और सिराज के साथ ही एनसीए के डॉ नितिन पटेल भी ऑस्ट्रेलिया जायेंगे। टीम प्रबंधन के अनुसार शमी फिट हैं और जाने के लिए तैयार हैं। चोटिल होने के कारण उन्हें हाल में अभ्यास का कम अवसर मिला है पर अनुभवी होने के कारण उन्हें विश्वकप में गेंदबाजी करते हुए परेशानी आने की संभावना नहीं है। अनुभवी होने के कारण वह जानते हैं कि किस प्रकार लय हासिल की जाये। एक बड़ी चुनौती है लेकिन वह एक अनुभवी गेंदबाज है और जानता है कि उसकी क्या जरूरत है। वहीं चाहर अभी भी फिट नहीं हैं। इसलिए उनको लेकर कोई भी फैसला फिजियो करेंगे। वहीं आईसीसी दिशानिर्देशों के अनुसार भाग लेने वाली टीमों के पास 9 अक्टूबर तक अपनी टीम में बदलाव करने का अवसर अब अह यह समय सीमा निकल गयी है। इसलिए अब टीम में किसी भी बदलाव से पहले आईसीसी की अनुमति लेने पड़ेगी। उसके बाद श्मी ओर शार्दुल को टीम में शामिल किया जा सकेगा। टी20 विश्व कप में भारतीय टीम का पहला मुकाबला 23 अक्तूबर को परंपरागत प्रतिद्वंदी पाकिस्तान से होगा।

एथलीट कमलप्रीत कौर डोपिंग मामले में फंसी, लगा तीन साल का बैन

लुसाने। भारतीय डिस्कस-थ्रो खिलाड़ी कमलप्रीत कौर पर डोपिंग के आरोप में तीन साल का प्रतिबंध लगाया गया है। एथलेटिक्स अखंडता इकाई (एआईयू) ने बुधवार को यह जानकारी दी। एआईयू ने ट्वीट किया, 'एआईयू ने भारत की कमलप्रीत कौर को 29 मार्च 2022 से प्रतिबंधित पदार्थ (स्टेनोजोलोल) की उपस्थिति/उपयोग के लिए तीन साल के लिए प्रतिबंधित कर दिया है।' इस प्रतिबंध के कारण सात मार्च के बाद के कमलप्रीत के सभी परिणाम अमान्य हो गए हैं। अखंडता इकाई ने टोक्यो ओलंपिक में छठे स्थान पर रही कमलप्रीत की प्रतिबंध अवधि में एक वर्ष की कमी की क्योंकि उन्होंने इस प्रतिबंध को स्वीकार किया है। एआईयू ने कहा कि नियम 10.8.1 के अनुसार, डोपिंग रोधी नियम (एडीआर) में प्रावधान है कि संभावित रूप से चार साल की अपात्रता की अवधि के अधीन एक एथलीट प्रतिबंध की स्वीकृति के आधार पर अपात्रता की अवधि में एक साल की कमी से लाभान्वित हो सकता है।

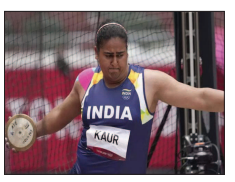

एमबापे के गोल से पीएसजी ने ड्रा खेला, सिटी और रियाल मैड्रिड नॉकआउट चरण में पहुंचे

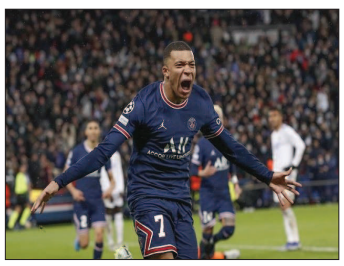

पेरिस (एजेंसी)।

काइलन एमबापे के गोल के बावजूद पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) को बेनफिका के खिलाफ मैच ड्रॉ खेलना पड़ा जबकि मैनचेस्टर सिटी और रियाल मैड्रिड ने चैंपियंस लीग फुटबॉल प्रतियोगिता के नॉकआउट चरण में जगह बनाई। एमबापे ने पेनल्टी पर गोल किया जिससे पीएसजी यह मैच 1-1 से बराबर करने में सफल रहा। एमबापे का चैंपियंस लीग में पीएसजी की तरफ से यह 31वां गोल था और इस तरह से उन्होंने एडिसन कवानी का क्लब का रिकॉर्ड तोड़ दिया है।

इस बीच मैनचेस्टर सिटी को एफसी कोपेनहेगन के खिलाफ इर्लिंग हालैंड की कमी खली लेकिन गोलरहित ड्रा खेलने के बावजूद वह रियाल मैड्रिड के साथ चैंपियंस लीग के नॉकआउट चरण में पहुंचने वाली पहली टीम बन गई। अभी ग्रुप चरण में दो दौर के मैच खेले जाने बाकी हैं। सिटी ग्रुप जी में 10 अंकों के साथ सबसे आगे है। उसके बाद बोरुसिया डॉर्टमुंड (सात), सेविला (दो) और कोपेनहेगन (दो) का नंबर आता है। रियाल मैड्रिड ने भी एंटोनियो रुडिगर के इंजरी टाइम में किए गए गोल से शख्तर डोनेट्स्क के खिलाफ मैच 1-1 से ड्रा खेला। रियाल मैड्रिड ग्रुप एफ में 10 अंकों के साथ शीर्ष पर काबिज है। उसके बाद लीपजग (छह), शख्तर (पांच) और सेल्टिक (एक) का नंबर आता है। चेल्सी ग्रुप एफ में एक समय सबसे निचले पायदान पर था लेकिन सेरी ए चैंपियन एसी मिलान के खिलाफ दो जीत से वह चोटी पर पहुंच गया है। चेल्सी ने मिलान को दूसरे मैच में 2-0 से हराया। इस बीच युवेंट्स पर चैंपियंस लीग से बाहर होने का खतरा मंडरा रहा है। उसे मकाबी हैफा ने 2-0 से पराजित किया।

छत्रसाल स्टेडियम हत्याकांड: अदालत ने पहलवान सुशील कुमार के खिलाफ तय किए आरोप

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने बुधवार को ओलंपिक पदक विजेता पहलवान सुशील कुमार और 17 अन्य के खिलाफ छत्रसाल स्टेडियम हत्या मामले में आरोप तय किये जिससे अब उनके मामले की सुनवाई शुरू हो जाएगी। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश शिवाजी आनंद ने कुमार और अन्य आरोपियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता के विभिन्न धाराओं के अंतर्गत आरोप तय किये जिसमें हत्या, दंगा करने और आपराधिक साजिश संबंधित मामले शामिल हैं। विस्तृत आदेश का इंतजार है। कुमार और अन्य पर कथित 'प्रोपर्टी विवाद' में चार मई 2021 को शहर के छत्रसाल स्टेडियम के पार्किंग क्षेत्र में पूर्व जूनियर राष्ट्रीय कुश्ती चैम्पियन सागर धनखड़ और उनके दोस्तों से कथित रूप से मारपीट का आरोप है। 'पोस्टमॉर्टम' रिपोर्ट के अनुसार धनखड़ की चोटों के कारण मौत हो गई थी। दिल्ली पुलिस ने 23 मई को इस पहलवान को गिरफ्तार किया था। दो जून 2021 से वह न्यायिक हिरासत में है।

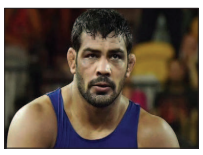

धवन ने कहा, युवा खिलाड़ियों की परिपक्वता पर गर्व

नई दिल्ली (एजेंसी)।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला को 2-1 से जीतने के बाद भारतीय टीम की अगुवाई कर रहे शिखर धवन ने मंगलवार को यहां कहा कि उन्हें युवा खिलाड़ियों की परिपक्वता पर गर्व है। भारतीय टीम के मुख्य खिलाड़ी टी20 विश्व कप के लिए ऑस्ट्रेलिया रवाना हो चुके हैं और उनकी गैरमौजूदगी में धवन की अगुवाई में वैकल्पिक खिलाड़ियों की टीम ने श्रृंखला का पहला मैच गंवाने के बाद श्रृंखला में शानदार वापसी की।

दक्षिण अफ्रीका की पारी को 99 रन पर समेटने के बाद भारत ने 19.1 ओवर में लक्ष्य हासिल कर सात विकेट से जीत दर्ज की। धवन ने मैच के बाद पुरस्कार समारोह में कहा, '' मुझे टीम के सभी खिलाड़ियों पर गर्व है। यह युवा खिलाड़ियों की टीम है और जिस तरह उन्होंने परिपक्वता दिखाई, उसकी सराहना की जानी चाहिये।'' उन्होंने कहा, '' पहले मैच को हम हारे जरूर थे लेकिन उस मैच के आखिरी ओवरों में टीम ने जो परिपक्वता दिखाई वह अच्छा था। इससे आने वाले मैचों के लिए हौसला मिला।''

उन्होंने कहा, ''शुरुआती मैच के बाद हमने क्षेत्ररक्षण में सुधार किया। हम नतीजे की ज्यादा परवाह किये बिना प्रक्रिया पर ध्यान दे रहे थे।'' मैच में 4.1 ओवर में 18 रन पर चार विकेट लेकर मैन ऑफ द मैच बने कुलदीप यादव ने कहा, ''मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि चोट से वापसी करने के बाद पहली बार यह खिताब हासिल कर सका हूं। मैं अच्छी गेंदबाजी कर रहा हूं और मैं इसका लुत्फ उठा रहा है। मैं नतीजों पर नहीं बल्कि अपनी लय पर ध्यान दे रहा हूं। '' दक्षिण अफ्रीका के कप्तान डेविड मिलर ने इस करारी शिकस्त के लिए मुश्किल परिस्थितियों और लचर बल्लेबाजी को जिम्मेदार ठहराया।

मिलर ने कहा, '' यह बेहद मुश्किल मैच था। लेकिन किसी भी परिस्थिति में 100 रन बनाना खराब प्रदर्शन है। इस तरह श्रृंखला को खत्म करना निराशाजनक है। '' उन्होंने कहा, '' गेंद पिच पर टप्पा खाने के बाद रुक कर आ रही थी और स्पिन भी हो रही थी। हम बहाना नहीं बना रहे लेकिन दो दिनों से बारिश हो रही थी और परिस्थितियां कठिन थी। इन परिस्थितियों में भी हमें उनका सामना करना चाहिए था। पिछले कुछ समय में हम एकदिवसीय क्रिकेट में लगातार अच्छा नहीं कर पा रहे हैं।

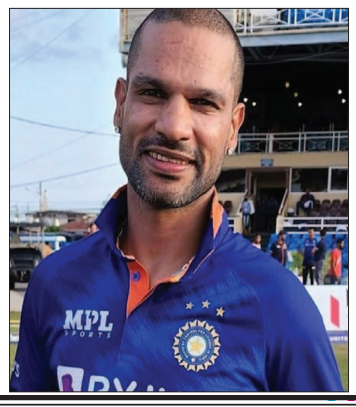

फीफा महिला अंडर-17 विश्व कप फुटबॉल के पहले ही मैच में भारतीय टीम 8-0 से हारी

भुवनेश्वर । भारतीय टीम को फीफा महिला अंडर-17 विश्व कप फुटबॉल के यहां हुए अपने पहले ही मैच में अमरीकी टीम के हाथों 8-0 से करारी हार का सामना करना पड़ा है। इस मैच के शुरु होने के दस मिनट के अंदर ही अमेरिकी टीम को एक गोल की बढ़त मिल गयी। यह गोल 9वें मिनट में ही मेलिना रेबिमस ने किया। इस प्रकार मेहमान टीम 1-0 से आगे हो गयी। वहीं 9 मिनट बाद ही चार्लोट कोह्लर ने एक गोल कर अमेरिकी टीम की बढ़त को 2-0 कर दिया। शुरूआती 15 मिनट के गेम में ही अमरीकी टीम ने अपना दबदबा बना लिया।

भाजपा की गुजरात गौरव यात्रा का प्रारंभ में, जेपी नड्डा ने बहुचराजी से कराया प्रस्थान

अहमदाबाद।

गुजरात विधानसभा के आगामी चुनाव को लेकर भाजपा ने गौरव यात्रा के साथ ही चुनाव प्रचार का शंखनाद कर दिया। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने मेहसाणा के बहुचराजी से गुजरात गौरव यात्रा का प्रारंभ कराया। बहुचराजी पहुंचे जेपी नड्डा ने पहले बहुचर माता के मंदिर में दर्शन किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, केन्द्रीय मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला, गुजरात भाजपा प्रमुख सीआर पाटील, पूर्व उप मुख्यमंत्री नितिन पटेल और रजनी पटेल समेत समेत कई नेता और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे। इस अवसर पर जेपी नड्डा ने कहा कि यह गौरव यात्रा केवल भाजपा की नहीं बल्कि भारत यात्रा है। मेरा सौभाग्य है कि मैं इस गौरव यात्रा का प्रारंभ करा रहा हूं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश प्रगति पथ कुलांचे मार रहा है। गौरव यात्रा की गंगोत्री गुजरात है। गुजरात ने कई संत दिए हैं, कई समाज सुधारक दिए हैं। मैं इस गुजरात की महान भूमि पर स्थित सभी शक्तिपीठों को नमन करता हूं। वोटरों को रिझाने के लिए आज से प्रारंभ हुई भाजपा की गौरव यात्रा 20 अक्टूबर तक राज्य के विभिन्न जिलों में भ्रमण करेगी। 5 चरणों में होनेवाली इस यात्रा के अंतर्गत विधानसभा के 144 निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा लोगों से संपर्क करेगी। 5734 किलोमीटर की इस यात्रा के दौरान 145 जनसभाओं का भी आयोजन किया गया है। आज से 20 अक्टूबर तक चलने वाली गौरव यात्रा की जिम्मेदारी 5 केन्द्रीय मंत्रियों को सौंपी गई है। कल यानी 13 अक्टूबर को केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह गुजरात में तीन जगह से गुजरात गौरव यात्रा का प्रारंभ कराएंगे। इन तीन यात्राओं में से एक का नाम भगवा बिरसा मुंडा आदिवसी गौरव यात्रा दिया गया है। कुल मिलाकर भाजपा ने कम समय में राज्य

के सभी 182 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों के वोटरों तक पहुंचने का आयोजन कर लिया है। आज से प्रारंभ हुई दो गौरव यात्रा में से एक बहुचराजी से कच्छ के माता के मढ तक जाएंगे। जबकि दूसरी द्वारका से पोरबंदर तक जाएगी। वहीं तीसरी यात्रा अहमदाबाद जिले के झंझरका से रवाना होगी और सोमनाथ तक जाएगी। चौथी यात्रा नवसारी जिले के ऊनाई से खेडा जिले में और पांचवी यात्रा ऊना से अंबाजी तक जाएगी।

कांग्रेस और आप कोई चुनौती नहीं, लेकिन हल्के में नहीं लिया जा सकता : पुरुषोत्तम रूपाला

मेहसाणा। केन्द्रीय मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला ने गुजरात के विधानसभा के आगामी चुनाव में कांग्रेस और आम आदमी पार्टी को भाजपा के लिए कोई चुनौती मानने से इंकार कर दिया। साथ ही यह भी कहा कि दोनों पार्टियों को हल्के में नहीं लिया जा सकता। पुरुषोत्तम रूपाला मेहसाणा के बहुचराजी मंदिर से प्रारंभ हुई भाजपा की गुजरात गौरव यात्रा के मौके पर बोल रहे थे। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने बहुचराजी मंदिर से गुजरात गौरव यात्रा का प्रारंभ कराया। इस मौके पर गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, केन्द्रीय मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला, प्रदेश भाजपा प्रमुख सीआर पाटील समेत नेता और कार्यकर्ता उपस्थत रहे। मीडिया से बातचीत में पुरुषोत्तम रूपाला ने कहा कि वह गुजरात विधानसभा के आगामी चुनाव में कांग्रेस और आप को कोई चुनौती नहीं मानते। लेकिन इन दोनों पार्टियों को हल्के में भी नहीं ले सकते। भाजपा आगामी चुनाव को चुनाव के तरीके से गंभीरता के साथ लड़ेगी और उसकी तैयारियों के तहत ही आज से गुजरात गौरव यात्रा का प्रारंभ हुआ है। रूपाला ने किसी के नाम लिए बगैर कहा कि गुजरात में मौसम है और जो फसल खड़ी है, उसे काटने के लिए अलग अलग कीट आएंगे। एक बात स्पष्ट है कि जिन लोगों का गुजरात के सार्वजनिक जीवन से कोई नाता नहीं है ऐसे लोग गुजरात की सत्ता हड़पने की कहानियां राज्य की जनता को सुना रहे हैं। ऐसे लोगों से गुजरात की जनता को सतर्क रहने की जरूरत है। एक सवाल के जवाब में रूपाला ने कहा कि उन्हें गुजरात की जनता पर पूर्ण भरोसा है कि पिछले 2। से भाजपा पर जो विश्वास किया है उसे आगे भी बरकरार रखेगी। गुजरात के लोग समझदार हैं और वह भाजपा के पक्ष में प्रचंड मतदान करेंगे। आजादी के बाद गुजरात की जनता ने भाजपा के शासन का अनुभव किया है, इसलिए उसे ज्यादा समझाने की जरूरत नहीं है। हांलाकि लोगों को सतर्क रहने की जरूरत है।

मोदी का जादु बरकरार रखने के लिए भाजपा ने केजरीवाल को मैदान में उतारा है : छोटू वसावा

भरुच।

गुजरात विधानसभा के चुनाव को लेकर भाजपा, कांग्रेस और आप समेत अन्य राजनीतिक दल वोटरों को रिझाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। चुनाव आयोग आगामी दिनों में कभी भी गुजरात विधानसभा के चुनाव का ऐलान कर सकता है। इससे पहले भारतीय ट्रायबल पार्टी (बीटीपी) प्रमुख ने आप समेत भाजपा पर कड़े प्रहार किए हैं। छोटू वसावा ने कहा कि देश में चुनाव आते-जाते रहते हैं और मौजूदा स्थिति में मोदी का जादू खत्म होता रहा है। मोदी के इस जादू को बरकरार रखने के लिए भाजपा ने अरविंद केजरीवाल को प्रोजेक्ट किया है। आदिवासी क्षेत्र में जो ट्रायबल पार्टी बनाई है उसे तोड़ने का काम भाजपा और आरएसएस ने केजरीवाल को सौंपा है। क्योंकि बीटीपी से उन्हें बहुत डर लगता है। आदिवासियों की एकता को तोड़ने का केजरीवाल प्रयास कर रहे हैं, लेकिन उसमें उन्हें सफलता नहीं मिलेगी। वसावा ने कहा कि जो लोग अंदर गए हैं विधायक बनने वह कुछ नहीं कर पाएंगे। भारत का इतिहास है कि रिजर्वेशन पर कितने आदिवासी सांसद, विधायक, मंत्री बने और दुनिया से चले गए। इसके बावजूद आदिवासियों की स्थिति जस की तस बनी हुई है। आगामी चुनाव में भी ऐसा ही होना है। आदिवासी खुद सत्ता में ना आएं इसके लिए उन्हें प्रलोभन देकर उनमें फूट डालने की कोशिश की जा रही है। जिसे आदिवासी कभी बर्दाश्त नहीं करेग। जो लोग गए हैं वह चुनाव तक ही हैं और उनकी 52 दिन ही गिनती होगी, जिसके बाद लोग भी उनके नाम को भूल जाएंगे। गौरतलब है कि बीटीपी और आप के बीच गुजरात की स्थापना दिवस 1 मई को चुनाव गठबंधन हुआ था। उस वक्त छोटू वसावा ने कहा था कि राजनीति में नए युग की शुरुआत हुई है। पहले हमारा जिसके साथ गठबंधन था उसने कोई काम नहीं किया। इसलिए अब हमने आप के साथ गठबंधन किया है। हमारा लक्ष्य गरीबों का कल्याण है। हांलाकि बहुत कम समय में ही बीटीपी और आप का गठबंधन टूट गया। इस पर छोटू वसावा ने कहा था कि आप के नेता उनकी बात नहीं सुनते इसलिए उन्होंने गठबंधन तोड़ दिया है।

गोपाल इटालिया का एक और पुराना वीडियो आया सामने, लोगों में जबर्दस्त आक्रोश

अहमदाबाद।

पिछले कई महीनों से गुजरात विधानसभा चुनावों को लेकर मेहनत कर रही आम आदमी पार्टी के लिए उसके प्रदेश प्रमुख गोपाल इटालिया के पुराने वीडियो मुश्किलें बढ़ा रहे हैं। आप के प्रदेश प्रमुख गोपाल इटालिया का एक और वीडियो सामने आने के बाद लोगों में जबर्दस्त आक्रोश भड़क उठा है। इस वीडियो में गोपाल इटालिया मंदिर और महिलाओं के खिलाफ विवादित टिप्पणी कर रहे हैं। इटालिया वीडियो में कह रहे हैं कि मंदिरों में महिलाओं का शोषण होता है। कथा या मंदिर में जाने से कुछ हासिल नहीं होगा। इटालिया का यह वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। इस वीडियो को लेकर गुजरात के गृह राज्यमंत्री हर्ष संघवी ने कहा कि ऐसा वीडियो देख मुझे काफी दुःख हुआ है। आखिर ऐसी विचारधर कहां से आती है। मंदिर के प्रति मेरी आस्था को चोट पहुंचाने का किसी को कोई अधिकार नहीं है। राज्य के लोगों में ऐसे तत्वों के खिलाफ जबर्दस्त आक्रोश है। महिलाएं मंदिर में ना जाए, कथा में ना जाएं ऐसे विवादित बयान देनेवाले अर्बन नक्सली गिरोह को जवाब देने का वक्त आ गया है। उन्होंने कहा कि यह अर्बन नक्सलियों को गिरोह एक साजिश के तहत लोगों के पीछे पड़ गया है। ऐसे लोग हमारी संस्कृति के

खिलाफ अनाप शनाप बक रहे हैं। गुजरात को किसी प्रकार तोड़ा जाए, इसके प्रयासों में जुटे हैं। नर्मदा डेम के काम रोकने वाले नक्सली पिछले दरवाजे से गुजरात में घुसने की रणनीति बना रहे हैं। राज्य में अशांति कैसे फैले, इसी से इस गिरोह का रोजगार चलता है। संघवी ने कहा कि वीडियो गलती से वायरल हो गया है, ऐसा बताकर आप कार्यकर्ता कहते हैं यह इटालिया के निजी विचार हैं। गौरतलब है गोपाल इटालिया के इससे पहले भी कई विवादित वीडियो वायरल हो चुके हैं। हाल ही में इटालिया ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लेकर विवादित टिप्पणी की थी और वीडियो सोशल मीडिया में वायरल किया था। पहले दिल्ली सरकार के मंत्री राजेन्द्र पाल गौतम द्वारा देवी-देवताओं को अपमान करने का खामियाजा अरविंद केजरीवाल को गुजरात में भुगतना पड़ा था। केजरीवाल के खिलाफ गुजरात के कई शहरों में पोस्टर लगाए गए थे। अब गोपाल इटालिया के वीडियो ने आम आदमी पार्टी की मुश्किलें बढ़ा दी हैं।

डीएचएल एक्सप्रेस ने दीवाली फेस्टिव ऑफर लॉन्च् किया

मुंबई।

दुनिया की प्रमुख अंतर्राष्ट्रीरय एक्स1प्रेस सेवा प्रदाता डीएचएल एक्स प्रेस एक बार फिर त्यौ,हारों में उत्साकह बढ़ा रही है। लोग अब 2 किलो से ज्यारदा के शिपमेंट्स पर कम से कम 50त की छूट के साथ विदेशों में उपहार और मिठाइयाँ भेज सकते हैं। इस दीवाली ऑफर के साथ डीएचएल का लक्ष्यस दुनियाभर में मौजूद अपने दोस्तों और परिवार से जुड़े रहने में ग्राहकों की मदद करना है।

डीएचएल एक्स प्रेस इंडिया में सेल्सर और मार्केटिंग के वाइस प्रेसिडेंट संदीप जुनेजा ने कहा, ''दीवाली का रोमांच और भी ज्यादा चमक-दमक वाला और खुशनुमा हो जाता है, जब हम अपने प्रियजनों के संपर्क में रहते हैं। दीवाली ऑफर के साथ हम मीलों दूर रहने वालों को घर पर होने का एहसास देना चाहते हैं। 220 देशों और क्षेत्रों को कवर करने वाले डीएचएल के डोर-टू-डोर शिपिंग एवं ट्रैकिंग ऑप्शंदस के साथ हमारा लक्ष्यो अपने ग्राहकों का भरोसेमंद सर्विस पार्टनर बनना है ।''

ग्राहक एसएमएस या ई-मेल्सम के जरिये शिपमेंट्स के अपडेट्स ले सकते हैं। यह छूट डीएचएल

के 650 सर्विस पॉइंट्स पर 29 अक्टूबर, 2022 तक उपलब्ध है।

इस ऑफर के बारे में पूछताछ के लिये, ग्राहक डीएचएल एक्स्प्रेस के टोल-फ्री नंबर 1800 11 1345 पर कॉल कर सकते हैं या DI-WALI कोड का इस्ते्माल करते हुए DHL लिखकर 56161 पर एसएमएस भेज सकते हैं।

भावनगर के युवराज के ट्वीट के बाद हरकत में प्रशासन

भावनगर। भावनगर के युवराज जयवीरराजसिंह के एक ट्वीट के बाद महानगर पालिका प्रशासन हरकत में आ गया है और शहर में खस्ताहाल सड़कों के नवीनीकरण और मरम्मत का काम युद्धस्तर पर शुरू कर दिया है। दरअसल कुछ दिन पहले केन्द्रीय मंत्री किरण रिजुजु भावनगर आए थे और उन्होंने भावनगर-अहमदाबाद के हाईवे की काफी प्रशंसा की थी। इसका वीडियो वायरल होने के बाद भावनगर के भावेणा के युवराज जयवीरराजसिंह ने ट्वीट कर केन्द्रीय को वास्तविकता बताई थी। युवराज ने अपने ट्वीट में कहा 'राष्ट्रीय राजमार्ग सुधर रहे हैं इसमें शंका का कोई स्थान नहीं है। लेकिन शहर के अंदरूनी रास्ते खस्ताहाल हैं। जब कभी भाजपा के मंत्री आते हैं तो उनके आगमन से पहले सड़कों की मरम्मत की जाती है। हमारा नेताओं से अनुरोध है कि आए दिन भावनगर आते रहें ताकि शहर की सड़के सुधरती रहें।' युवराज के इस ट्वीट के बाद भावनगर प्रशासन हरकत में आ गया है और युद्धस्तर पर सड़कों की मरम्मत का कार्य शुरू कर दिया है। मीडिया से बातचीत में युवराज जयवीरराजसिंह ने कहा कि नेताओं की सभा और कार्यक्रमों में करोड़ों रुपए की ग्रांट की घोषणा जरूर की जाती है। इसके बावजूद सड़कों के नवीनीकरण और मरम्मत में उदासीनता बरती जाती है। उन्होंने कहा कि जन समस्याओं को लेकर वह हमेशा आवाज उठाएंगे। युवराज ने सड़कों के अलावा आवारा पशुओं को लेकर भी कड़ी नाराजगी जाहिर की है।

शॉप्सी ने विक्रेताओं को विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में विस्तार करने के अवसर सौंपे

उन्होंने कहा, "शॉप्सी ने लगातार मुझे डिज़ाइन और ऐसे वर्टिकल का डेटा भेजा जिसमें निवेश करना फायदेमंद हो और साथ ही उन्होंने कीमतें तय करने और प्रचार में भी मदद की। कारोबार का विस्तार करने के लिए शॉप्सी ने मेरे कारोबार को पूरे भारत में सही लोगों तक पहुंचने में मदद की और साथ ही उत्पादकता व दक्षता बढ़ाने में भी मदद मिली। मुझे काफी संख्या में ऑर्डर मिले और अन्य प्लेटफॉर्म के मुकाबले ज़्यादा बिक्री भी हुई।"

नई दिल्ली

अभिषेक मिश्रा, समयपुर बादली, नई दिल्ली के रहने वाले कारोबारी हैं। उन्हें अपने एक साथी के माध्यम से शॉप्सी के बारे में पता चला जो पहले से प्लेटफॉर्म पर था और अपने कारोबार के माध्यम से मुनाफा कमा रहा था। शॉप्सी से जुड़ने के बाद उनके कारोबार में 20 गुना वृद्धि देखने को मिली। शॉप्सी से पहले वह अन्य ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर बिक्री कर रहे थे, लेकिन उन्होंने कहा कि शॉप्सी के मुकाबले मुनाफा कहीं नहीं मिला।

"मैं शॉप्सी का प्रशंसक हूं! प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले मुझे प्लेटफॉर्म से अधिकतम रिटर्न मार्जिन मिला और मैंने अपने कई साथियों को इस ऐप का इस्तेमाल करने की सलाह दी। मेरा ब्रैंड फ्लिपकार्ट के कुछ टॉप ब्रैंड में से था और मैं शॉप्सी से ज़्यादा से ज़्यादा मुनाफा कमाने की उम्मीद करता हूं। उनके एक ग्राहक ने बताया कि वह किस तरह शॉप्सी की किफायत देखकर आश्चर्यचकित रह गया।"

राजकोट

अंकित गुजरात के राजकोट के रहने वाले हैं। वह पिछले 5 महीनों से शॉप्सी पर बिक्री कर रहे हैं। वह पूरे भारत में किचन वेयर और अपने मिनी चॉपर बेचते हैं। शॉप्सी की मदद से वह हर दिन बड़ी संख्या ऑर्डर पूरे कर पा रहे हैं।

"मैं अपने कारोबार और अब तक की इसकी प्रगति से बहुत खुश हूं। इससे मेरे उत्पादों की मांग बढ़ी है और इससे मेरे कारोबार का विस्तार पूरे देश में हो गया है। आने वाले समय में मैं कॉस्मेटिक्स और मोबाइल ऐक्सेसरीज़ का कारोबार भी शुरू करूंगा और मुझे पूरा भरोसा है कि शॉप्सी मुझे सभी ज़रूरी मदद उपलब्ध कराएगा। मैंने खास तौर पर शॉप्सी पर बिक्री करने का निर्णय किया और तब से बहुत खुश हूं।"

हायर ने भारत की पहली इनबिल्ट वॉयस कंट्रोल फ्रंट लोड वाशिंग मशीन को टच पैनल के साथ लॉन्च किया

सुरत ।

घरेलू उपकरणों, कंस्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स में ग्लोबल लीडर और 13 वर्षों से लगातार प्रमुख उपकरणों में दुनिया के नंबर 1 ब्रांड, हायर ने आज अपनी नई एआई-इनेबल्ड वाशिंग मशीन की श्रृंखला, हायर 979 फ्रंट लोड वाशिंग मशीन को एडवांस सुपर साइलेंट डायरेक्ट मोशन मोटर 52.5 सेमी के ड्रम को लॉन्च किया। हायर के 'मेड इन इंडिया, मेड फॉर इंडिया' मिशन को आगे बढ़ाते हुए, कंपनी ने भविष्य के लिए तैयार स्मार्ट होम, एआई और आईओटी-सक्षम लॉन्ड्री समाधान प्रदर्शित किए जो नए जमाने की तकनीकों के साथ प्रीमियम वॉश और फैब्रिक देखभाल प्रदान करते हैं। फ्रंट-लाइन इनोवेशन से भरपूर, डायरेक्ट मोशन मोटर के साथ सुपर ड्रम 979 सीरीज़ को आपकी सुविधा के अनुसार केवल एक वॉयस कमांड के साथ आसानी से इस्तेमाल किया जा सकता है।

भारतीय उपभोक्ताओं के लिए इनोवेटिव प्रोडक्ट्स के उत्पादन के लिए हायर की प्रतिबद्धता व्यवसाय का मूल है, और उपभोक्ताओं की मांगों को पूरा करने के लिए ब्रांड ने लगातार खुद को विकसित किया है। सबसे तेजी से बढ़ती कंज्यूमर ड्यूरेबल्स कंपनी के रूप में, हायर का लक्ष्य प्रीमियम सेगमेंट में प्रमुख योगदान देने वाले आउटलेट्स में निवेश करके द्दश्यञ्ज-सक्षम उत्पादों की अपनी नई रेंज के साथ बाजार हिस्सेदारी में 5 प्रतिशत की वृद्धि करना है।

हायर भारत में स्थानीय मैन्युफैक्चरिंग के माध्यम से प्रीमियम उत्पादों के उत्पादन पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहा है। हायर की स्टेट ऑफ आर्ट फैसिलिटीज रंजनगांव, पुणे और ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश में है जिनकी मदद से ब्रांड ने भारतीय ग्राहकों के लिए विशेष रूप से इनोवेटिव प्रोडक्ट्स बनाने लिए है जो कि भारतीय ग्राहकों के लिए प्रीमियम और हाई एन्ड उत्पादों को तैयार करती है।

वाशिंग मशीन की नई रेंज के लॉन्च पर बोलते हुए, श्री सतीश एनएस, प्रेजिडेंट, हायर अप्लायंसेज इंडिया ने कहा, "हायर में हम उपभोक्ताओं की सुविधा के लिए प्रतिबद्ध हैं और उन इंनोवशन्स को साझा करने के लिए प्रेरित करते हैं जो रोजमर्रा की जिंदगी को और अधिक आरामदायक बनाते हैं। हमारी नई IoT- सक्षम फ्रंट लोड सुपर ड्रम 979 सीरीज वॉशिंग मशीन एक सफल इनोवेशन है जो AI का लाभ उठाती है और उपभोक्ताओं को आसान, इंटेलीजेंट और पर्सनल लॉन्ड्री समाधान प्रदान करती है। हमें विश्वास है कि नई रेंज उपभोक्ता जीवन शैली को और बढ़ाएगी और देश भर में इसे मजबूत रूप से अपनाएगी,

उन्होंने आगे कहा, "त्योहारों का मौसम हमें उपभोक्ताओं के जीवन को लॉन्च करने और प्रेरित करने का अवसर देता है। हमें अपनी अगली पीढ़ी की IoT- सक्षम प्रोडक्ट की श्रृंखला के साथ, वॉशिंग मशीन सेगमेंट में अपनी बाजार हिस्सेदारी 5 प्रतिशत तक बढ़ाने की उम्मीद है। आकर्षक ऑफर्स के साथ नए उत्पाद लाइन-अप के साथ, हम त्योहारों के इस मौसम के दौरान लोगों में उत्साह लाने के लिए उत्साहित हैं।"

मेलोरा 22 कैरट गोल्ड में 18000 से अधिक आधुनिक डिज़ाइनों के साथ फेस्टिव कलेक्शन्स का लॉन्च किया

भारत के तेज़ी से विकसित होते डी2सी ब्राण्ड्स में से एक मैलोरा जो किफायती दामों पर आधुनिक लाईटवेट, बीआईएस हॉलमार्क्ड सोने के आभूषण उपलब्ध कराता है, ने भारत, यूएई, यूएसए, यूके और यूरोप में 26,000 से अधिक पिनकोड्स तक डिलीवरी का लक्ष्य हासिल कर लिया है और कंपनी लगातार अपना विस्तार कर रही है। अपने मिशन के अनुरूप, त्योहारों के पावन अवसर पर, ब्राण्ड हर शुक्रवार को सोने और हीरे के 75 से अधिक डिज़ाइनों का नया कलेक्शन लॉन्च करेगा। कंपनी ने हाल ही में त्योहारों के मद्देनज़र अपने नए विज्ञापन रुहर घर मैलोरा को भी रिलीज़ किया था। हर भारतीय महिलाओं को आगामी त्योहारों के हर दिन के लिए बेहतरीन आभूषणों की व्यापक रेंज और डिज़ाइन उपलब्ध कराना ब्राण्ड का मुख्य उद्देश्य है। देश का पश्चिमी भाग पहले से मैलोरा के कुल ऑर्डर्स में 15 फीसदी योगदान देता है और कंपनी ने अपने भोगौलिक विस्तार की योजनाएं बनाई हैं।

अपने फेस्टिव कलेक्शन के तहत मेलोरा चार नए कलेक्शन लॉन्च करेगा जो त्योहारों के जोश और उत्साह को कई गुना बढ़ा देंगे। ब्राण्ड के 23 एक्सपीरिएंस सेंटर हैं और वित्तीय वर्ष 26 के अंत तक ब्राण्ड ने देश भर में स्टोर्स की संख्या को 350 तक पहुंचाने की योजना बनाई है। मेलोरा के साथ उपभोक्ता आभूषणों को छूकर, महसूस कर, ट्राय करने के बाद अपनी पसंद के आभूषण चुन सकते हैं और इस तरह मेलोरा रोज़मर्रा के लिए सोने के आभूषणों के सबसे पसंदीदा ब्राण्ड के रूप में उभर रहा है।

इस मौके पर सरोजा येरामिली, संस्थापक एवं सीईओ, मेलोरा ने कहा, ''दो साल तक कोविड महामारी के बाद लोग इस साल त्योहारों का जश्न ज़ोर-शोर से मना रहे हैं, वे अपने

परिवारजनों और दोस्तों के साथ त्योहार मनाना चाहते हैं। इन्हीं जश्नों के मद्देनज़र मेलोरा अपने 4 अलग-अलग कलेक्शन्स के साथ तैयार है। हमने पाया है कि आजकल महिलाओं में लाईटवियर ज्वैलरी की मांग बढ़ रही है, जिसे वे रोज़ाना में पहन सकती हैं। हमारा कैंपेन रुहर घर मेलोरा इसी दिशा में एक कदम है, जो देश के दूर-दराज के इलाकों तक हमारे प्रोडक्ट्स की सुलभता को बढ़ाएगा और उपभोक्ताओं की ज़रूरतों के अनुसार उन्हें बेहतरीन कलेक्शन उपलब्ध कराएगा। हमारे डिज़ाइन विश्वस्तरीय रूझानों से प्रेरित हैं और हर मौके के लिए बेहतरीन हैं फिर चाहे वह त्योहार का दिन का या आम दिन। हम हर शुक्रवार को नया कलेक्शन लॉन्च करते हैं और सोने एवं हीरे में 18000 से अधिक डिज़ाइन लेकर आते हैं। भारतीय महिलाओं की बदलती पसंद के अनुसार उन्हें खूबसूरत आभूषण उपलब्ध कराना और उनकी उम्मीदों पर खरा उतरना हमारा उद्देश्य है।"

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादकः संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोनः 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)